हिन्दी गद्य साहित्य

B21HD05DC

Discipline Core Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी गद्य साहित्य

Course Code: B21HD05DC

Semester - V

SGOU

Discipline Core Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(With Model Question Paper Sets)

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

हिन्दी गद्य साहित्य

Course Code: B21HD05DC
Semester- V
Discipline Core Course
BA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Christina Sherin Rose J.
Dr. Sudha T.
Dr. Lembodharan Pillai B.

Review and Edit

Dr. Suma S.

Linguistics

Dr. Suma S.

Scrutiny

Christina Sherin Rose J.
Dr. Sudha T.
Krishna Preethy A.R.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-982096-9-6

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

YouTube

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the UG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-01-2025

Contents

BLOCK - 01 हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विभिन्न विधाएँ.................................. 1

इकाई 1: आधुनिक काल में हिन्दी गद्य का विकास.. 2

इकाई 2: हिन्दी की गद्य विधाएँ - सामान्य परिचय.. 7

BLOCK - 02 हिन्दी उपन्यास.. 14

इकाई 1: हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास.. 15

इकाई 2: ए बी सी डी - रवींद्र कालिया (विस्तृत अध्ययन केलिए)... 21

BLOCK - 03 हिन्दी कहानी.. 26

इकाई 1: हिन्दी कहानी साहित्य का विकास.. 27

इकाई 2: प्रमुख कहानियाँ (विस्तृत अध्ययन केलिए).. 33

1. आकाशदीप - जयशंकर प्रसाद.. 33
2. पूस की रात - प्रेमचंद... 37
3. चीफ की दावत - भीष्म साहनी... 39
4. गैंग्रीन - अज्ञेय... 41
5. अपरिचित - मोहन राकेश... 43
6. अपराध - उदय प्रकाश... 45
7. अकेली - मन्नू भंडारी.. 47
8. सलाम - ओमप्रकाश वाल्मीकि.. 49

BLOCK - 04 हिन्दी नाटक... 53

इकाई 1: हिन्दी नाटक का विकास.. 54

इकाई 2: सावित्री 2007 (विस्तृत अध्ययन के लिए).. 59

BLOCK - 05 हिन्दी निबंध साहित्य... 63

इकाई 1: हिन्दी निबंध साहित्य - विकास क्रम.. 64

इकाई 2: नाखून क्यों बढ़ते हैं? - हजारी प्रसाद द्विवेदी.. 69

BLOCK - 06 अन्य गद्य विधाएँ.. 74

इकाई 1: 'भोलाराम का जीव' हरिशंकर परसाई (व्यंग्य).. 75

इकाई 2: 'चीनी भाई' - महादेवी वर्मा (रेखाचित्र).. 80

इकाई 3: 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' - विष्णु प्रभाकर (यात्रा वृत्त)...................................... 85

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 01

हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विभिन्न विधाएँ

इकाई 1

आधुनिक काल में हिन्दी गद्य का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य के उद्‌भव के बारे में समझता है
- हिन्दी गद्य की आरंभकालीन रचनाओं के बारे में समझता है
- हिन्दी गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका समझता है
- हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु एवं द्विवेदी की भूमिका समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में गद्य विधाओं का विकास आधुनिक काल में ही हुआ है। कई विद्वानों के अथक प्रयास के फलस्वरूप हिन्दी में गद्य विधाओं का उद्‌भव एवं विकास संभव हुआ है। हिन्दी गद्य के विकास में भारतीयों का ही नहीं बल्कि विदेशियों का भी प्रभाव देख सकते हैं। फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका भी भुलाया नहीं जा सकता। इसके साथ साथ प्रत्येक युग के विद्वानों का भी प्रयास रहा है। गद्य की अनेक विधाएँ होती हैं। इसलिए उसकी विकास यात्रा पर चर्चा करते वक्त हमें अनगिनत राहों से गुजरना पड़ेगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गद्य, फोर्ट विलियम कॉलेज, वार्ताग्रंथ

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं का उद्‌भव एवं विकास आधुनिक काल में ही हुआ है। उससे पहले हिन्दी साहित्य के रूप में केवल काव्य रूपों को ही देख सकते हैं। यह बात और है कि कुछ गद्य रचनाओं का उल्लेख इससे पहले भी मिलता है, लेकिन विस्तृत एवं समृद्ध रूप से गद्य रूपों का अस्तित्व में आना आधुनिक काल की ही उपलब्धि है। आधुनिक काल में गद्य रचनाओं की भरमार को देखकर ही आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने इस काल को गद्य काल की संज्ञा दी है। आज गद्य रचनाएँ सर्वाधिक लोकप्रिय बन गई हैं।

आरंभकालीन गद्य रचनाएँ

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के मतानुसार वल्लभाचार्य जी के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ जी ने 'श्रृंगार रस मंडन' नामक एक ग्रंथ ब्रजभाषा गद्य में लिखा था जिसकी भाषा अव्यवस्थित एवं अपरिमार्जित थी। इसके उपरांत 'वार्ता साहित्य' की रचना गद्य में हुई। आज तक शताधिक वार्ता ग्रंथ प्राप्त हो चुके हैं, लेकिन उनमें सबसे प्रमुख दो ग्रंथ हैं - 1. चौरासी वैष्णवन की वार्ता और 2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता। इन दोनों ग्रंथों के रचनाकार वल्लभाचार्य जी के पौत्र गोसाईं गोकुलनाथ थे।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

नाभादास द्वारा रचित 'अष्टयाम' ब्रजभाषा गद्य में है। इसमें भगवान राम की दिनचर्या का वर्णन मिलता है। उस समय गद्य लेखन का प्रचार नहीं हुआ और इसलिए ब्रजभाषा गद्य का पूर्ण विकास नहीं हो सका। काव्य की जो टीकाएँ लिखी जाती थीं उसमें भी गद्य का रूप उतना व्यवस्थित नहीं था। जानकी प्रसाद द्वारा लिखित रामचंद्रिका की टीका भी इसी प्रकार की एक रचना है।

खड़ीबोली गद्य की महत्वपूर्ण रचना के रूप में हम गंग कवि की 'चंद छंद बरनन की महिमा' को देख सकते हैं। इसकी रचना सम्राट अकबर के समय में हुई थी। 1741 में रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योगवशिष्ठ' नाम के गद्य ग्रंथ को साफ सुथरी खड़ीबोली में लिखा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रामप्रसाद निरंजनी ही प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक है।

हिदी गद्य के विकास में 1800 में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका भी सराहनीय है। फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी - उर्दू अध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट के आदेश से आगरा के गुजराती ब्राह्मण लल्लू लाल जी ने खड़ीबोली गद्य में 'प्रेमसागर' की रचना की। इसमें भागवत के दशम स्कन्ध की कथा वर्णित है।

सदल मिश्र भी फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता में काम करते थे। इन्होंने भी कॉलेज की अधिकारियों की प्रेरणा से खड़ीबोली गद्य की पुस्तक 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की।

मुंशी सदासुखलाल नियाज ने विष्णुपुराण से उपदेशात्मक प्रसंग लेकर एक पुस्तक का निर्माण किया और हिन्दी में श्रीमद्भागवत पुराण का अनुवाद 'सुखसागर' नाम से किया। मुंशी जी किसी भी अधिकारी की प्रेरणा एवं किसी के दिए हुए नमूने के बगैर ही ग्रंथ रचना करते थे।

हिन्दी गद्य के संबंध में इन तीनों के बाद आदर से लिया जानेवाला नाम सैय्यद इंशा अल्ला खां का है। वे उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। इन्होंने 'रानी केतकी की कहानी' या 'उदयभान चरित' की रचना 1800 ई. के आसपास की।

हिन्दी गद्य के इन चार प्रारम्भिक लेखकों में से इंशा अल्ला खां की भाषा सबसे अधिक चटकीली, मुहावरेदार और चलती हुई भाषा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इन चारों में मुंशी सदासुखलाल को विशेष महत्व दिया। इन चारों का रचनाकाल मोटे तौर पर 1800 ई. के आसपास है, अतः हिन्दी गद्य का सूत्रपात भी 1800 ई. के आसपास से समझना चाहिए।

ईसाई धर्म प्रचारकों में से एक विलियम केरे ने बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद कराया। इनका गद्य सीधा और सरल है, चलती हुई भाषा का उनमें प्रयोग किया है। इन सभी प्रयोगों ने हिन्दी गद्य के विकास में योगदान किया।

हिन्दी गद्य में भारतेन्दु और द्विवेदी का योगदान

हिन्दी गद्य के विकास में सबसे प्रमुखता से जिनका नाम लिया जाता है वह है भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी। उन्हें सही अर्थों में हिन्दी गद्य का जनक कहा जा सकता है। भारतेन्दु जी ने अपनी पूर्ववर्ती सभी रचनाकारों की भाषा संबंधी त्रुटियों से अपनी भाषा को मुक्त रखा। उन्होंने न केवल गद्य की भाषा का संस्कार किया अपितु पद्य की ब्रजभाषा को भी सुसंस्कृत किया। आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेन्दु के महिमामंडित व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर भारतेन्दु काल कहा जाता है। लगभग सभी प्रकार की गद्य विधाओं में भारतेन्दु जी ने अपना प्रतिभा का परिचय दिया है। और ज्यादातर गद्य विधाओं के आरंभिक चरण को भारतेन्दु जी का ही नाम दिया हुआ है।

इसी प्रकार गद्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता। जिन गद्य विधाओं की नींव भारतेन्दु जी ने डाला था उन सब को द्विवेदी जी ने परिष्कृत एवं परमार्जित करके नई भावभूमि प्रदान कर दी। अपने समकालीन रचनाकारों की रचना कौशलों की वृद्धि करने में उनका अथक प्रयास देख सकते हैं। भाषा का परिष्कार उनका प्रथम लक्ष्य था। इस ओर उनका प्रयास हिन्दी गद्य के विकास में बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ।

हिन्दी गद्य के विकास में राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द एवं राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान

हिन्दी गद्य के आरंभिक काल हिन्दी और उर्दू के संघर्षकाल थे। तब राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह हिन्दी के पक्षपाती बनकर सामने आए।

शिक्षा विभाग में इंसपेक्टर होने से पूर्व राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने काशी से 'बनारस अखबार' निकालना प्रारम्भ किया। जिसकी भाषा में उर्दू का पुट था। शिक्षा

विभाग में मुसलमानों का दल अधिक शक्तिशाली था, अतः इन्होंने मध्यवर्ती मार्ग का अनुसरण करते हुए आम चलती हुई भाषा का समर्थन किया जिसमें उर्दू के चलते हुए शब्दों का प्रयोग होता था। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की लिखी पुस्तकें हैं- आलसियों का कीड़ा, राजा भोज का सपना, इतिहास तिमिरनाशक, मानव धर्म का सार, उपनिषद् सार, भूगोल हस्तामलक आदि। वस्तुतः सितारेहिन्द की भाषा का स्वरूप ऐसा था कि वे हिन्दी-उर्दू की समस्या को हल करने का प्रयास करते जान पड़ते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने बड़ी चतुराई से हिन्दी की रक्षा की अन्यथा मुसलमान नेता हिन्दी को स्कूली शिक्षा से बाहर कर देने के लिए अंग्रेजों पर दबाव बनाए हुए थे।

राजा लक्ष्मण सिंह आगरा के रहने वाले थे। उन्होंने सन् 1861 ई. में आगरा से 'प्रजा हितैषी' नामक पत्र निकाला और 1862 ई. में 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का अनुवाद सरस एवं शुद्ध हिन्दी में प्रकाशित किया। उन्होंने अपनी भाषा नीति को स्पष्ट करते हुए कहा है- हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी-न्यारी हैं। हिन्दी इस देश के हिन्दू बोलते हैं और उर्दू यहां के मुसलमानों और फारसी पढ़े हुए हिन्दुओं की बोलचाल है। हिन्दी में संस्कृत पद बहुत आते हैं, उर्दू में अरबी, फारसी के।

Critical Overview / अवलोकन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, ब्रजभाषा गद्य का पूर्ण विकास नहीं हो पाया क्योंकि उस समय गद्य लेखन का प्रचार कम था। गोसाई विठ्ठलनाथ और गोसाई गोकुलनाथ ने वार्ता साहित्य की रचना की, जिसमें प्रमुख ग्रंथ 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' शामिल हैं। गद्य लेखन में 1800 के आसपास फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका महत्वपूर्ण थी, जहां लल्लू लाल और सदल मिश्र जैसे लेखकों ने खड़ी बोली में महत्वपूर्ण ग्रंथ रचे। हिन्दी गद्य के विकास में मुंशी सदासुखलाल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विशेष महत्व दिया। हिन्दी गद्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान सबसे अहम था, उन्होंने गद्य की भाषा को संस्कृत और ब्रजभाषा से मुक्त किया और इसे एक नया रूप दिया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने गद्य के विकास में सुधार करते हुए इसे परिष्कृत और परिमार्जित किया। राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह ने भी हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जहां सितारे हिन्द ने हिन्दी और उर्दू के मिश्रण को समर्थन दिया और राजा लक्ष्मण सिंह ने शुद्ध हिन्दी में रचनाएँ कीं। इन सब प्रयासों ने हिन्दी गद्य को एक नया आकार और दिशा दी।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं का उद्‌भव एवं विकास आधुनिक काल में हुआ है।
- आज गद्य रचनाएँ सर्वाधिक लोकप्रिय बन गई हैं।
- गोसाई विठ्ठलनाथ जी ने 'श्रृंगार रस मंडन' नामक एक ग्रंथ व्रजभाषा गद्य में लिखा था।
- सबसे प्रमुख वार्ता ग्रंथ हैं - चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता।
- काव्य की जो टीकाएँ लिखी जाती थीं उसमें भी गद्य का रूप उतना व्यवस्थित नहीं था।
- खड़ीबोली गद्य की महत्वपूर्ण रचना - गंग कवि की 'चंद छंद बरनन की महिमा'।
- हिन्दी गद्य के विकास में 1800 में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका भी सराहनीय है।
- फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी - उर्दू अध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट।
- हिन्दी गद्य का जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र को माना जाता है।
- भारतेन्दु जी ने गद्य विधाओं की नींव डाली थीं।
- द्विवेदी जी ने उन गद्य विधाओं को परिष्कृत एवं परमार्जित करके नई भावभूमि प्रदान कर दी।
- हिन्दी गद्य के आरंभिक काल हिन्दी और उर्दू के संघर्षकाल

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता’ की रचनाकार कौन है?
2. रामप्रसाद निरंजनी ने ‘भाषा योगवशिष्ठ’ कब लिखा?
3. नाभादास द्वारा रचित ‘अष्टयाम’ किस भाषा में है?
4. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब हुई?
5. श्रीमद्भागवत पुराण का अनुवाद हिन्दी में किसने किस नाम से किया?
6. बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद किसने कराया?
7. हिन्दी गद्य का जनक?
8. राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की किन्हीं दो पुस्तकों का नाम लिखिए?
9. राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने कहाँ से ‘बनारस अखबार’ निकालना प्रारम्भ किया?
10. राजा लक्ष्मण सिंह कहाँ के रहने वाले थे?

Answers / उत्तर

1. वल्लभाचार्य जी के पौत्र गोसाईं गोकुलनाथ
2. 1741 में
3. व्रजभाषा गद्य में है
4. 1800 में
5. मुंशी सदासुखलाल नियाज ने ‘सुखसागर’ नाम से किया
6. विलियम केरे ने
7. भारतेन्दु
8. राजा भोज का सपना, इतिहास तिमिरनाशक
9. काशी से
10. आगरा के

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।
2. हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु एवं द्विवेदी जी के स्थान पर आलेख तैयार कीजिए।
3. हिन्दी गद्य के विकास में राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द एवं राजा लक्ष्मण सिंह की योगदान पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ- डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

हिन्दी की गद्य विधाएँ - सामान्य परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- गद्य के विभिन्न विधाओं के बारे में समझता है।
- गद्य के विभिन्न विधाओं के विकास यात्रा की जानकारी प्राप्त करता है
- विभिन्न गद्य विधाओं के आपसी संबंध के बारे में समझता है
- विभिन्न गद्य विधाओं के लेखकों का परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी गद्य का विकास आधुनिक काल की सबसे प्रमुख उपलब्धि है। आजकल गद्य विधाओं की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। हिन्दी गद्य की भी कई विधाएँ हैं। जैसे कि - उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी आदि। इन सब का विस्तृत परिचय प्राप्त करना बहुत ही जरूरी है। इन सब की विकास यात्रा बहुत ही रोचक है। इनमें से कुछ विधाओं का एक दूसरे से अभेद्य संबंध है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, रेखाचित्र, संस्मरण,आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्तांत, रिपोर्ताज, अभिनंदन ग्रंथ

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य की गद्य विधाएँ।

हिन्दी में गद्य का विकास आधुनिक काल में ही हुआ है। भारतेन्दु युग में हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। इन सब विधाओं का पर्याप्त विकास परवर्ती कालों में भी हुआ। इस तरह आज हिन्दी गद्य साहित्य उत्कर्ष पर पहूँच चुका है। कई गद्य विधाएँ बहुत ही लोकप्रिय हैं। हिन्दी की विभिन्न गद्य विधाएँ निम्नलिखित हैं:-

1. उपन्यास
2. कहानी
3. नाटक
4. एकांकी
5. निबंध
6. आलोचना
7. रेखाचित्र
8. संस्मरण
9. आत्मकथा
10. जीवनी
11. यात्रावृत्तांत
12. रिपोर्ताज
13. अभिनंदन ग्रंथ

1. उपन्यास

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास

का अलग स्थान है। उपन्यास ज्यादातर काल्पनिक कहानी के आधार पर लिखा जाता है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष या समाज विशेष की कहानी लंबे समय तक बताती है। हिन्दी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेज़ी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जा सकता है।

हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षागुरु' है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र को तीन कालों में विभाजित किया गया है।

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास
2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

विकास के शुरुआती दौर में ऐतिहासिक, पौराणिक, तिलस्मी - अय्यारी, जासूसी उपन्यासों का रचना होता था। बाद में प्रेमचंद जी के आगमन से उपन्यास क्षेत्र को एक नई दिशा मिली। उसके बाद उपन्यास के क्षेत्र में आम आदमी का जीवन भी विषय बनाया गया। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में जीवन के हर तबके के लोगों की ज़िंदगी को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यास क्षेत्र में विषयों का वैविध्य देखा जा सकता है। समकालीन समाज में चर्चित लगभग सारी समस्याओं पर हिन्दी में उपन्यास लिखा गया है।

2. कहानी

कहानी कहने की कला मनुष्य के जन्म से ही शुरू हुई है। मानव अपने अनुभव एवं अनुभूतियों को एक दूसरे से साँझा करते हैं। कहानी कहना और सुनना मानव का आदिम स्वभाव है। हमारे देश में कहानी कहने की प्राचीन परंपरा है।

कहानी सम्राट प्रेमचंद ने कहानी के सम्बंध में कहा है कि - 'कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है।'

इस कथन से हम समझ सकते हैं कि कहानी में जीवन के किसी एक अंश, किसी एक मनोभाव या घटना का ही विस्तार होता है।

हिन्दी साहित्य में कहानी का उद्भव उन्नीसवीं सदी में हुआ। हिन्दी की प्रथम कहानी के रूप में हम किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को ही देखते हैं। सन् 1900 में इन्दुमती के प्रकाशन के उपरांत सन् 1902 में लाला भगवानदीन की प्लेग की चुड़ैल, 1903 में रामचंद्र शुक्ल कृत ग्यारह वर्ष का समय, बंगमहिला की कहानी दुलाई वाली, माधवराय सप्रे की एक टोकरी भर मिट्टी, एक पथिक का स्वप्न आदि कहानियाँ प्रकाशित हुईं। यह सब हिन्दी साहित्य की आरंभकालीन कहानियाँ हैं।

हिन्दी कहानी का युग परिचय भी प्रेमचंद जी के नाम से ही मिलता है। हिन्दी कहानी को तीन कालों में विभाजित किया गया है।

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी
2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

3. नाटक

नाटक को काव्य के अंतर्गत रखा जाता है। काव्य दो प्रकार के होते हैं - दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। और नाटक को दृश्य काव्य के एक भेद के रूप में समझा जाता है। हिन्दी में नाटक लिखने की परंपरा का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने किया है। उन्हीं से हिन्दी नाटक का आरंभ हुआ है। उससे पहले नाटक के नाम पर जो भी रचनाएँ उपलब्ध थीं उन सब में नाट्यकला के तत्वों का अभाव था। आरंभिक काल में हिन्दी में मौलिक नाटकों का रचना और दूसरी भाषाओं की श्रेष्ठ नाट्य रचनाओं का अनुवाद भी होता था। अनूदित नाटक मुख्यतः बंगला, संस्कृत और अंग्रेज़ी भाषाओं के थे।

हिन्दी नाटकों की विकास की परंपरा का अध्ययन हेतु उसे तीन कालों में विभाजित किया है।

1. भारतेंदुयुगीन हिन्दी नाटक
2. प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक
3. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक

4. एकांकी

'एकांकी' साहित्य की वह विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है और जिसमें किसी घटना या विषय को एक अंक में प्रस्तुत किया जाता है। नाटक की तुलना में एकांकी आकार में छोटा है। कुछ आलोचक एकांकी

को नाटक का लघु रूप मानता है लेकिन यह एक भ्रांत धारणा है। दोनों विधाएँ अपना स्वतंत्र शिल्प रखते हैं। वर्तमान काल में एकांकी का शिल्प पाश्चात्य एकांकियों से प्रभावित है। एकांकी पश्चिम में अभिनीत किए जानेवाले उन 'नाटकों' को कहा जाता है, जिनकी कथा एक अंक में ही समाप्त हो जाती है। वस्तुतः इनका प्रारम्भिक रूप लघु नाटकों जैसा ही था, किन्तु कालांतर में शिल्पगत अंतर आने से एकांकी स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार हिन्दी का प्रथम एकांकी जयशंकर प्रसाद द्वारा 1929 को रचित 'एक घूँट' है।

5. निबंध

हिन्दी की अन्य गद्य विधाओं की तरह ही हिन्दी निबंध का उद्भव भी भारतेन्दु युग में ही हुआ है। इस काल में भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास हो रहा था। पढे लिखे लोग अपने विचारों को स्वच्छंदतापूर्वक एक निजीपन लिए हुए स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने लगे थे। लेखकों के समक्ष अनेक विषय थे। वे सामयिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक विषयों पर प्रायः निबंधों के माध्यम से प्रकाश डालते रहे। हिन्दी निबंध के विकास में पत्र पत्रिकाओं का सीधा संबंध है। हिन्दी निबंध साहित्य की विकास यात्रा को चार कालों में विभाजित किया गया है।

1. भारतेन्दु युग
2. द्विवेदी युग
3. शुक्ल युग
4. शुक्लोत्तर युग

भारतेन्दु युग हिन्दी निबंध की विकास यात्रा का प्रारम्भिक चरण माना जा सकता है। इससे पूर्व के गद्य लेखकों की रचनाओं में निबंध के गुण उपलब्ध नहीं थे। सही अर्थों में भारतेन्दु के निबंध ही हिन्दी के प्राथमिक निबंध हैं जिनमें निबंध कला की मूलभूत विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं।

द्विवेदी युग में तो द्विवेदी जी सरस्वती के माध्यम से भाषा संस्कार एवं व्याकरण शुद्धि के जो प्रयास प्रारंभ किए उनका प्रभाव तत्कालीन सभी निबंधकारों पर किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस क्षेत्र में पदार्पण करने से इसे नए आयाम एवं नई दिशाएँ प्राप्त हुईं। उनके 'चिंतामणी' नामक निबंध संकलन में हिन्दी निबंध साहित्य का चरम उत्कर्ष देख सकते हैं।

शुक्लोत्तर युग में हिन्दी निबंध ने विविधमुखी विकास प्राप्त किया। विषय क्षेत्र, वैचारिकता, भाषा शैली - सभी दृष्टियों से हिन्दी निबंध ने नई दिशाएँ खोजीं। इसी युग में ललित निबंधों का भी प्रचार होने लगा।

6. आलोचना

किसी रचना की सम्यक परीक्षा करते हुए उसके गुण - दोषों का उद्घाटन करना 'समालोचना' है। भारतेन्दु युग में जिस प्रकार अन्य गद्य विधाओं का श्रीगणेश हुआ, उसी प्रकार 'हिन्दी समीक्षा' या 'हिन्दी आलोचना' का प्रारंभ भी इसी काल में हुआ। पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिन्दी समालोचना का द्वार खोल दिया। 'हिन्दी प्रदीप' नामक पत्रिका में गंभीर आलोचनाएँ प्रकाशित होती रही।

द्विवेदी युग में आलोचना का रूप भारतेन्दु युग की तुलना में अधिक निखरा था। साथ ही इस काल में आलोचना की विविध पद्धतियाँ भी विकसित हुईं। द्विवेदी जी के आलोचना क्षेत्र में महत्व निर्विकार रूप से स्वीकार किया जाता है। उन्होंने नवीन और प्राचीन का समन्वय करके आगे के आलोचकों को दिशा निर्देश दिए।

हिन्दी आलोचना को विकसित करने में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का भी महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी समालोचना को चरमोत्कर्ष पर पहूँचाने का श्रेय आलोचक सम्राट आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, बाबू गुलाब राय, रामविलास शर्मा आदि हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक हैं।

7. रेखाचित्र

रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है। जिस प्रकार चित्रकला में बिना रंगों का प्रयोग किए हुए रेखाओं से रेखाचित्र निर्मित किए जाते हैं, उसी प्रकार जब शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारा जाता है तब उस रचना को रेखाचित्र कहा जाता है। रेखाचित्र

अपने वर्ण्य विषय का अध्येता, व्याख्याता और सूत्रधार है। रेखाचित्र में वैयक्तिक अनुभूति अनिवार्य रूप से रहती है, इसमें व्यक्ति अथवा वस्तु का ऐसा 'क्लोजअप' प्रस्तुत किया जाता है कि उसकी प्रत्येक विशेषता उभर आती है। रेखाचित्र का वर्ण्य विषय काल्पनिक न होकर वास्तविक होता है और उसकी आन्तरिक एवं बाह्य विशेषताएँ कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति पाती हैं।

8. संस्मरण

संस्मरण रेखाचित्र से मिलती-जुलती विधा है, जिसका अंग्रेजी शब्द है 'Memoirs'। महादेवी वर्मा के अनुसार, 'संस्मरण लेखक की स्मृति से सम्बन्ध रखता है। स्मृति में वही अंकित रह जाता है। जिसने उसके भाव या बोध को कभी गहराई से उद्वेलित किया हो। 'संस्मरण' और 'रेखाचित्र' में भेदक रेखा खींच पाना यद्यपि कठिन है यधापि संस्मरण विवरणात्मक होता है और रेखाचित्र रेखात्मक, उनमें इतिवृत्त की प्रधानता नहीं होती है। रेखाचित्रों में सूक्ष्म तथ्य रहते हैं, घटनाओं का विवरण नहीं दिया जाता। यह भी उल्लेखनीय है कि रेखाचित्र में वस्तुपरक दृष्टिकोण की प्रधानता होती है जबकि संस्मरण आत्मपरक रचना है। रेखाचित्र में लेखक का व्यक्तित्व नहीं उभरता, जबकि संस्मरण में लेखक का व्यक्तित्व भी प्रकारान्तर से आ जाता है।

संस्मरण और रेखाचित्र

हिन्दी में संस्मरण और रेखाचित्र प्रायः घुल-मिल गए हैं। अनेक लेखकों की रचनाएँ कुछ आलोचकों ने संस्मरण के अन्तर्गत मानी है तो कुछ अन्य इन्हें रेखाचित्र कहना उपयुक्त समझते हैं। वस्तुतः कोई साहित्यकार यह सोचकर नहीं लिखता कि वह संस्मरण लिख रहा है या रेखाचित्र। डॉ. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के अनुसार, 'प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी।' यही कारण है कि रेखाचित्र और संस्मरण में विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। वस्तुत न कोई संस्मरण बिना रेखाचित्र के पूरा होता है और न कोई रेखाचित्र बिना संस्मरण के। आनुपातिक दृष्टि से वैयक्तिकता एवं तटस्थता को देखकर ही यह निर्णय किया जा सकता है कि कोई रचना संमरण है या रेखाचित्र।

9. आत्मकथा

आत्मकथा का अर्थ है - अपनी कथा। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का श्रृंखलाबद्ध विवरण स्वयं लिखता है, तब उसे आत्मकथा कही जाती है। आत्मकथा में लेखक को निरपेक्ष एवं तटस्थ रहना चाहिए। आत्मकथा को अंग्रेज़ी में 'Autobiography' कहते हैं। आत्मकथा लिखते वक्त आत्मकथाकार अपनी बीती हुई ज़िंदगी को दोबारा जीता है। आत्मकथा व्यक्ति अधिष्ठित साहित्य विधा है।

हिन्दी की पहली आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' है। भारतेन्दु की 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती', अंबिकादत्त व्यास की 'निज वृत्तान्त', यशपाल की 'सिंहावलोकन' आदि हिन्दी की प्रमुख आत्मकथाएँ हैं।

10. जीवनी

किसी महान व्यक्ति के जीवन का सम्पूर्ण विवरण क्रमबद्ध रूप में महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से जब कोई अन्य लेखक प्रस्तुत करता है तो उस साहित्यिक रचना को जीवनी कहते हैं। जीवनी को अंग्रेज़ी में 'Biography' कहते हैं।

नाभादास द्वारा सन् 1558 में विरचित 'भक्तमाल' को हिन्दी की सर्वप्रथम जीवनी मानी जाती है। भारतेन्दु कृत 'बादशाह दर्पण', 'पंच चरित्रमाला', रामविलस शर्मा कृत 'निराला की साहित्य साधना', अमृतराय कृत 'कलम का सिपाही', विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' आदि हिन्दी की प्रमुख जीवनियाँ हैं।

11. यात्रावृत्तांत

यात्रावृत्तांत आधुनिक काल में विकसित एक नवीन गद्य विधा है। जब कोई लेखक अपने द्वारा की गई किसी यात्रा का कलात्मक एवं साहित्यिक विवरण प्रस्तुत करता है तो उस रचना को यात्रावृत्तांत कहा जाता है। यात्रावृत्तांत को अंग्रेज़ी में 'Travelogue' कहते हैं। इसे यात्रावृत्त भी कहा जाता है।

हिन्दी गद्य के आरंभिक काल में भारतेन्दु जी की पत्रिका 'कविवचन सुधा' में कई यात्रावृत्तांत प्रकाशित होते रहे हैं। उसमें सरयू पार की यात्रा, मेरी लखनऊ यात्रा और हरिद्वार की यात्रा महत्वपूर्ण है। राहुल सांकृत्यायन, मोहन राकेश,

अज्ञेय, यशपाल आदि हिन्दी के प्रमुख यात्रावृत्तांतकार हैं।

12. रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। उस गद्य रचना को रिपोर्ताज कहते हैं जिसमें किसी आँखें देखी घटना का साहित्यिक शैली में कलात्मकता के साथ प्रभावशाली विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि घटना अपनी पूरी जीवंतता के साथ पाठक के सामने प्रत्यक्ष हो जाती है। किसी भी घटना, परिपाटी आदि की कलात्मक रीति में तैयार किये गए विवरण को रिपोर्ताज कहते हैं। हिन्दी में कई महान रिपोर्ताजकार हैं। इस क्षेत्र में धर्मवीर भारती, उपेन्द्रनाथ अश्क, अमृतराय, रांगेय राघव, विष्णु प्रभाकर, प्रकाश चंद्र गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

13. अभिनंदन ग्रंथ

जिन महापुरुषों ने साहित्य, राजनीति आदि क्षेत्रों में विशिष्टता प्राप्त की उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने तथा उनके क्रियाकलापों से लोगों को परिचित कराने हेतु इन अभिनंदन ग्रंथों का प्रकाशन आजकल किया जाने लगा है। वंदनीय व्यक्ति का गुण स्तवन करने के साथ साथ उनके गुणों को जनमानस में संस्कार रूप से प्रतिष्ठित करने का उद्देश्य लेकर इन ग्रंथों की रचना की जाती है। प्रायः तीन प्रकार के अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।

1. साहित्यकारों से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ
2. स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों एवं राजनीतिज्ञों के अभिनंदन ग्रंथ
३. धर्म, दर्शन, संस्कृति के क्षेत्र से संबंधित महापुरुषों के अभिनंदन ग्रंथ

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का परिचय प्राप्त करना अत्यंत रोचक है। शुरुआत में सारी गद्य विधाएँ अन्य भाषाओं के अनुकरण से ही बना था। फिर कालांतर में मौलिक रचनाओं का सृजन होने लगा। और आगे चलकर प्रत्येक विधा की समस्त खूबी सहित उच्च स्तर की रचनाएँ होने लगीं। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र आदि में अंतर समझना भी जरूरी है। क्योंकि इन रचनाओं की विशेषता यह है की यह समान प्रकार की है और प्रायः लोग इसे समझने में गलती कर बैठते हैं। प्रत्येक विधा की अपनी अलग शिल्प एवं विशेषताएँ होती हैं, जिसे समझना आवश्यक है। और साथ ही इन विधाओं की विकास यात्रा पढ़ना भी आवश्यक है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु युग में हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ।
- आज हिन्दी गद्य साहित्य उत्कर्ष पर पहूँच चुका है।
- उपन्यास ज्यादातर काल्पनिक कहानी के आधार पर लिखा जाता है।
- हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनीवास दास कृत 'परीक्षागुरु' है।
- हिन्दी साहित्य में कहानी का उद्‌भव उन्नीसवीं सदी में हुआ।
- हिन्दी कहानी को तीन कालों में विभाजित किया गया है।
- नाटक को दृश्य काव्य के एक भेद के रूप में समझा जाता है।
- 'एकांकी' में किसी घटना या विषय को एक अंक में प्रस्तुत किया जाता है।
- हिन्दी निबंध के विकास में पत्र पत्रिकाओं का सीधा संबंध है।
- किसी रचना की सम्यक परीक्षा करते हुए उसके गुण - दोषों का उद्‌घाटन करना 'समालोचना' है।
- हिन्दी आलोचना को विकसित करने में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का महत्वपूर्ण योगदान है।
- रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है।
- संस्मरण का अंग्रेजी शब्द है 'Memories'।
- आत्मकथा व्यक्ति अधिष्ठित साहित्य विधा है।

- जब कोई लेखक अपने द्वारा की गई किसी यात्रा का कलात्मक एवं साहित्यिक विवरण प्रस्तुत करता है तो उस रचना को यात्रावृत्तांत कहा जाता ह।
- किसी आँखें देखी घटना का साहित्यिक शैली में कलात्मकता के साथ प्रभावशाली विवरण रिपोर्ताज कहते हैं।
- जिन महापुरुषों ने साहित्य, राजनीति आदि क्षेत्रों में विशिष्टता प्राप्त की उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने हेतु अभिनंदन ग्रंथों का प्रकाशन।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी का प्रथम उपन्यास कौनसा है?
2. हिन्दी की प्रथम कहानी कौनसी है?
3. काव्य कितने प्रकार के होते हैं? वह कौन कौन से हैं?
4. हिन्दी के प्रथम एकांकी की रचना कब हुई?
5. हिन्दी निबंध का विकास यात्रा का प्रारम्भिक चरण किसे माना जा सकता है?
6. किसी रचना की सम्यक परीक्षा करते हुए उसके गुण - दोषों का उद्घाटन करना क्या कहा जाता है?
7. संस्मरण का अंग्रेजी शब्द क्या है?
8. यात्रावृत्तांत को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?
9. 'सिंहावलोकन' किसकी रचना है?
10. 'रिपोर्ताज' किस भाषा का शब्द है?

Answers / उत्तर

1. लाला श्रीनीवास दास कृत 'परीक्षागुरु'
2. किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती'
3. दो, दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य
4. 1929 ('एक घूँट' - जयशंकर प्रसाद)
5. भारतेन्दु युग
6. 'समालोचना'
7. 'Memoirs'
8. 'Travelogue'
9. यशपाल
10. फ्रांसीसी

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी गद्य के विभिन्न विधाओं की परिचय दीजिए।
2. संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर समझाईए।
3. आत्मकथा एवं जीवनी का परिचय देते हुए उसका अंतर लिखिए।
4. नाटक एवं एकांकी की शिल्प पर टिप्पणी लिखिए।
5. हिन्दी कहानी की विकास यात्रा पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ- डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

BLOCK - 02

हिन्दी उपन्यास

इकाई 1

हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी उपन्यास के उद्भव के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा पर नजर डाल सकते हैं
- हिन्दी के प्रमुख उपन्यास एवं उपन्यासकारों के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी में उपन्यास आधुनिक साहित्य विधा है। उपन्यास शब्द का अर्थ होता है - निकट या समीप रखना। तात्पर्य यह है कि उपन्यासकार किसी आनंद पूर्ण भाव निहित रचना पाठक के सामने रखते हैं। उपन्यास को अंग्रेजी में Novel कहते हैं।

'उप' उपसर्ग और 'न्यास' पद के योग से उपन्यास शब्द बना है। उपन्यास वह वस्तु है, जिसको पढ़कर पाठक आनंद पा लेते हैं। पाठक को लगता कि यह अपने जीवन की कथा है, जिसे अपनी भाषा में कही गई है।

उपन्यास को मानव जीवन की काल्पनिक कथा कहते हैं। अर्थात उपन्यासकार वास्तविक जीवन में कल्पना व भावना मिला जुलाकर आकर्षक रूप-भाव में पाठक समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए कहा था कि - 'मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्रमात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।' आलोचक डॉ. श्याम सुंदर दास ने उपन्यास को मानव के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा माना है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास, प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यास, प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास, मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, साम्यवादी (प्रगतिवादी) उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, प्रयोगवादी उपन्यास

Discussion / चर्चा

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जा सकता है, क्योंकि हिन्दी में इस विधा का श्रीगणेश अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ।

हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद रहा है। इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासों का नाम लिया जाता है वे हैं- श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' (सन् 1877 ई.) तथा लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा गया 'परीक्षा गुरु' (सन् 1882 ई.)। इनमें से

प्रथम उपन्यास में सुधारवादी प्रवृत्ति परिलक्षित होती है तथा द्वितीय उपन्यास में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को श्रेष्ठ प्रमाणित करते हुए उपदेश वृत्ति का आधार ग्रहण किया गया है। 'परीक्षा गुरु' को ही अधिकांश विद्वान हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं।

हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम का अध्ययन करने के लिए हम उसे तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं। यदि 'प्रेमचन्द' को हिन्दी उपन्यासकारों में केन्द्रबिन्दु मान लें तो ये तीन चरण निम्नवत् हैं :

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास
2. प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यास
3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

यह हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक चरण था अतः अभी तक उपन्यास विधा अपना स्वरूप ग्रहण करने का प्रयास कर रही थी। इस काल में लिखे गए उपन्यास प्रधानतः सुधारवादी एवं उपदेशवादी प्रवृत्ति से परिचालित थे और उनका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही माना जा सकता है। श्रद्धाराम फिल्लौरी एवं लाला श्रीनिवासदास के उपन्यासों का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त इस काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी, जासूसी उपन्यासों की रचना अधिक हुई है, जिनका जनजीवन से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं दिखाई पड़ता। तिलस्मी उपन्यासों में यद्यपि 'प्रेम चित्रण' का अवसर भी आ गया है, किन्तु उपन्यासकारों का मूल उद्देश्य रहस्य-रोमांच की ऐयारी एवं तिलस्मी दुनिया में ले जाकर पाठकों को चमत्कृत करना मात्र रहा है। इस काल का प्रमुख उपन्यासकार पण्डित बालकृष्ण भट्ट को माना जा सकता है। इनके लिखे तीन उपन्यास 'रहस्यकथा' (1879 ई.), 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886 ई.) तथा 'एक अजान सौ सुजान' (1892 ई.) उल्लेखनीय हैं। इनके उपन्यासों का मूल स्वर सुधारवादी एवं उपदेशमूलक है।

भारतेन्दु जी के मित्र ठाकुर जगमोहन सिंह ने 'श्यामा स्वप्न' नामक एक वृहद् उपन्यास की रचना सन् 1888 ई. में की। लज्जाराम मेहता ने सुधारवादी ढंग पर 'धूर्त रसिकलाल' (1899 ई.), स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी (1899 ई.), बिगड़े का सधार (1907 ई.) तथा आदर्श हिन्दू (1907 ई.) इन चार उपन्यासों की रचना की। राधाकृष्णदास ने 'निस्सहाय हिन्दू' (1890 ई.) नामक उपन्यास लिखा।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासकारों में जिस उपन्यासकार का नाम सर्वाधिक आदर से लिया जाता है-वे हैं बाबू देवकीनन्दन खत्री। इन्होंने तिलस्मी एवं ऐयारी उपन्यासों की रचना करके पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन किया। ऐसा कहा जाता है कि देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों को पढ़ने के लिए ही बहुत से अहिन्दी भाषियों ने हिन्दी सीखी। इनके लिखे प्रसिद्ध उपन्यास हैं- 'चन्द्रकान्ता' (1891 ई.), 'चन्द्रकान्ता सन्तति', 'काजर की कोठरी', 'भूतनाथ', 'कुसुम कुमारी', 'नरेन्द्र मोहिनी' आदि।

जासूसी उपन्यासों का श्रीगणेश करने का श्रेय हिन्दी में गोपालराम गहमरी को दिया जा सकता है। वे अंग्रेजी के जासूसी उपन्यास लेखक आर्थर कानन डायल से बेहद प्रभावित थे। गहमरी जी के उपन्यासों में प्रमुख हैं- 'सरकटी लाश' (1900 ई.), 'जासूस की भूल' (1901 ई.), 'जासूस पर जासूसी' (1904 ई.), 'गुप्त भेद' (1913 ई.), 'जासूस की ऐयारी' (1914 ई.) आदि। इन उपन्यासों ने विशुद्ध मनोरंजन का ही कार्य किया है। जासूसी उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी कृत जिन्दे की लाश, तिलस्मी शीशमहल, लीलावती, याकूत तख्ती आदि उल्लेखनीय हैं।

द्विवेदी युगीन उपन्यासकारों में अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध का नाम भी आदर से लिया जाता है। उनके लिखे दो उपन्यास हैं- 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899 ई.), तथा 'अधखिला फूल' (1907 ई.)।

इस काल के कुछ अन्य उपन्यासकार हैं- 'लज्जाराम शर्मा' ('आदर्श दम्पति', 'आदर्श हिन्दू', 'बिगड़े का सुधार'), मन्नन द्विवेदी ('रामलाल') तथा राधिकारमण प्रसाद सिंह (प्रेमलहरी) आदि।

हिन्दी उपन्यासों के प्रथम चरण में लिखे गए उक्त उपन्यासों का प्रधान उद्देश्य मनोरंजन एवं समाज सुधार ही रहा है। भले ही उपन्यास कला की दृष्टि से इस काल के उपन्यास उल्लेखनीय न हों, किन्तु इन्होंने उपन्यास को एक नयी दिशा देने का प्रयास अवश्य किया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इस काल में हिन्दी उपन्यास ने अपना मार्ग तलाश लिया। अब वह एक राजमार्ग पर पहुंच चुका था जहां से आगे का रास्ता सीधा एवं

सपाट था। इस काल के उपन्यास प्रधानतः सुधारवादी एवं उपदेशात्मक वृत्ति को लेकर लिखे गए जिनका मूल उद्देश्य मनोरंजन करना था।

2. प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यासकारों में 'प्रेमचन्द' अपनी महान प्रतिभा के कारण युग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। वस्तुतः सही अर्थों में उन्होंने ही हिन्दी उपन्यास शिल्प का विकास किया। उनके उपन्यासों में पहली बार सामान्य जनता की समस्याओं की कलात्मक अभिव्यक्ति की गई थी और जनजीवन का प्रामाणिक एवं वास्तविक चित्र पाठकों को देखना सुलभ हुआ था। अपने महान उपन्यासों के कारण वे वास्तव में 'उपन्यास सम्राट' का पद पाने के अधिकारी सिद्ध हुए।

प्रेमचन्द के उपन्यास राष्ट्रीय आन्दोलन, कृषक समस्या, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति, शोषण, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, आदि विविध विषयों से सम्बन्धित हैं।

प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यास हैं- 'सेवासदन' (1918 ई.), 'प्रेमाश्रम' (1922 ई.), 'रंगभूमि' (1925 ई.), 'कायाकल्प' (1926 ई.), 'निर्मला' (1927 ई.), 'गबन' (1931 ई.), 'कर्मभूमि' (1933 ई.) और 'गोदान' (1935 ई.) 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण)।

प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोड़ने का काम किया। वस्तुतः 'सेवासदन' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी उपन्यास को नई दिशा प्राप्त हो गई। प्रेमचन्द के उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता है- आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद, जिसके कारण वे पाठकों में लोकप्रिय हुए हैं। भाषा प्रयोग में वे अपने समकालीन सभी उपन्यासकारों से श्रेष्ठ हैं और इस दृष्टि से वे एक मानदण्ड बन गए हैं। अपनी इन विशेषताओं के कारण ही वे हिन्दी उपन्यास में एक नए युग का सूत्रपात कर सकने में सफल हुए हैं।

प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', वृन्दावन लाल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, जी. पी. श्रीवास्तव आदि प्रमुख हैं।

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने काव्य, नाटक आदि क्षेत्रों में सफलता पाने के साथ-साथ उपन्यासों की रचना करके भी ख्याति अर्जित की। उन्होंने कंकाल (1929 ई.) तथा तितली (1934 ई.) नामक दो उपन्यासों की रचना की है। 'इरावती' नामक एक अधूरा उपन्यास भी उन्होंने लिखा है जिसे वे अपनी अकाल मृत्यु के कारण पूरा नहीं कर सके।

संक्षेप में प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास में विषय वैविध्य एवं शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है। उपन्यासकारों ने एक ओर तो सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया दूसरी ओर ऐतिहासिक कथानकों पर नवीन दृष्टि से विचार करते हुए मनोरंजक एवं सुरुचिपूर्ण उपन्यासों की रचना की। इस समय तक हिन्दी उपन्यास का क्षेत्र व्यापक हो गया था और वह मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया था। प्रेमचन्द के रूप में हिन्दी साहित्य में एक ऐसे महान कलाकार ने अपना योगदान किया, जिसने कालजयी रचनाएँ देकर साहित्य की गरिमा बढ़ाई। निश्चित रूप से हिन्दी उपन्यास के विकास का द्वितीय चरण 'प्रेमचन्द' जैसे महान उपन्यासकार के कारण महत्वपूर्ण बन गया है।

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द के उपरान्त हिन्दी उपन्यास किसी एक निश्चित दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुआ, अपितु उसकी विविध धाराएँ अनेक दिशाओं की ओर प्रवाहित हुईं। विषय की दृष्टि से यदि हम प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों का वर्गीकरण करें तो निम्न वर्ग बनाए जा सकते हैं :

(1) मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

(2) साम्यवादी (प्रगतिवादी) उपन्यास

(3) ऐतिहासिक उपन्यास

(4) आंचलिक उपन्यास

(5) प्रयोगवादी उपन्यास

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेय का उल्लेखनीय योगदान है। 'जैनेन्द्र ने परख' (1929 ई.), 'सुनीता' (1935 ई.) और 'त्यागपत्र' (1937 ई.) के द्वारा हिन्दी उपन्यास को एक नई दिशा प्रदान की। उनके कुछ अन्य उपन्यास हैं 'कल्याणी' (1939

ई.), 'सुखदा' (1952 ई.), 'विवर्त' (1953 ई.) और 'व्यतीत' (1953 ई.)।

इस परम्परा के दूसरे उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी ने उच्चकोटि के लगभग एक दर्जन उपन्यासों की रचना की है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- 'सन्यासी' (1941 ई.), 'पर्दे की रानी' (1941 ई.), 'प्रेत और छाया' (1945 ई.), 'निर्वासित' (1946 ई.), 'जिप्सी' (1952 ई.) और 'जहाज का पंछी' (1955 ई.)। इन उपन्यासों में जोशी जी ने मानव मन की कुण्ठाओं एवं ग्रन्थियों का सुन्दर विश्लेषण किया है। यद्यपि उनके अधिकांश उपन्यासों की मूल विषयवस्तु प्रेम एवं रोमांस हैं तथापि उसका विवेचन मनोविज्ञान के आलोक में किया गया है।

मनोविश्लेषणपरक उपन्यासों में 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'शेखर एक जीवनी' (1941 ई.), 'नदी के द्वीप' (1951 ई.), तथा अपने-अपने अजनबी का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिन्दी के साम्यवादी उपन्यास हैं जिनमें साम्यवादी विचारधारा का आधार ग्रहण करके कथानक का ताना-बाना बुना गया है। यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त और अमृतराय इसी कोटि के उपन्यासकार हैं। 'यशपाल ने पार्टी कामरेड' (1945 ई.), 'दादा कामरेड' (194१), 'देशद्रोही' (1943 ई.), 'मनुष्य के रूप' (1949), 'अमिता' (1946 ई.) 'दिया' (1945 ई.), और 'पूरा-सप' (1957 ई.) आदि उपन्यासों में अपने मार्क्सवादी विचारों को अभिव्यक्ति दी है।

इस युग के दो महत्वपूर्ण उपन्यास लेखक हैं भगवती चरण वर्मा और अमृतताल नागर। वर्मा जी के कई उपन्यास प्रसिद्ध हुए हैं जैसे चित्रलेखा (1934 ई.), भूले-बिसरे चित्र, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सामर्थ्यय और सीमा।

अमृतलाल नागर ने 'सेठ बांकेमल', 'अमृत और विष', 'बूंद और समुद्र', 'महाकाल', 'शतरंज के मोहरे', 'सुहाग के नूपुर', 'मानस का हंस', आदि अनेक उपन्यासों की रचना की है।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में बाबू वृन्दावनलाल वर्मा का उल्लेख किया जा चुका है। उनके अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री एवं हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम इस वर्ग में लिया जा सकता है। आचार्य हजारीप्रसाद जी ने 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारु चन्द्रलेखा', 'पुनर्नवा' उपन्यासों की रचना की है। राहुल सांकृत्यायन के 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे तथा रांगेय राघव ने भी 'मुर्दों का टीला' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में 'आंचलिक उपन्यास' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। वे उपन्यास जिनमें किसी विशेष अंचल का चित्रण कथानक के द्वारा किया जाता है, इस वर्ग में आते हैं। हिन्दी के आंचलिक उपन्यासकारों में सर्वप्रमुख हैं- फणीश्वरनाथ 'रेणु', जिन्होंने मैला आंचल (1954 ई.) तथा 'परती परिकथा' (1957 ई.) नामक उपन्यासों में बिहार के ग्रामीण अंचल के रहन-सहन, रीति-रिवाज, राजनीतिक आस्थाओं, आदि का विशद चित्रण किया है। रेणु के अतिरिक्त अन्य आंचलिक उपन्यासकार हैं- नागार्जुन ('रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुखमोचन', 'वरुण के बेटे'), उदयशंकर भट्ट (सागर लहरें और मनुष्य), रांगेय राघव (कब तक पुकारूं) आदि।

आधुनिक उपन्यासों में विषय-वैविध्य के साथ-साथ शैलियों के विभिन्न रूप दिखाई पड़ते हैं। आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, आदि विविध शैलियों में उपन्यास लिखे जा रहे हैं। आज उपन्यास का कथ्य जीवन के अधिक नजदीक है, उसमें यथार्थ का पुट अधिक है। मानवीय सम्बन्धों के बदलते रूप को उसमें उजागर करने का प्रयास किया गया है तथा महानगरीय बोध से उत्पन्न मानसिकता को अभिव्यक्ति दी गई है। मन के भीतर की परतों को उखाड़ने का प्रयास भी इन उपन्यासों में है। हिन्दी उपन्यास ने बहुत कम समय में आशातीत प्रगति की है। नए-नए उपन्यासकार नए-नए विषयों को लेकर उपन्यास लिख रहे हैं अतः यह आशा की जा सकती है कि हिन्दी उपन्यास का भविष्य मंगलमय है।

Critical Overview / अवलोकन

उपन्यास गद्य साहित्य की सशक्त एवं जनप्रिय साहित्य विधा है। हिन्दी में इसका उद्भव अंग्रेज़ों के आगमन के पश्चात, आधुनिक काल में हुआ है। कुछ लोग उपन्यास को कहानी का लंबा रूप समझता है। असल में कहानी और उपन्यास, दोनों अलग-अलग साहित्य विधाएं हैं। कहानी में जीवन का एक पक्ष होता है। उपन्यास में जीवन

के संपूर्ण संदर्भों की व्याख्या होती है। दोनों के दृष्टिकोण भी अलग-अलग हैं। हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाल श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षागुरु' है। फिर आगे हिन्दी उपन्यास का उत्तरोत्तर विकास होता गया। प्रेमचंद जैसे युगपुरुष के आगमन से उपन्यास का नक्शा ही बदल गया। उसके बाद विभिन्न दिशाओं एवं धाराओं के रूप में हिन्दी उपन्यास विकसित होता गया।

Recap / पुनरावृत्ति

- आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है
- हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा गया 'परीक्षा गुरु'
- प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक चरण था
- इस काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी, जासूसी उपन्यासों की रचना अधिक हुई है
- बाबू देवकीनन्दन खत्री ने तिलस्मी एवं ऐयारी उपन्यासों की रचना करके पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन किया
- जासूसी उपन्यासों का श्रीगणेश करने का श्रेय हिन्दी में गोपालराम गहमरी को दिया जा सकता है
- हिन्दी उपन्यासों के प्रथम चरण में लिखे गए उक्त उपन्यासों का प्रधान उद्देश्य मनोरंजन एवं समाज सुधार ही रहा है
- प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यासकारों में 'प्रेमचन्द' अपनी महान प्रतिभा के कारण युग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं।
- प्रेमचन्द के उपन्यास राष्ट्रीय आन्दोलन, कृषक समस्या, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति, शोषण, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, आदि विविध विषयों से सम्बन्धित हैं।
- प्रेमचन्द के उपरान्त हिन्दी उपन्यास किसी एक निश्चित दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुआ।
- आधुनिक उपन्यासों में विषय-वैविध्य के साथ-साथ शैलियों के विभिन्न रूप दिखाई पड़ते हैं जैसे आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली आदि विविध शैलियों में उपन्यास लिखे जा रहे हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रहस्यकथा किसका उपन्यास है?
2. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन सा है?
3. जासूसी उपन्यासों के श्रीगणेश करने का श्रेय हिन्दी में किस को दिया जा सकता है?
4. अधखिला फूल किसका उपन्यास है?
5. प्रेमचन्द के उपन्यास के विषय क्या क्या थे?
6. प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों का नाम लिखिए?
7. प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास कौन सा है?
8. प्रसाद के उपन्यासों का नाम लिखिए?
9. हिन्दी के सर्वप्रमुख आंचलिक उपन्यासकार का नाम लिखिए?
10. उपन्यास लिखने की विविध शैलियाँ कौन कौन से हैं?

Answers / उत्तर

1. बालकृष्ण भट्ट
2. परीक्षागुरु
3. गोपालराम गहमरी
4. अयोध्यासिंह उपाध्याय
5. राष्ट्रीय आन्दोलन, कृषक समस्या, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति, शोषण, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि
6. सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान
7. मंगलसूत्र
8. कंकाल, तितली, इरावती
9. फणीश्वरनाथ रेणु
10. आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली आदि

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेमचंद जी के उपन्यासों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
3. प्रेमचंदोत्तर उपन्यास की विविध धाराओं का परिचय दीजिए।
4. 'वर्तमान उपन्यास' विषय, पर आलेख तैयार कीजिए।
5. अन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ- डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

ए बी सी डी - रवींद्र कालिया (विस्तृत अध्ययन केलिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उपन्यासकार रवींद्र कालिया का परिचय प्राप्त करता है
- रवींद्र कालिया जी द्वारा विरचित उपन्यास ए बी सी डी का परिचय प्राप्त करता है
- ए बी सी डी उपन्यास का कथावस्तु समझता है
- ए बी सी डी उपन्यास में चित्रित समस्याओं से अवगत होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के महान हस्ती रवींद्र कालिया जी एक सफल उपन्यासकार, कहानीकार एवं संपादक हैं। वे हिन्दी के महिला लेखिका ममता कालिया के पति भी हैं। रवीन्द्र कालिया का बहुचर्चित लघु उपन्यास है ए बी सी डी। यद्यपि यह आकार में छोटा है पर उसमें निहित भाव उतना ही संकीर्ण एवं विशाल है। प्रवास में रहनेवाले भारतीय माता - पिता एवं उनकी अगली पीढ़ी के बीच में संस्कारों को लेकर जो टकराहट होती है उसका खुला चित्रण इस उपन्यास में है। प्रवास एक प्रकार का विस्थापन है। ज्यादातर भारतीय इस सदमे को झेल नहीं पाते। यद्यपि आर्थिक तंगी के कारण आजीविका चलाने केलिए वे वहाँ रह तो जाते हैं लेकिन उनका दिल हमेशा देश की ओर झुका रहता है, उनके कानों में देश की पुकार गूँजती रहती है और वे अपने देश की सुंदर संस्कृति का मोह नहीं छोड़ पाते और ना ही किसी भी अन्य संस्कृति को अपना पाते हैं।

यहाँ तक तो सब कुछ फिर भी ठीक रहता है लेकिन जब अगली पीढ़ी की बात आती है तो उनमें संस्कृति के प्रति ऐसा मोह पैदा करना माँ - बाप के बस की बात नहीं रहती। वे उस संस्कृति को पूरे दिल से अपना लेते हैं जहाँ पर उनकी पैदाइश हुई है और ऐसे में पीढ़ीगत संघर्ष शुरू होता है। इसी बात का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवास, विस्थापन, संस्कृति, पीढीतर संघर्ष

Discussion / चर्चा

रवींद्र कालिया

रवींद्र कालिया हिन्दी साहित्य के ख्याति प्राप्त उपन्यासकार, कहानीकार, संस्मरणकार और एक बेहतरीन संपादक भी हैं। उनका जन्म 11 नवम्बर, 1939 को जालंधर में हुआ है। रवीन्द्र कालिया भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक पद पर थे। इसके अलावा उन्होंने 'नया ज्ञानोदय' के संपादन का दायित्व संभालते ही उसे हिन्दी साहित्य की अनिवार्य पत्रिका बना दिया। रवींद्र कालिया हिन्दी के उन गिने-चुने संपादकों में से एक हैं, जिन्हें पाठकों की नब्ज़ और बाज़ार का खेल दोनों का पता है।

उनके कथा संग्रह हैं - 'नौ साल छोटी पत्नी', 'गरीबी हटाओ', 'गली कूंचे', 'चकैया नीम', 'सत्ताइस साल की उमर तक', 'ज़रा सी रोशनी'।

उनके उपन्यास इस प्रकार हैं - 'खुदा सही सलामत है', 'ए.बी.सी.डी.', '17 रानडे रोड'

संस्मरण - 'स्मृतियों की जन्मपत्री', 'कामरेड मोनालिसा, सृजन के सहयात्री', 'गालिब छूटी शराब'

व्यंग्य संग्रह - 'नींद क्यों रात भर नहीं आती', 'राग मिलावट माल कौंस'

कहानी-संग्रह - 'रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ', 'इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ'

उन्हें कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। यथा - उ.प्र. हिन्दी संस्थान का प्रेमचंद स्मृति सम्मान, म.प्र. साहित्य अकादमी द्वारा पदुमलाल बक्शी सम्मान, उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण सम्मान, उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा लोहिया सम्मान, पंजाब सरकार द्वारा शिरोमणि साहित्य सम्मान आदि। 2016 में उनकी मृत्यु हुई।

सारांश

हिन्दी साहित्य के जाने माने लेखक रवींद्र कालिया का बहुचर्चित उपन्यास है ए बी सी डी। यह एक लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक प्रवासी भारतीयों के मार्मिक व्यथा को वाणी दी है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों को समेट कर जीने की चाह रखनेवाले माता - पिता अपने बच्चों की विचारधाराओं से मेल नहीं खा पाते। और उनके जीवन संबंधी फैसलों को देखकर असमंजस में पड़ जाते हैं। उनकी इन्हीं व्यथाओं का मर्मस्पर्शी आख्यान इस उपन्यास में हुआ है। प्रवासी भारतीयों के सांस्कृतिक संकट एवं संघर्ष ही इसमें मुखरित हुए हैं।

यू एस ए की पृष्ठभूमि पर लिखा गया इस उपन्यास की पूरी कथावस्तु एक ही परिवार के इर्द गिर्द घूमता है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं - हरदयाल, उनकी पत्नी शील, दो बेटियाँ शीनी और नेहा, शीनी के पति निक। उपन्यास की शुरुआत जो है एक ई मेल से होता है। हरदयाल भारत में रहनेवाले अपने भाई प्रभु से अपनी बेटी की तलाक केलिए उतारू होने की बात और घर की मातमी माहौल के बारे में भी बताते हैं और उससे विनती करता है की वह जल्द से जल्द प्रपन्नाचार्य (अस्ट्रालजर) से बात करके और कुंडली दिखाकर इस समस्या का हल पूछें।

इस उपन्यास में फ्लैश बैक तकनीक का काफी प्रयोग हुआ है। पात्रों के स्मृति पटल से कहानी की परतें खुलती हैं। हरदयाल सोचता है कि शीनी ने हमेशा उन्हें तनाव में रखा है। पहली बार तब हुआ जब वह अपनी शादी को लेकर जिद पर अड़ी हुई थी। तब भी घर का माहौल ऐसा ही बन गया था। वह नियमित रूप से पहले ही घोषणा करके निक के साथ डेट पर गई थी। अब शादी के पच्चीस साल बाद तलाक लेने की जिद पर अड़ी है।

शील ने अपनी छोटी बेटी नेहा को भी घर बुला लिया। वह भी पुरानी बातों के बारे में सोचती है कि जब शीनी पहली बार डेट पर गई थी तो माँ इसी प्रकार रो रोकर अपना हालत बिगाड़ ली थी। नेहा दिल से शीनी का साथ देती थी क्योंकि उसे पता था कि शीनी जो कुछ मुश्किल से हाजिल करती है बाद में उसे वह सब आसानी से प्राप्त हो सकता है।

शील बच्चों को भारतीय लहजे में जीने को मजबूर करना चाहती है। उसे डर है कि विदेश में रहकर अपने बच्चे भी यहाँ के तौर तरीके सीखकर बिगड़ ना जाएँ। लेकिन बच्चों को भारतीय संस्कृति से कोई खास लगाव नहीं है। शीनी खुले तौर पर इसका विरोध करती है।

जब शीनी डेट से वापस आ जाती है तो निक भी उस के साथ घर पर आती है। शील को निक पसंद तो आ जाता है लेकिन एकमात्र दिक्कत यह थी कि वह विदेशी था। बाद में शीनी पिता और माँ को मना लेती है और निक से शादी कर लेती है। निक भी बहुत अच्छा लड़का था, वह शीनी के माता-पिता को अपने माता-पिता से ज्यादा चाहता है और इज्जत करता है।

जब शीनी शादी करने की जिद्द ठानी हुई थी तो घर में पूजा वगैरह रखकर उसका मन बदलने की कोशिश हुई थी। तब एक बाबा को प्रवचन देनेकेलिए घर बुलाया गया था। और शीनी भारत के बारे में उनसे सवाल करती है तो वह बाबा कई बातें कहकर बात को टाल देता है। और भारत को अपमानित करने का दूसरों का चाल बताता है। शील शीनी को अपनी भारतीय सहेली की बेटी का उदाहरण देकर भारतीय संस्कार की महिमा का गुणगान करने पर शीनी उसका भी खंडन करती है।

हरदयाल को इसी बात से तकलीफ हो रहा है कि विदेशी होकर भी दामाद रिश्ते को बचाने की कोशिश करता है और अपनी ही बेटी घर को उजाड़ने पर तुली हुई है। प्रपन्नाचार्य के निर्देशानुसार वे शीनी को इस फैसले से हटाने केलिए काली गाय एवं कौए को नियमित रूप से खाना खिलाने की कोशिश करता है लेकिन कौए तो वहाँ दिखाई नहीं देता था और काली गाय भी नहीं मिली। तब वे किसी काली पक्षी को कौए मानकर अपनी तसल्ली केलिए वह विधी पूरा करता है। यह सब करने के बाद भी शीनी तलाक लेकर ही रहती है।

शील को सबसे ज्यादा चिंता शीनी के बच्चों को लेकर थी। ना जाने इन सबका बच्चों पर क्या असर पड़ेगा। लेकिन बच्चों को इन सबसे कोई फर्क ही नहीं पड़ा। वे पहले से ज्यादा खुश दिखने लगे। यह देखकर शील को थोड़ी राहत मिली।

उपन्यास के अंत तक आते आते निक भी अपने लिए जीवनसाथी ढूंढ लेता है और शीनी के माता पिता उसे अपना लेते हैं। बच्चे भी उससे बहुत प्यार से पेश आते हैं और इस तरह यह दो भारतीय आत्मा विदेशी संस्कार को अपना लेते हैं।

संवादों के द्वारा ही इसमें तनाव एवं संघर्ष का पता चलता है। रचना शिल्प की दृष्टि से एवं भाव सम्प्रेषण की दृष्टि से यह बहुत ही सफल और सुंदर उपन्यास है।

Critical Overview / अवलोकन

वरिष्ठ कथाकार रवीन्द्र कालिया का नया लघु उपन्यास ए.बी.सी.डी. पश्चिम में रह रहे प्रवासी भारतीयों के सांस्कृतिक संकट से हमें रू-ब-रू कराता है। यहाँ से जाने वाले लोग अपने साथ भारतीय संस्कार और संस्कृति लेकर जाते हैं, जबकि पश्चिम में उन्हें एक अलग ही परिवेश और संस्कृति मिलती है। भारतीयों की दृष्टि में पश्चिम की संस्कृति अपसंस्कृति है तो पश्चिम की दृष्टि में भारतीय संस्कृति पिछड़ी हुई और असभ्य। ए.बी.सी.डी. इन्हीं दो विपरीत सांस्कृतिक छोरों के द्वन्द्व की एक सघन झलक पेश करता है।

पश्चिम जाने वाला प्रत्येक भारतीय अपने अन्दर एक लघु भारत बचाकर रखना चाहता है। उसके लिए भारत को बचाकर रखने का मतलब है अपनी रूढ़ियों और संस्कारों सहित अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना को अपने अन्दर बचाकर रखना। लेकिन इन भारतीयों के सामने असली संकट तब पैदा होता है जब इनके बच्चे बड़े होते हैं जो कि पाश्चात्य संस्कृति में ही पले और बढ़े हैं, जिनके खून में तो भारत है पर परिवेश में पश्चिम। इस तरह घर-घर में एक सांस्कृतिक द्वन्द्व का जन्म होता है। उपन्यास में एक ओर जहाँ भारतीय संस्कृति में पले-बढ़े शील और हरदयाल हैं तो दूसरी ओर अमेरिकी संस्कृति में पली-बढ़ी शीनी और नेहा हैं, जो भारतीय संस्कृति के बारे में संशयग्रस्त हैं और इसके साथ तालमेल नहीं बिठा पाती हैं ये द्वन्द्व दो पीढ़ियों के बीच का द्वन्द्व न होकर दो भिन्न संस्कृतियों या जीवन मूल्यों के बीच का द्वन्द्व है।

रवीन्द्र कालिया इस नितान्त नये कथ्य और विषय पर पूरी रचनात्मक सावधानी के साथ चलते हैं। वहाँ न किसी पक्ष को स्याह या सफेद बनाने की कोशिश है, न ही किसी तरह की अवांछित पक्षधरता। विषय के प्रति तटस्थता ही उपन्यास का वह बिन्दु है जहाँ से दोनों संस्कृ तियों के बीच का संक्रमण और द्वन्द्व पूरी शिद्दत के

साथ उभरता दिखाई देता है। रवीन्द्र कालिया का सुगठित द्वन्द्वयुक्त चुहल भरा कथ्य अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति के कारण हिन्दी में अप्रतिम स्थान रखता है। कालिया जी के छोटे - छोटे सघन वाक्य तो जैसे नये मुहावरों की निर्मिति करते हैं। ये मुहावरे कोरी भावुकता का शिष्ट ढंग से उपहास करते हैं। ए.बी.सी. डी. पाठ के समय जहाँ गुदगुदी पैदा करता है वहीं अपने प्रभाव स्वरूप दिल को चुभता भी है और हमारी चेतना को बेचैन किए रहता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- रवींद्र कालिया के लघु उपन्यास है ए.बी.सी.डी
- पीढ़ीगत संघर्ष का दस्तावेज़
- प्रमुख पात्र - हरदयाल, शील, शीनी, नेहा, निक
- यू एस ए की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास
- शीनी तलाक लेने की फैसला करती है
- घर में मातमी माहौल
- तलाक को रोकने के उपाय करते हैं
- अंततः शीनी तलाक लेती है
- निक के नए जीवन साथी को शीनी के माता पिता अपना लेते हैं

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रवींद्र कालिया का जन्म कब हुआ?
2. ए बी सी डी किसकी रचना है?
3. ए बी सी डी किस विधा की रचना है?
4. रवींद्र कालिया की किन्हीं दो कथा संग्रहों की नाम लिखिए?
5. ए बी सी डी उपन्यास किस पृष्ठभूमि पर लिखा गया है?
6. ए बी सी डी उपन्यास के प्रमुख पात्र कौन कौन हैं?
7. शीनी किसके साथ डेट पर जाती है?
8. हरदयाल किस उपन्यास का पात्र हैं

Answers / उत्तर

1. 11 नवम्बर, 1939
2. रवींद्र कालिया
3. उपन्यास
4. नौ साल छोटी पत्नी, गरीबी हटाओ
5. यू एस ए
6. हरदयाल, शील, शीनी, नेहा, निक
7. निक
8. ए.बी.सी.डी.

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. उपन्यासकार रवींद्र कालिया का परिचय दीजिए।
2. ए बी सी डी उपन्यास का कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।
3. ए बी सी डी उपन्यास की सांस्कृतिक संघर्ष पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ - डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

BLOCK - 03

हिन्दी कहानी

इकाई 1

हिन्दी कहानी साहित्य का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी कहानी के उद्भव के बारे में समझता है
- हिन्दी कहानी की विकास यात्रा की जानकारी प्राप्त करता है
- प्रमुख हिन्दी कहानियों एवं कहानिकारों का परिचय प्राप्त करता है
- हिन्दी कहानी के विभिन्न चरणों का अध्ययन करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी गद्य में सबसे विकसित एवं लोकप्रिय विधा है कहानी। कहानी नापसंद करनेवाले बहुत ही विरले होते हैं। इसलिए भी हिन्दी कहानी का विकास बहुत तेजी से हुआ था। हिन्दी कहानी आधुनिक काल में विकसित एक गद्य विधा है। युगानुरूप विषयों को स्वीकार करते हुए हिन्दी कहानिकारों ने समय-समय पर अनेक कहानियाँ लिखी हैं, जो अभिव्यक्त भाव एवं शैली को लेकर काफी चर्चित हुई हैं। जनसाधारण को युगीन समस्याओं के प्रति जागरूक करने एवं सतर्क बनाने का सराहनीय काम हिन्दी कहानिकारों ने किया है। हिन्दी कहानी आम आदमी की आवाज़ बनी है, जनसाधारण को मनोरंजित किया है, देशहित को बनाए रखा है और नए युग निर्माण में भागीदार बनी हैं।

हिन्दी कहानी की इस अद्भुत विकास यात्रा पर नजर डालना बहुत ही रोचक एवं कौतूहलवर्धक है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कहानी, प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी, प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी कहानी, प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी, नई कहानी, कहानी आंदोलन

Discussion / चर्चा

हिन्दी गद्य विद्याओं में कहानी सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक हैं। यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं में कहानियों की माँग सर्वाधिक है। यही नहीं अपितु कई पत्रिकाएँ तो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथ-साथ उभरते हुए कहानीकारों की कहानियाँ भी छापती हैं। विगत 100 वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्द्धक है। अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज की हिन्दी कहानी में युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

उपन्यास और कहानी दोनों में ही 'कथा' तत्व विद्यमान होता है, अतः प्रारम्भ में लोगों की यह धारणा थी कि उपन्यास और कहानी में केवल आकार का ही भेद है, किन्तु अब यह धारणा निर्मूल हो चुकी है। ज्यों-ज्यों कहानी की शिल्पविधि का विकास होता गया, उपन्यास से उसका पार्थक्य भी अलग झलकने लगा। वास्तव में कहानी में

जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। जबकि उपन्यास में जीवन की समग्रता का अंकन किया जाता है। स्पष्ट है कि कहानी की मूल आत्मा 'एक संवेदना या एक प्रभाव' है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम-से-कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है।

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारम्भ 1900 ई. के आसपास ही मानना समीचीन है, क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में कहानी जैसी विधा का सूत्रपात नहीं हुआ था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इंदुमती' को ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी मानी है जिसका प्रकाशन सन् 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था। सरस्वती पत्रिका में ही सन् 1903 में रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई तथा सन् 1907 में बंग महिला की 'दुलाईवाली' कहानी छपी। इन तीनों कहानियों का हिन्दी कहानी क्षेत्र में अलग स्थान प्राप्त है।

हिन्दी कहानी के विकास का अध्ययन करने के लिए यदि कथा सम्राट प्रेमचन्द को केन्द्र बिन्दु मान लें तो उसे तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं-

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी
2. प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी कहानी
3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी

इस काल में हिन्दी कहानी अपना स्वरूप ग्रहण कर रही थी। उसकी शिल्पविधि का विकास हो रहा था और नए-नए विषयों पर कहानियाँ लिखी जा रही थीं। हिन्दी की प्रथम कहानी के अन्तर्गत जिन कहानियों का उल्लेख किया जा चुका है, उनके अतिरिक्त इस काल में लिखी गई अन्य प्रसिद्ध कहानियाँ हैं - माधवप्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता', लाला भगवानदीन की 'प्लेग की चुड़ैल', वृन्दावनलाल वर्मा की 'राखीबन्द भाई' विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'रक्षाबन्धन', ज्वालादत्त शर्मा की 'मिलन'। वस्तुतः 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों ने हिन्दी कहानी को एक दिशा प्रदान की और हिन्दी कहानी अपने विकास पथ पर अग्रसर हुई। उक्त सभी कहानियाँ इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थीं।

सन् 1909 ई. में काशी में 'इन्दु' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसमें जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ प्रकाशित होने लगी थीं। बाद में कहानियों का संग्रह 'छाया' नाम से सन् 1912 ई. में प्रकाशित हुआ। राधिकारमणप्रसाद की कहानी 'कानों में कंगना', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था, सुखमय जीवन और बुद्ध का कांटा आदि इस काल की प्रमुख कहानियाँ हैं।

2. प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी कहानी

प्रेमचन्द हिन्दी के युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं। पहले वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। उर्दू में लिखा हुआ उनका कहानी संग्रह 'सोजेवतन' 1907 ई. में प्रकाशित हुआ था। स्वातंत्र्य भावना से ओतप्रोत होने के कारण इस कहानी संकलन को अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिय था। कालान्तर में वे हिन्दी में 'प्रेमचन्द' नाम से लिखने लगे और उनका यह नाम कथा साहित्य में अमर हो गया। उनकी पहली हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर' सन् 1916 ई में प्रकाशित हुई और 'कफन' 1936 ई. में, अतः इस काल को प्रेमचन्द युग कहना समीचीन प्रतीत होता है। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने जीवन काल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में प्रकाशित हुई हैं।

प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियों में 'पंच परमेश्वर', 'बूढ़ी काकी', 'ईदगाह', 'परीक्षा', 'आपबीती', 'सवा सेर गेहूँ', 'आत्माराम', 'सुजान भगत', 'माता का हृदय', 'कजाकी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बड़े भाई साहब', 'नशा', 'ठाकुर का कुआँ', 'ईदगाह', 'लाटरी', 'पूस की रात', और 'कफन' के नाम लिए जा सकते हैं।

प्रेमचंद के अलावा कई कहानीकार इस काल में हुए, जिनमें प्रमुख हैं जयशंकर प्रसाद। उनके पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं - छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी और इंद्रजाल।

इस काल के अन्य प्रमुख कहानीकार हैं - पं. विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, रायकृष्णदास, पांडेय बेचान शर्मा उग्र, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, यशपाल आदि।

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी

सन् 1936 के बाद के समय हिन्दी कथा जगत में प्रेमचन्दोतर कहानी काल के रूप में जाना जाता है।

प्रेमचन्दोत्तर कहानी किसी एक दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुई अपितु विविध दिशाओं में उसका विकास हुआ। कहानी इस काल की केन्द्रीय विधा रही है अतः उसने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। इस काल में एक ओर प्रगतिवादी विचारधारा से अनुप्राणित कहानीकारों ने प्रगतिवादी कहानियाँ लिखीं तो दूसरी और मनोविश्लेषणपरक कहानीकारों ने ऐसे विषयों पर कहानियाँ लिखीं जिनमें व्यक्ति मन की आन्तरिक परतों को खोलकर देखा गया था।

प्रगतिवादी कथाकारों में सर्वप्रमुख हैं - यशपाल, जिन्होंने मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राणित होकर अनेक कहानियों की रचना की। वर्ग संघर्ष, शोषण, सामाजिक एवं नैतिक लड़ियों पर आक्रोश उनकी कहानियों के विषय रहे हैं। यशपाल की लिखी कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं - 'ये दुनिया', 'पिंजड़े की उड़ान', 'फूलों का कुर्ता', 'तर्क का तूफान', 'चक्कर क्लब' आदि। रांगेय राघव, नागार्जुन, अमृतराय, मन्मथनाथ गुप्त इसी परम्परा के अन्य कथाकार हैं।

मनोविश्लेषणवादी कहानी लेखकों में अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी एवं जैनेन्द्र के नाम उल्लेखनीय हैं। अज्ञेय ने व्यक्ति के परिवेश और संघर्ष को अपनी कहानियों में उकेरा है। उनकी कहानियों में मनोविश्लेषण के साथ-साथ प्रतीकात्मकता एवं बौद्धिकता का प्रभाव भी है। अज्ञेय ने कहानी को बौद्धिक एवं वैचारिक आधार प्रदान किए तथा प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग में वृद्धि की। अज्ञेय की कुछ प्रसिद्ध कहानियों के नाम हैं 'रोज', 'खितीन बाबू', 'पुलिस की सीटी', 'हजामत का साबुन', 'कोठरी की बात', 'गैंग्रीन', 'पठार का धीरज' आदि। उनके कई कहानी संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं यथा- विपथगा, शरणार्थी, कोठरी की बात, जयदोल, अमर बल्लरी और ये तेरे प्रतिरूप।

जैनेन्द्र की कहानियों में व्यक्ति मनोविज्ञान के दर्शन होते हैं। मानवीय दुर्बलताओं का यथार्थ चित्रण जैनेन्द्र की कहानियों में प्रमुखता से हुआ है। जैनेन्द्र जी की कहानियों का शिल्प भी अलग है, क्योंकि कहानी की मूल संवेदना अपनी उष्णता के साथ उसमें अन्त तक व्याप्त रहती है। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं - 'जाह्नवी', 'पत्नी', 'मास्टर साहब', 'परख', 'एक रात', 'घुवयात्रा', 'ग्रामोफोन का रिकार्ड', 'पानवाला' आदि।

मनोविश्लेषणवादी परम्परा को गति प्रदान करने वाले एक अन्य कहानीकार हैं -इलाचन्द्र जोशी, जिनकी कहानियाँ, मनोविज्ञान की दृष्टि से केस हिस्ट्री सी प्रतीत होती हैं। जोशी जी की कहानियों में दमित काम वासना, अहं, कुण्ठा का चित्रण किया गया है तथा इनमें घटनाओं की अपेक्षा चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। जोशी जी की प्रमुख कहानियाँ हैं 'रोगी', 'मिस्त्री' 'परित्यक्ता', 'चौथे विवाह की पत्नी', 'प्रेतात्मा', आदि। उनके कुछ कहानी संग्रहों के नाम हैं - खण्डहर की आत्माएँ, 'डायरी के नीरस पृष्ठ', 'आहुति' और 'दिवाली'।

प्रेमचन्दोत्तर कहानीकारों में एक वर्ग उन कहानीकारों का है, जिन्हें यथार्थवादी कहानीकार कहा जा सकता है। इन कथाकारों ने अधुनिक समाज की विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं का उद्घाटन यथार्थपरक दृष्टिकोण से किया है। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, रामप्रसाद पहाड़ी, देवीदयाल चतुर्वेदी, भगवतीचरण वर्मा, जानकीबल्लभ शास्त्री, रामवृक्ष बेनीपुरी, विष्णु प्रभाकर, राधाकृष्ण आदि इसी वर्ग के कहानीकार हैं।

कहानीकारों के एक वर्ग ने अपनी कहानियों में कामवासना, सौन्दर्यलिप्सा एवं यौन समस्याओं का चित्रण स्वच्छंद रूप में किया है। इन्हें यौनवादी कथाकार कहा जा सकता है। इस वर्ग के प्रमुख कहानीकारों में आरसीप्रसाद सिंह (कालरात्रि), द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण' (छोटा डॉक्टर), किशोर साहू (टेसू के फूल), मधुसूदन (उजाले से पहले), बजेन्द्रनाथ गौड (बिखरी कलियां) आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

उक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्दोत्तर कथाकारों में मनोविश्लेषण प्रवृत्ति की प्रधानता है। वर्ग संघर्ष एवं यथार्थवाद की ओर रूझान भी कुछ कहानीकारों का रहा है तथा उन्होंने प्रतीकात्मकता एवं सांकेतिकता का सहारा भी लिया है। इस काल में प्रेम, रोमांस एवं यौन समस्याओं को भी कहानीकारों ने अपनी विषयवस्तु बनाया है। युगीन परिवेश को पूर्णतः व्यक्त करने में इस काल की कहानी ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। कहानी के शिल्प ने भी इस काल में उत्तरोत्तर प्रगति की है। अब कहानी में घटना विरलता के साथ-साथ व्यक्ति चरित्र पर विशेष बल दिया जाने लगा।

हिन्दी कहानी आंदोलनों का सामान्य परिचय

कहानी आन्दोलन स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखन में कई कहानी आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ, यद्यपि कोई भी कहानी आन्दोलन लम्बे समय तक नहीं चल सका। ऐसे चर्चित कहानी आन्दोलनों में कुछ प्रमुख नाम हैं-

1. नई कहानी
2. सचेतन कहानी
3. अचेतन कहानी
4. साठोत्तरी कहानी
5. अकहानी
6. समानान्तर कहानी
7. समकालीन कहानी
8. जनवादी कहानी
9. सक्रिय कहानी
10. जन कहानी।

नई कहानी - नई कहानी का सूत्रपात 1950 ई. के आसपास नई कविता की तर्ज पर हुआ। नए कहानीकारों में प्रमुख हैं- मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अमरकान्त, मार्कण्डेय, मन्नू भंडारी, राजकमल चौधरी, श्रीकान्त वर्मा आदि।

सचेतन कहानी - सन् 1964 ई. के आसपास महीप सिंह द्वारा इसका प्रवर्तन किया गया। सचेतन कहानी में वैचारिकता को विशेष महत्व दिया गया। 'आधार' नामक पत्रिका में महीप सिंह जी ने 'सचेतन कहानी विशेषांक' निकाला। इस वर्ग के कहानीकार हैं- महीप सिंह, रामकुमार भ्रमर, बलराज पण्डित, हिमांशु जोशी, सुदर्शन चोपड़ा, देवेन्द्र सत्यार्थी।

समकालीन कहानी - इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक डा. गंगा प्रसाद 'विमल' हैं।

अकहानी - 1960 के आसपास कुछ ऐसे कथाकार सामने आए जिन्होंने कहानी के स्वीकृत मूल्यों के प्रति निषेध व्यक्त करते हुए अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा की। डॉ. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा को इस कहानी आंदोलन का प्रवर्तक माना।

समानांतर कहानी - इस आंदोलन के सूत्रधार कमलेश्वर हैं जिन्होंने 1971 के आसपास समानांतर कहानी का प्रवर्तन किया। धर्मयुग पत्रिका में इस आंदोलन का विरोध किया गया। सारिका पत्रिका ने इसको बढ़ावा दिया। इस आंदोलन से जुड़ी कहानीकार हैं - कमलेश्वर, नरेंद्र कोहली, हिमांशु जोशी, निरुपमा सोवती, मृदुला गर्ग, मणि मधुकर आदि।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी गद्य की प्रमुख विधा कहानी का विकास तीन कालों में विभाजित करके देखा जा सकता है। कहानी सम्राट प्रेमचंद जी के नाम पर इन कालों का नामकरण किया गया है। प्रत्येक चरण में प्रतिभासंपन्न कहानिकारों की कतार लगी हुई थी और इसके दम पर हिन्दी कहानी साहित्य उत्तरोत्तर विकास प्राप्त करता गया। आरंभकालीन कहानी की न्यूनताओं को परवर्ती काल के साहित्यकार मिटाए। प्रेमचंद जैसे युगप्रवर्तक प्रतिभा के आगमन से हिन्दी कहानी साहित्य को एक नयी दिशा प्राप्त हुई।

हिन्दी कहानी साहित्य विषय वैविध्य की दृष्टि से अनुपम है। आम जनता के जीवन से हिन्दी कहानी ने विषय ग्रहण किया है। सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाश डालने में हिन्दी कहानी सफल माध्यम सिद्ध हुआ है। हिन्दी कहानी के कई आंदोलन भी सामने आए हैं। विभिन्न विचारधाराओं के तहत इन आंदोलनों का चलन हुआ है। इनमें प्रमुख हैं - नई कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, अकहानी आदि।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी गद्य विद्याओं में कहानी सबसे सशक्त विधा है।
- विगत 100 वर्षों में हिन्दी कहानी ने आशातीत प्रगति की है।
- कहानी में जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है।
- हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारम्भ 1900 ई. के आसपास ही मानना समीचीन है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इंदुमती' को ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी मानी है।
- प्रेमचन्द पूर्व युग में हिन्दी कहानी अपना स्वरूप ग्रहण कर रही थी।
- प्रेमचन्द हिन्दी के युगप्रवर्तक कहानीकार हैं।
- प्रेमचन्दोत्तर कहानी का विविध दिशाओं में विकास हुआ।
- स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखन में कई कहानी आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ, इनमें प्रमुख हैं - नई कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, अकहानी आदि।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी की प्रथम कहानी?
2. 'दुलाईवाली' किसकी कहानी है?
3. प्रेमचंद की पहली हिन्दी कहानी?
4. प्रेमचंद पहले किस नाम से उर्दू में लिखते थे?
5. उर्दू में लिखा हुआ प्रेमचंद का प्रथम कहानी संग्रह का नाम क्या था?
6. प्रेमचंद युगीन कहानिकारों का नाम लिखिए।
7. नई कहानी का सूत्रपात कब हुआ?
8. समानान्तर कहानी का प्रवर्तक कौन है?

Answers / उत्तर

1. इंदुमती
2. बंग महिला की
3. पंच परमेश्वर
4. नवाबराय
5. सोजेवतन
6. जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, यशपाल आदि
7. 1950 ई. के आसपास
8. कमलेश्वर

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी कहानी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. 'कहानी सम्राट प्रेमचंद' पर टिप्पणी लिखिए।
3. प्रमुख कहानी आंदोलनों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
4. प्रेमचंदोत्तर कहानी की विषय वैविध्य पर आलेख तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : नगेन्द्र
3. युग और प्रवृत्तियाँ : डा.शिवकुमार मिश्र
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चनसिंह

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

प्रमुख कहानियाँ (विस्तृत अध्ययन केलिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'आकाशदीप' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'पूस की रात' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'चीफ की दावत' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'गैंग्रीन' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'अपरिचित' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'अपराध' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'अकेली' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है
- 'सलाम' कहानी एवं उसके लेखक का परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य में कहानियों का बहुत बड़ा स्थान है। कहानी पढ़ना मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन है। हिन्दी कहानियों में तो सामाजिक समस्याओं का खुला चित्रण भी मिलता है। हिन्दी कहानी पढ़ने से तत्कालीन समाज का चित्र पाठक को प्राप्त होता है। इस अध्याय में ऐसे ही कुछ कहानियों का उल्लेख दिया हुआ है जिससे भारतीय समाज का चित्र पाठक को प्राप्त हो सकता है। जनसाधारण की कहानियाँ कहना हिन्दी कहानी की विशेषता है। इस अध्याय में ऐतिहासिकता की पुट से युक्त प्रसाद की कहानी, कहानी सम्राट प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी, जादुई यथार्थवाद के सशक्त लेखक उदय प्रकाश की कहानी और हिन्दी कहानी जगत की सशक्त महिला लेखिका मन्नू भंडारी की कहानी आदि को सम्मिलित किया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आकाशदीप, पूस की रात, चीफ की दावत, गैंग्रीन, अपरिचित, अपराध, अकेली, सलाम

Discussion / चर्चा

1. आकाशदीप - जयशंकर प्रसाद

लेखक परिचय

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी केआदरणीय महाकवि, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, एकांकीकार एवं निबंधकार भी हैं। उनका जन्म 30 जनवरी 1890 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। घर पर ही उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, और उर्दू में अध्ययन किया था।

जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी,

प्रेम पथिक आदि उनके उल्लेखनीय काव्य ग्रंथ हैं। सन् 1935 में प्रकाशित उनका कामायनी महाकाव्य हिन्दी के महत्वपूर्ण काव्यों में एक है।

जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी सन् 1910 में 'इंदु' नामक पत्रिका में प्रकाशित 'ग्राम' है।

उन्होंने कुल मिलाकर 72 कहानियाँ लिखी हैं। 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आँधी', 'आकाशदीप', 'इन्द्रजाल' आदि प्रसाद के कहानी संग्रह हैं।

जयशंकर प्रसाद ने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' नामक तीन उपन्यास लिखे हैं। 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'जन्मेजय का नागयज्ञ', 'राज्यश्री', 'कामना', 'एक घूंट' आदि प्रसाद के नाटक हैं। इसके सिवा उन्होंने कई निबंध, एकांकी आदि भी लिखे हैं। उनका कामायनी महाकाव्य मंगलाप्रसाद पारितोषिक से सम्मानित हुआ है। प्रसाद 47 वर्ष की उम्र में 15 नवंबर 1937 में स्वर्ग सिधार गये।

सारांश

समुद्र में सवार करने वाले एक पोत में दो बंदी, दस नाविक और कुछ प्रहरी हैं। समुद्र पर लहरें उठती हैं। आँधी आने की संभावना है। चारों ओर तम पड़ी हुई है। उस आधी रात में एक बंदी अपने को मुक्त कर, दूसरे बंदी से पूछता है कि मुक्त होना चाहते हो? क्योंकि घनी अंधेरे में सवाल किये गये बंदी का रूप व्यक्त नहीं है। पहले बंदी को उत्तर देते हुए दूसरा पूछता है कि शस्त्र मिल जाएगा? थोड़ी देर के भीतर पहला बंदी अपने को पूर्ण स्वतंत्र कर देता है। आगे वह दूसरे के बंधन खोलता है। तदनंतर, स्वतंत्र होने की खुशी में पहले बंदी दूसरे को आलिंगन कर लेता है। तब पहले बंदी को लगता है कि वह स्त्री है। वह स्तब्ध होकर पूछते है कि तुम स्त्री हो? दूसरे थोड़ी व्यंग्य से पूछती कि क्या स्त्री होना पाप है?

पहला बंदी बुधगुप्त है और दूसरा चम्पा। बुधगुप्त पोत के एक नाविक से टकराकर उनका कृपाण निकाल लेता है। इतने में भयंकर आँधी आती है। बुधगुप्त पोत से जुड़े नाव को उससे अलग करा देता है। दोनों बंदी, बुधगुप्त और चम्पा नाव पर चढ़ते हैं। उस पर नाविक भी चढ़ता है। आँधी तीव्र गति से चलती है।

प्रभात हो गया। नींद खुलते समय पोत का नायक देखता है कि दोनों बंदी मुक्त हो चुके हैं। तब पोत का नायक बुधगुप्त को फिर बंदी बनाना चाहते हैं। दोनों में घोर संघर्ष चलता है। उस युद्ध में बुधगुप्त विजयी हो जाता है। परिणाम स्वरूप पोत का नायक अपने को बुधगुप्त का अनुचर स्वीकार कर अपना जीवन बचा जाता है। तब चम्पा बुधगुप्त को स्नेहिल दृष्टि से देखती है।

चम्पा एक क्षत्रिय बालिका थी। उनका जन्म भारतवर्ष में जाह्नवी नदी के तट पर स्थित चम्पा नगरी में हुआ था। उधर उनका घर था। उनके पिता कई वर्ष वणिक मणिभद्र के नाव पर प्रहरी का काम करता था। मणिभद्र का बड़ा व्यापार था। वह भारत से बाहर बाली, जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों पर व्यापार करते थे।

चम्पा पहले जाह्नवी नदी के तट की चम्पा नगरी के घर पर अपनी माँ के साथ रहती थी। असमय उनकी माँ की मृत्यु के समय चम्पा आठ वर्ष की बालिका थी। फलतः वह एकाकी हो चुकी। इतने में आठ वर्ष की बालिका चम्पा को पिता ने नाव में ले गयी। चम्पा नाव पर रहने लगी।

बुधगुप्त ताम्रलिप्ति के क्षत्रिय बालक थे। वह स्वभाववश जलदस्यु बन जाता है। कुछ समय पहले एक बार बुधगुप्त ने अपने दस्यु दल के साथ मणिभद्र के नाव लूटने के लिए आक्रमण करते थे। उस आक्रमण में चम्पा के पिता ने अपने जीवन तजकर अपने मालिक मणिभद्र का जीवन बचाता है। लेकिन उस संघर्ष में वह स्वयं मारा गया। घोर संघर्ष के बाद मणिभद्र ने बुधगुप्त को अपने पोत पर बंदी बना देता है।

पहली माँ और बाद में पिता को खोकर बालिका चम्पा अनाथ बन जाती है। पिता के मरने के बाद दुःखी चम्पा अकेली मणिभद्र के पोत पर रह गई। जब चम्पा पिता विहीन हो गयी, तब से पोताध्यक्ष मणिभद्र की बुरी दृष्टि उस पर पड़ती है। एक बार मणिभद्र निराश्रित चम्पा को बलात्कार करने को उठते हैं। किंतु प्रतिशोध करने से चम्पा उनकी काम-वासना का शिकार नहीं बन पाती। चम्पा ने मणिभद्र पर घृणा व्यक्त की। मणिभद्र को चम्पा के मनोभाव असह्य लगा। इसके प्रतिकार में मणिभद्र ने चम्पा को बंदी बना थी।

बुधगुप्त और चम्पा मणिभद्र के पोत के अलग-अलग भाग में बंदी रखे थे। अर्थात दोनों एक पोत के निवासी होकर भी परस्पर अनभिज्ञ थे। अब आकस्मिक दोनों

स्वतंत्र हुई है और परस्पर मिल जुलकर बातें करने का सुअवसर भी प्राप्त हुए हैं।

बुधगुप्त और चम्पा नये द्वीप पर पहुँचते हैं। उस नवीन द्वीप को बुधगुप्त ने चम्पा द्वीप नाम दिया। इस पर चम्पा को बहुत खुशी हुई। दोनों अच्छे मित्र बनकर चम्पा द्वीप पर जीवन शुरु करता है। बुधगुप्त सद्स्वभावी बनकर व्यापार शुरु करता है। व्यापार द्वारा संपन्न बनना उनका लक्ष्य था। चम्पा, चम्पा द्वीप के आदिवासियों के बीच रानी बन कर रहती है। बुधगुप्त भी आदिवासियों के बीच अपना अधिकार जमा लेता है।

चम्पा को अपने पिता अत्यधिक प्यारे थे। पिता की मृत्यु की चोट उनके दिल में अब भी शेष है। चम्पा मानती है कि अपने पिता के घातक बुधगुप्त हैं। चम्पा के हृदय में पिता के हत्यारे बुधगुप्त के प्रति घृणा तथा प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है। वह सदा अपने पास कटार छिपाए रखती हैं।

बुधगुप्त चम्पा को मित्र के रूप में नहीं, जीवन सहचरी बनाना चाहता है। चम्पा के मन में बुधगुप्त के प्रति कभी मित्र और कभी शत्रु का भाव होता है। वह कभी उनका उन्मूलन करना चाहती तो कभी कुछ समय उनसे प्रेम उमड़ती रहती है। बुधगुप्त ने द्वीप में चम्पा रानी के लिए एक अच्छा -सा भवन बनवाया। चम्पा कर्म-धर्म में रानी बनकर रहती है।

एक दिन सूर्यास्त में चम्पा अपनी सेविका जया के साथ एक छोटे नाव में समुद्र में चल देती है। उनके पास ही एक बड़े नाव पर बुधगुप्त भी था। वह शीघ्र चम्पा के नौका पर चढ़ा लेता है। चम्पा के पास बैठा बुधगुप्त उनसे प्रेम निवेदन करते हैं। चम्पा अचानक रो पड़ती है। वह कहती है कि वह उसे प्यार करती है। किंतु यह प्रेम मित्रता की होती है। बुधगुप्त ने चम्पा के पास अपनी शादी का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। परंतु चम्पा ने बुधगुप्त की पत्नी बनने की इच्छा तिरस्कृत कर दी। अब भी उनके मन में बुधगुप्त का रूप हत्यारे की है। इस पर बुधगुप्त दुःखी हो जाता है।

चम्पा द्वीप के दूसरे भाग में एक पर्वत-माला थी। द्वीप निवासी पूरे द्वीप को किसी देवी के समान सजाया गया था। वे पर्वत की ऊँची चोटी में एक दीप-स्तम्भ बनवाया गया था। आज उसके समारोह हो रहा है। लोग चम्पा रानी को एक पालकी में दीप-स्तम्भ के पास पहुँचा देते हैं। उधर बुधगुप्त और चम्पा राजा-रानी बनकर रहते हैं। तब चम्पा के मन में बुधगुप्त के प्रति द्वन्द्व चल रही है। वह उन्हें प्यार करने के साथ तिरस्कार भी करती है।

चम्पा ने एक दिन बुधगुप्त को अपने पिता की हत्या के बारे में पूछती है। तब बुधगुप्त स्पष्ट करता है कि वह उनके पिता का हत्यारा नहीं है, कभी भी उन्हें नहीं मारा है। वह तदनंतर उससे शादी करने का आग्रह प्रकट करता है। बुधगुप्त चम्पा से पूछता है कि इधर इन्द्र और शची बनकर रह कर मृत्यु पाने से हमें क्या लाभ है? इधर जीवन पर्यंत मित्र बनकर अविवाहित रहने से कौन-सा साक्षात्कार पा जाता है? बुधगुप्त चम्पा से शादी कर इधर से जन्मभूमि भारत लौटना चाहता है।

चम्पा द्वीप छोड़कर भारत लौटना पसंद नहीं करती है। वह द्वीप छोड़कर जाने की अपनी अनिच्छा व्यक्त करती है। बुधगुप्त ने साफ किया कि वह चम्पा द्वीप में चम्पा से शादी किये बिना नहीं रह सकेगा। चम्पा, द्वीप में आकाशदीप जलाकर रहने की अपनी उत्कट चाह स्पष्ट करती है। चम्पा बुधगुप्त से इस द्वीप में रहकर आकाशदीप की तरह स्वयं जलकर दूसरों के पथ प्रदर्शक बनने को कहती है।

बुधगुप्त का मन समुद्र जैसे कलुषित हो जाता है। उनके मन में लहरों के आने-जाने के समान भारत लौटने का और द्वीप पर रहने का विचार उद्वेलित होता है। उस रात में उन्हें नींद न आती है। उस रात सूर्योदय होते-होते बुधगुप्त अपनी नौकाओं को लेकर चम्पा द्वीप छोड़कर स्वदेश भारत की ओर प्रस्थान शुरु करता है। यह दृश्य चम्पा को हृदय भेदक रहा। वह थोड़ी देर भरी हुई आँखों से यह अनचाहा वापसी देखती रहती है। उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। आगे चम्पा वहाँ नियमित रूप से आकाशदीप जलाकर बुधगुप्त की प्रतीक्षा करती रही।

चम्पा उस द्वीप के दीप-स्तम्भ में जीवनपर्यंत दीपक जलाती रहती है। अंत में वह उसी द्वीप की मिट्टी में विलीन हो जाती है। चम्पा द्वीप के निवासी कई साल उनकी स्मृति में देवी समान दीप जलाकर पूजा करते रहे। कालांतर में समुद्र के पागल लहरों ने उस दीप-स्तंभ को भी तोड़ डाली। ऐसा, आकाशदीप इतिहास के पन्नों की स्मृति-वस्तु बना देती हैं।

Critical Overview / अवलोकन

आकाशदीप आधुनिक कहानीकार जयशंकर प्रसाद की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। यह प्रागैतिहासिक काल के इतिहास से अत्यन्त सुंदर ढंग में लिखी गयी आकर्षक कहानी है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने कितनी सजगता के साथ इतिहास और कल्पना का सुन्दर सामंजस्य किया है, वैसा दूसरा नहीं हुआ है। प्रसाद भावना संपन्न लेखक है। साथ ही वे हमारी अतीत की गौरवपूर्ण संस्कृति तथा सभ्यता के पुजारी भी रहे हैं। प्रेम और कर्तव्य के पारस्परिक द्वंद्व को लेकर लिखी गयी विवेच्य कहानी कर्तव्य भावना के समर्थन करने में सबल है।

आकाशदीप कहानी का कथानक आदि से अंत तक जाह्नवी के समान गतिशील बनी रहती है। इसका कथानक पाठक के मन में जिज्ञासा और कौतूहल बनाने में समर्थ है। इसकी नायिका चम्पा है, जिनके चरित्र में नायिका की चारित्रिक विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं। कहानी में पहले चम्पा के सुन्दर बाल्यकाल का वर्णन हुआ है, वह खुब आकर्षक है। आगे चम्पा को निडर, आत्माभिमान और साहसी के रूप में चित्रित किया है। फिर पाठक चम्पा में एक आदर्शनिष्ठ प्रेमी का रूप देखते हैं। चम्पा धीर, वीर और गंभीर युवती है।

चम्पा के चरित्र में कहानीकार ने पूरा अन्तर्द्वन्द्व भावना डाली है। वह कई बाह्य एवं आंतरिक संघर्ष सहती हैं। फिर भी किसी के पास सिर नहीं झुकाती है। धैर्य प्रदर्शन करने की वेला में वह निर्लोभ प्रदर्शित करती है। पोत का मालिक मणिभद्र उनका बलात्कार के लिए आते समय वह अपने निडर धैर्य द्वारा उसे पराजित करती है।

प्रस्तुत कहानी का नायक बुधगुप्त है। उनका चरित्र कहानी के आरंभ से अंत तक सर्वत्र व्याप्त है। उन्हें धीरोदात्त पुरुष के अनुकूल चित्रित किया है। बुधगुप्त ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय कुमार है। वह अपने साहस तथा धैर्य से जलदस्यु का रास्ता चुन लेता है। डरपोक कभी भी जलदस्यु नहीं बन जाता है। लेकिन मणिभद्र के पोत के आक्रमण में वह पकड़ा जाता है और पोत में बंदी बनाया जाता है।

बुधगुप्त एक संवेदनशील पुरुष है। इसलिए वे स्वयं स्वतंत्र होने के पश्चात दूसरे बंदी को मुक्त करने की आशा व्यक्त करता है। असल में बुधगुप्त चम्पा के पिता का हत्यारा नहीं है। इसलिए चम्पा के झूठे आरोप पर उनके मन में चोट लगता है। वह अपना निरपराधी मन साफ करते हैं "मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूँ, चम्पा! वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे।" यहाँ हम बुधगुप्त का भोला-सा मन देख सकता है। जब भयानक आँधी में पोत डूबने वाला है, तब हम बुधगुप्त का वीर क्षत्रिय भाव देखते हैं। वह अपने साथी को साथ लेकर एक नाव पर रक्षा की मिट्टी पर पहुँचता हैं। बुधगुप्त अकेला मुक्ति नहीं पाता, चम्पा को भी मुक्त कर देता है, यह उनकी निस्वार्थ भावना का प्रमाण है।

बुधगुप्त के मन में देश प्रेम चमकता है, जो प्रशंसनीय है। उन पर भारत भूमि के प्रति असीम श्रद्धा तथा भक्ति है। वह मातृभूमि को माता समझते हैं। जब अवसर मिलता है, तब माँ की हर संतान उनकी गोद पर लौटते हैं। बुधगुप्त के स्वदेश वापसी को इस दृष्टिकोण में देखना उचित है। प्रस्तुत कहानी के संवाद संक्षिप्त, सारगर्भित, कथानक को गति देने वाले हैं। साथ ही वातावरण की सृष्टि करने में सहायक भी होता है।

विवेच्य कहानी का शीर्षक - आकाशदीप संक्षिप्त, सरल और कौतूहल बढ़ाने में सहायक है। वास्तव में आकाशदीप शब्द में इसका संपूर्ण कथानक समाया हुआ है। यह शीर्षक कथावस्तु को व्यंजित करने के साथ सांकेतिक भी लगता है।

प्रसाद पात्र निर्माण और चरित्र-चित्रण में पूरा ध्यान रखने वाले लेखक हैं। उनके पात्र एवं चरित्र चित्रण उच्च स्तरीय अवश्य है। प्रस्तुत कहानी में चम्पा हो, बुधगुप्त हो या मणिभध्र, वातावरण और कथा गति के अनुसार चयन एवं प्रस्तुतीकरण हुआ है। प्रसाद हिन्दी के श्रेष्ठ नाटककार भी हैं। इसलिए कहानी में बड़ी आसानी से नाटकीय मुहूर्तो द्वारा संवाद-योजना हुई है। प्रसाद मूलतः कवि हैं। इसलिए गद्य में भी कवि सुलभ भाषा प्राप्य है। आकाशदीप की भाषा कलात्मक, सुबोध, संस्कृतनिष्ठ, परिष्कृत और प्रवाह युक्त है। प्रसाद इसमें तत्सम, तद्भव और संस्कृत निष्ठ भाषा का उपयोग किया है।

प्रसाद आदर्शवादी साहित्यकार हैं। प्रस्तुत कहानी में उन्होंने कल्पना एवं कर्तव्य की टकराहट दर्शाकर अंत में भावना की अपेक्षा कर्तव्य-निष्ठा को महान साबित किया है।

2. पूस की रात - प्रेमचंद

लेखक परिचय

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के काशी से चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ है। उनके पिता अजाब राय और माता आनंदी देवी थी। उनका यथार्थ नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। उनका मूल नाम धनपत राय, उर्दू में नवाब राय और हिन्दी में वे प्रेमचन्द नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द की पकड़ को देखकर बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट का विशेषण दिया था।

प्रेमचन्द आदर्श निष्ठ होने से उन्होंने 1906 में बाल विधवा शिवरानी देवी को जीवन सहचरी बना दिया है। उनकी तीन संतानें हुईं - श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। इसमें अमृत राय सुप्रसिद्ध उपन्यासकार-कहानीकार एवं हंस पत्रिका के संपादक रहे थे।

उपन्यास, कहानी, लेख, नाटक, समीक्षा, सम्पादकीय, संस्मरण आदि साहित्य के विविध क्षेत्र में प्रेमचन्द ने अपनी अपूर्व प्रतिभा प्रदर्शित की है। हिन्दी में उन्होंने 302 कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें तीन अनुपलब्ध हैं। उनकी संपूर्ण हिन्दी कहानियाँ मानसरोवर नामक संग्रह के आठ भागों में संकलित हैं। प्रेमचन्द की जादू की लाठी जैसी लेखनी से हिन्दी में बारह उपन्यास जन्म लिए, जिनमें अंतिम मंगलसूत्र नामक उपन्यास अपूर्ण है। प्रेमचन्द का 1936 में लिखा 'गोदान' विश्व प्रसिद्ध उपन्यास है। 1936 में लिखी कफन प्रेमचन्द की अंतिम कहानी है।

प्रेमचन्द का निधन 56 वर्ष की आयु में 8 अक्टूबर 1936 को काशी में हुआ था।

सारांश

पूस की रात भारतीय ग्रामीण जीवन को भलीभांति प्रतिफलित करनेवाली कहानी है। प्रस्तुत कहानी का नायक हल्कू है। हल्कू एक मामूली भारतीय किसान है। उनके पास थोड़ी-सी जमीन है, और कोई आमदनी नहीं है। उस थोड़ी-सी ज़मीन पर खेती करके वह अपना परिवार चलाता है। खेती के लिए पैसा उधार ले लेता था। जब फसल की कटाई होती थी तब ऋण लौटा देता था। कभी-कभी उन्हें ऋण चुकाने को न होता था। हल्कू कम आमदनी और ज्यादा खर्च सहकर किसी प्रकार अपनी ज़िंदगी आगे बढाता है।

हल्कू की पत्नी है मुन्नी। उसने शादी के बाद निर्धनता ही निर्धनता सही थी। जीवन में अभी तक उन्हें तनिक भी सुख न मिला था। मुन्नी ने मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से तीन रूपये इकट्ठे किये हैं। पूस आने वाला है। घर पर कम्बल न था। तीन रुपये में मामूली कंबल खरीद कर सर्दी से बचना उसकी आशा है।

जब हल्कू खेती की ओर जाने के लिए निकला, तब गाँव का साहूकार सहना ऋण वापस लेने आता है। सहना को देखकर हल्कू डरता है। क्योंकि वह गालियाँ देता है, कभी हाथ की लाठी से मारता भी है। हल्कू विवश होकर पत्नी मुन्नी पर शरण पाता है। वह मुन्नी से उसके तीन रूपये पूछता है, जिसे मुन्नी ने कम्बल खरीदने को इकट्ठा किया था। इस पर पति हल्कू से मुन्नी गुस्सा व्यक्त करती है। परंतु स्त्री की जन्मजात सहानुभूति के वश में आकर वह तीन रुपये पति को देती है।

सहना नामक महाजन हल्कू के तीन रूपये में रूठते हैं। किंतु बाकी की याद दिलाकर ले जाता है। जब हल्कू पत्नी मुन्नी की ओर लौटी, तब मुन्नी इसका बडा विरोध करती है। किंतु वह बाद में पति की निस्सहायता पर लाचार हो जाती है।

हल्कू रात में अपनी फसल के संरक्षण के लिए खेत की ओर निकलता है। तब उसका प्यारा पालतू कुत्ता जबरा भी उसके साथ जाता है। हल्कू ने कुत्ता जबरा को दो-तीन बार मना किया। लेकिन जबरा मानता नहीं है। वह अपने मालिक के पीछे जाता है।

पौष मास है। कहाँ से हो, पता नहीं, ठंडी हवा बह रही है। हल्कू के पास फटे-टूटे एक चादर के बिना ओढ़ने को और कुछ नहीं है। रात बढ़ने के साथ पूस भी बढ़ने लगी। दोनों को तनिक भी नींद नहीं आती है। हल्कू के पास समय काटने का उपाय न था। वह कुत्ता जबरा के साथ मन बहलाने की कोशिश करता है। किंतु ठंड क्षण-प्रतिक्षण तीव्र होता आ रहा है। तरह -तरह के उपाय करने पर भी दोनों सर्दी से बचता नहीं हैं। इतने में हल्कू पास के आम के बगीचे से सूखी पत्तियाँ इकट्ठा कर लेता है। सूखी डालों और पत्तों द्वारा अलाव जला देता है। अलाव के आग से

उनके और जबरा के शरीर में थोड़ा आराम मिल जाता है। थोड़ी देर बाद आग बुझ जाता है। तब पहले से ज्यादा सर्दी लगने लगती है। हल्कू जबरा को आँचल पर बिठा लेता है। उसकी बदबू नाक पर चढ़ने के बावजूद हल्कू उसे छोड़ता नहीं है।

आधी रात होते-होते शरीर की गरमाहट से हल्कू चादर ओढ़ कर सोने की कोशिश करता है। बड़ी सर्दी में वह सो जाता है। रात के भयानक अंधेरे में खेत में नीलगायें प्रवेश करती हैं। जबरा नीलगायों की आहट सुन कर उठते हैं। वह ऊँची आवाज़ में भौंकते हुए खेत की ओर दौड़ते हैं। जबरा की आवाज़ तथा नीलगायों के अट्टहास हल्कू सुनते हैं। वह समझ लेता है कि खेत में नीलगायें घुस आई हैं।

खेती पर नीलगायों के आक्रमण की बात समझने पर भी हल्कू नींद से उठता नहीं है। वह डर जाता है कि इधर से उठ जाता तो सर्दी में ठिठुरने पड़ेंगे। नीलगायों की झुंड (संघ) खेत को पूरा चरने लगते हैं। पूस की रात में नीलगायों की आहट सुनकर हल्कू एक बार उठता है और दो-तीन कदम आगे बढ़ाता है। तब ठंड की तेज झोंके आकर उनकी देह पर टकराती है। इसलिए वह फिर अलाव के पास जाकर बैठ जाता है। वह,वहाँ लेटकर अपने मन को झूठी दिलासा देता है कि जबरा के जीते जी कोई फसल का नाश नहीं कर सकता है।

हल्कू की खेत पर आई नीलगाय थोड़ी ही देर में पूरे खेत का सर्वनाश कर देती है। सुबह हल्कू की पत्नी मुन्नी अपने पति को जगाने के लिए झोंपड़ी पर आती है। खेत पर आते-आते वह समझती है कि सारी फसल नष्ट हो गयी है। मुन्नी यह खबर हल्कू को सुना देती है। वह निराशा से कहता है कि सारी फसल नष्ट हो गई है। मुन्नी आगे भयानक भविष्य के बारे में चिंतित होकर कहती है कि अब मजदूरी करके ऋण लौटाने पड़ेगा। मुन्नी की बातों में भावी जीवन का संघर्ष झलकता है। पत्नी की बातें सुनकर हल्कू प्रसन्न होता है। वह खुश होकर कहता है कि आगे रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा। हल्कू के मन की खुशी बाहर चेहरे में छायी जाती है।

Critical Overview / अवलोकन

पूस की रात कृषक जीवन का सही इतिहास है। प्रेमचन्द ने इसमें ग्रामीण किसानों के जीवन की नियति का दर्दनाक चित्रण किया है।

हल्कू के जैसे अनेक किसान हैं, जो जन्म से मृत्यु तक कठिन से कठिन परिस्थितियों से जूझ कर मरते हैं। कृषक जीवन विकट परिस्थितियों में फंस कर ही परिणति पाता है। दिन भर मेहनत करने वाले किसानों को कभी भी जिंदगी की छोटी-छोटी आशाओं का साक्षात्कार नहीं होती है। हल्कू के जैसे कई किसान हैं, जो महाजनों-साहूकारों से ऋण ले कर खेतीबारी करते हैं। उन्हें जीवन के अंत तक ऋण से मुक्ति नहीं मिलती है। वह आर्थिक दबोच में दबकर दम घोंट मरते हैं। हल्कू लाखों-करोड़ों निर्बल-निस्सहाय किसानों का प्रतीक है।

शोषण भारतीय गाँवों की एक सच्चाई है। भारत में अधिकतर किसानों को ऋण ले कर खेती करना पड़ता है। जब फसल काटता है, उससे भी ऋण अदा न होता है। सूद बढ़ते जाते हैं। जमींदार और महाजन गालियाँ देते हैं और मार-पीट के साथ किसानों का पीछा करते हैं। विवेच्य कहानी पूस की रात में सहना ऐसा एक क्रूर वैश्य-महाजन है, जो दरिद्र किसानों को कम पैसा दे कर ज्यादा कमाता है। सहना शोषक का प्रतिनिधित्व करता है तो हल्कू शोषित है।प्रेमचन्द प्रगतिवादी लेखक है। वे शोषण-मुक्त समाज चाहते थे। उनकी समाजवादी दृष्टि सहना और हल्कू के माध्यम से प्रस्फुटित है।

हम समझते हैं कि हमारे ग्रामीणों को आशा-आकांक्षाएँ कम हैं, उन्हें उससे भी ज़्यादा आशंकाएँ हैं। उनकी जीवन परिस्थितियाँ बेहद दर्दनाक हैं। वैसे उनके मोह-संकल्प भी सीमित हैं। प्रस्तुत कहानी में मुन्नी का कंबल खरीदने की चाह ऐसा ही एक लघु-मोह है। पूस की रात काटने के लिए एक कंबल खरीदना उनके कई साल का आग्रह है। कंबल के लिए अपनी मजदूरी में से वह तीन रुपये सुरक्षित रखती है, जिसे अंत में सहना को देना पड़ता है। जब ये पैसे सहना लेता है तब उनकी मानसिक व्यथा पूरी शोषण व्यवस्था पर केंद्रित है।

पूस की अंधेरी रात में खेती की ओर जाते समय हल्कू के साथ उनका कुत्ता जबरा पीछा करता है। जबरा जानवर होने से अपने मालिक के प्रति स्वामी भक्ति दिखाता है। हल्कू को जबरा पर अपार प्यार और दृढ़ विश्वास है। इसलिए वह जबरा पर अपनी मेहनत की रखवाली सौंप

देता है।

जबरा पर हल्कू का मनुष्य सहज प्यार है। इसलिए उसने घुटनियों पर गर्दन चिपकाते हुए जबरा से कहा "क्यों जबरा, जाड़ा लगता है?" कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रहो। यहां क्या लेने आए थे? अब खाओ, ठंड, मैं क्या करूं? जानते थे, मैं यहां हलवा-पूरी खाने आ रहा हूं, दौड़े-दौड़े चले आए। अब रोओ नानी के नाम को। तब जबरा ने हल्कू के मुंह की ओर स्नेह छलकती हुई आंखों से देखा। यह दोनों के आत्म संबंध का उत्तम उदाहरण है।

नीलगायों द्वारा खेत का सर्वनाश पर हल्कू दुःखी नहीं है। किंतु जबरा की असमय मौत पर वह दुःखी है। क्योंकि उससे हल्कू का संबंध भाईचारा का था। हल्कू का यह मनोभाव सूचित करते है कि मनुष्य प्रकृति के अन्य उपकारी जीवों से ताल मेल खाकर रहें।

प्रस्तुत कहानी में जबरा एक कुत्ता होकर भी अपनी उपस्थिति से उच्च स्थान निभाता है। कहानी का कथ्य अंत की ओर जाते समय जबरा का स्थान ऊपर उठता है। तुलना करते समय मालूम होता है कि शोषक साहूकार सहना क्रूर मानव का प्रतीक है तो मूक प्राणी जबरा निश्चल प्रेम क प्रतीक है।

प्रेमचन्द ने सन् 1930 में पूस की रात द्वारा किसान-जीवन का एक अध्याय हमारे सामने रखा है। बाद में 1936 में उन्होंने गोदान उपन्यास द्वारा कृषक जीवन का संपूर्ण इतिहास समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। लगता है कि पूस की रात भारतीय किसान का मात्र हृदय है तो गोदान उनका पूरा शरीर है।

3. चीफ की दावत - भीष्म साहनी

लेखक परिचय

भीष्म साहनी हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार हैं। उनका जन्म 1915 में वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी में हुआ था। उन्होंने लाहौर विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए.और पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच.डी पास किया। राष्ट्र विभाजन के अवसर सांप्रदायिक दंगे के कारण वे पाकिस्तान छोड़कर भारत आये। वे पहले कॉलेज में अंग्रेज़ी के प्रोफेसर रहे और आगे सोवियत रूस में नौकरी भी किया।

भीष्म साहनी मार्क्सवादी विचारधारा के निपुण कहानीकार और उपन्यासकार हैं। 'भटकती राख', 'पहला पाठ', 'भाग्य रेखा' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'कड़ियाँ', 'झरोखे', 'तमस' आदि साहनी के चर्चित उपन्यास हैं। तमस उपन्यास पर केंद्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त साहनी पद्मभूषण से भी सम्मानित हुए हैं।

भीष्म साहनी की मृत्यु 11 जुलाई 2003 में हुआ था।

सारांश

शामनाथ एक मध्यम वर्गीय परिवार का उच्च शिक्षित नौजवान है। उनके पिता पहले मर चुके थे। वह इकलौता पुत्र है। उनके घर पर बूढ़ी माँ और उनकी पत्नी के सिवा कोई नहीं है। वह शिक्षा के उपरांत एक विलायती कंपनी में नौकरी स्वीकार करता है। शामनाथ अपनी कंपनी में पदोन्नति चाहता है। स्वार्थ चित्त शामनाथ कंपनी के विदेशी चीफ, उनकी पत्नी, डिप्टी चीफ आदि को खुशामद करके प्रमोशन चाहता है। इसके लिए शामनाथ एक दिन अपने विदेशी चीफ, उनकी पत्नी आदि को दावत के लिए घर पर आमंत्रित करता है।

शामनाथ के घर पर आज चीफ की दावत है। शामनाथ और उनकी पत्नी को पसीना पोंछने का समय न मिलता है। सुबह से तैयारियाँ शुरु हुईं। घर की सभी वस्तुओं पर दोनों की नज़र पड़ती है। साफ-सफाई हुई। मेज़कुर्सियाँ आकर्षक ढंग पर सजाये रखे। तिपाइयाँ, नेपकिन, फूलदान आदि सभी नये रूप-भाव पा लिये।

मेहमानों में अधिकतर विदेशी हैं। इसलिए शामनाथ ने ड्रिंक की व्यवस्था की गई। कमरे की सजावट आकर्षक ढंग में की गयी। घर के फालतू चीज़ों को पलंग के नीचे और अलमारी के भीतर छिपाये दिये। पाँच बजे होते-होते तैयारियाँ खत्म होने लगीं। तब शामनाथ के सामने एक बाधा उपस्थित हुई कि अपनी बूढ़ी माँ का क्या करूं? उनकी दृष्टि में माँ भी एक फालतू चीज़ है। उन्हें कहाँ छिपाए जायें? शामनाथ की पत्नी ने उपाय बताया कि माँ को पिछवाड़े की उनकी बूढ़ी विधवा सहेली के घर की ओर भेज दिए जाये। लेकिन इस पर अतृप्ति प्रकट करते हुए शामनाथ कहते हैं कि माँ को उधर भेज देती तो उस बूढ़ी का इधर आना-जाना पुनः शुरु हो जायेगी। पहले बडे

कष्ट सहन कर उनकी पंद्रह-बीस बार के आगमन पर रोक लगा दी गयी थी।

आखिर शामनाथ और उनकी पत्नी, माँ को उनके कमरे में बिठने का निर्णय पर पहुँचा। माँ के कमरे के पास ही बरामदा है। चीफ आदि उधर से खाना खाने के लिए जायेंगे। शामनाथ अपनी माँ को बुला कर खूब आर्डर देता है। वह माँ को आज जल्दी खाना खाकर कमरे में बैठने का निर्देश देता है। माँ शाकाहारी है। माँस, मछली की बदबू होने से माँ ने सबेरे से कुछ नहीं खाया था। माँ बेटे से खाने का अनिष्ट व्यक्त करती हैं।

शामनाथ समझता है कि माँ नींद में ऊँची आवाज़ में खर्राटे लेती है। इसलिए उन्हें अपने कमरा बंद कर बैठने का निर्देश देता है। यह आज्ञा भी देता है कि न सोये और न कुरसी पर पैर रखकर बैठे। जब तक चीफ आदि मेहमान घर पर रहते, तब तक कमरे से बाहर न निकले। अंत में नया सलवार-कमीज़ एवं गहने पहन कर आने की आज्ञा देता है। तब माँ अपनी निस्सहाय स्थिति व्यक्त कर कहती है कि सारे आभूषण तेरी पढ़ायी के लिए बिक चुके हैं बेटा। माँ के उत्तर में शामनाथ को गुस्सा आता है। शामनाथ माँ को इसलिए सजाना चाहता कि यदि संयोगवश चीफ आदि की नजर उस पर पड़ ही जाए तो सब कुछ व्यर्थ न हो जाये। बूढ़ी माँ को सजधज करने की उनकी यह कूट नीति है।

आखिर शामनाथ के घर पर चीफ की दावत शुरु हुई। सभी मेहमानों को घर की सजावट बहुत पसंद आयी। चीफ की पत्नी को खिड़की और दरवाजे के पर्दा विशेष पसंद आये। मेहमान बड़ी देर तक विदेशी मदिरा पीते रहे। चीफ को विस्की पसंद आया। चीफ की पत्नी शामनाथ की पत्नी से अपनी पुरानी सहेली की जैसी बातचीत करती थी। घर पर एक अच्छा-सा वातावरण संपन्न हुआ था।

आधी रात होते-होते चीफ आदि मेहमान बरामदे द्वारा खाने के कमरे की ओर जाने लगे। रास्ता दिखाते हुए पहले शामनाथ, पीछे चीफ और बाकी मेहमान थे। अचानक माँ का खुला हुआ दरवाजा देखकर शामनाथ चौंक पड़े। माँ कुर्सी पर पैर रखकर सो रही थी। पल्ला के बिना उनके सिर नंगे लग रहे थे। उनके सिर दायीं से बायीं की ओर झूल जाता था। यह दृश्य देखकर देशी अफसरों की स्त्रियाँ ऊँची आवाज़ में हंसने लगीं। माँ को अव्यवस्थित रूप में देखकर शामनाथ को क्रोध आता है। पहले शामनाथ को लगा कि माँ को पकड़कर बाहर फेंक दूँ। परंतु ऐसा करना संभव न था, चारों ओर मेहमान खड़े हुए थे।

चीफ शामनाथ की बूढ़ी माँ की ओर बढ़ता है। उनका आगमन देखकर माँ सिर पर पल्ला साफ करते हुए हड़बड़ाकर उठती हैं। माँ हाथ पर माला पकड़ी हुई है। सकुचाकर सिर नीचे रखी माँ डर कर काँप रही थीं। चीफ मुस्कराहट के साथ माँ के हाथ पकड़कर पूछता कि 'हाउ डू यू डू?' अज्ञता एवं डर से माँ उत्तर देता कि 'हाउ डू यू डू?' इस पर देशी अफसरों की स्त्रियाँ हँस पड़ी। आगे शामनाथ की आज्ञा पर माँ बड़ी लज्जा के साथ एक पुरानी बारात की गीत गाती है। चारों ओर तालियाँ उठती हैं। शामनाथ संकोच से कहते हैं कि अपनी माँ अनपढ़ पंजाबी ग्रामीण औरत है।

चीफ, माँ के रूप-भाव पर प्रभावित है। उनमें अन्तर्लीन ग्रामीण भोलेपन में तन्मय होकर चीफ फुलकारी देखने की आशा करता है। माँ बूढ़ी होने से उनकी आँखें साफ दिखायी नहीं देती हैं। जब चीफ पंजाबी ग्रामीण औरतों द्वारा बनाने वाले दस्तकारी-फुलकारी की आशा की, तब शामनाथ माँ द्वारा फुलकारी देने का वादा देता है।

चीफ आदि मेहमान करीब आधी रात के आसपास शामनाथ के घर से विदा लेते हैं। माँ अपने कमरे में खाये-पिये बिना, शामनाथ पर डरकर-रोकर रहती थी। तब शामनाथ झूमते हुए माँ के कमरे पर आता है। माँ पर उनका गुस्सा, खुशी के रूप में बदल गया है। शामनाथ माँ को आलिंगन करते हुए कहता है कि माँ, तूने दावत रंगीन बना दिया है। ओ अम्मी, तुमने आज रंग ला दिया कहकर शामनाथ अपरिमित खुशी प्रकट करता है। वह कहता है कि साहब इतने खुश हो गए कि प्रमोशन अवश्य मिल जायेगी। चीफ की खुशामदी से उसे तरक्की होने वाली है।

शामनाथ की बूढ़ी माँ कई साल से हरिद्वार जाना चाहती है। वह अपने बेटे से हरिद्वार जाने की आशा करती है। किंतु शामनाथ उनके आग्रह का खंडन करते हुए कहता है कि नहीं, तुम यहीं नहीं रहोगी तो फुलकारी कौन बनाओगी? तेरी फुलकारी देखकर अफसर खुश होगा और मेरा प्रमोशन होगा। तब माँ अपने बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हरिद्वार जाने का आग्रह छोड़ देती है। अब सो जा माँ कहकर शामनाथ चला जाता है।

Critical Overview / अवलोकन

चीफ की दावत एक बूढ़ी माँ की हृदय व्यथा आंकने वाली मर्मस्पर्शी कहानी है। इसकी माँ जिस बेटे की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित करती है, बुढ़ापे में उस बेटे द्वारा माँ अपमानित हो जाती है। बूढ़ी माँ जीवन के सायंकाल में अपने इकलौता बेटे तथा उनकी पत्नी द्वारा प्रताड़ित होती है। शामनाथ के पिता के मर जाने के बाद माँ ने अपने बेटे को पालने के लिए भारी यत्न सहती हैं, यह बेटा भूल जाता हैं। जब तक बेटे को नौकरी न मिला था, तब तक यह माँ फालतू चीज़ न था। नौकरी मिलने और विवाह के बाद माँ एक फालतू चीज़ में बदल गयी है। यह स्वार्थ जीवन बिताने वाले आधुनिक युवकों की बुरी आदत है। शामनाथ लज्जाहीन युवा वर्ग का प्रतिनिधि है।

हमारे समाज में मध्य वर्गीय लोग उच्च वर्ग बनने का अवसर तलाशते हैं। इस तलाश में वह स्वार्थता एवं अमानवीयता का सहारा लेता है। हमारे शिक्षित नौजवानों में कुछ हमारे परंपरागत मूल्यों से विचलित हो जाते हैं। उन्हें अपने माँ-बाप मात्र पुतला जैसे हैं।

आधुनिक भारत में अनाथालय बढ़ते जा रहे हैं। जिसमें बूढ़े लोग भरे पड़े हैं। बूढ़ों पर अतृप्त संतान माँ-बाप को घर के बाहर उपेक्षित कर देती हैं। कभी छोटे-छोटे कारण में या कभी कारण के सिवा माता-पिता मानसिक-शारीरिक संघर्ष सह देता है।

वर्तमान समाज में कई युवा अपने बूढ़े माता-पिता का संरक्षण नहीं करते हैं। परिणामतः अनेक बूढ़ों को सड़कों के किनारे व अनाथालयों में अभय पाना पड़ता है। माँ-बाप अपनी संतनों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना जीवन तज देते हैं। किंतु अधिकतर माँ-बाप जीवन के सायंकाल में आँसू पीकर चल बसते हैं। वर्तमान काल में अधिकांश लोग अपनी संपन्नता का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इसलिए शामनाथ और उनकी पत्नी घर को रंगीन बनाने के इच्छुक हैं। लोगों में यह गलत धारणा पैदा हुई है कि अपनी चीज़ बुरी है और विदेशी चीज़ अच्छी। वह परंपरागत संस्कृति-सभ्यता के एकदम विपरीत मनोभाव है। अर्थात शामनाथ और उनकी पत्नी को विदेशी चीफ और पत्नी प्यारे हैं, अपनी माँ बुरी एवं फालतू हैं। पाखंड और अवसरवादिता चारों ओर व्याप्त हैं। चारों ओर लाभ-नष्ट का हिसाब चलता है। जितना खर्च करता, उससे दुगुना -चौगुना कमाने की लाभ चिंता बढ़ चुकी है। 'चीफ की दावत' की माँ की विवशता अवर्णनीय है। बूढ़ी निस्सहाय माँ की विवशता उच्च शिक्षित श्यामनाथ न समझता है। श्यामनाथ की प्रसन्नता का मूलाधार झूठा खोखलापन है। माँ की आँखें असमर्थ होकर भी उनके द्वारा चीफ को फुलकारी देने का श्यामनाथ का वादा खोखलापन का उदाहरण है। फुलकारी देकर प्रमोशन पाना मात्र उनका लक्ष्य है।

चीफ की दावत कहानी का दर्द तब फूटता है, जब माँ अपना हरिद्वार जाने का आग्रह बेटे से कहती है। शामनाथ फुलकारी तथा तरक्की की बात कर उनके मोह को दबा देता है। स्पष्ट होता है कि यदि माँ जाती तो श्यामनाथ का मोह व्यर्थ हो जायेगा। यहाँ माँ के प्रति उत्पन्न करुणा एवं सहानुभूति स्वाभाविक है। चीफ की दावत कहानी का शामनाथ मध्य वर्ग का प्रतिनिधि है। उनमें हम अनायास समकालीन महत्वाकांक्षा, पाखंड, प्रदर्शन तत्परता आदि सभी बुराइयाँ एक साथ देख सकते हैं।

4. गैंग्रीन - अज्ञेय

लेखक परिचय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है। अज्ञेय उपनाम उन्हें उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द और शीर्षस्थ कहानीकार जैनेंद्रकुमार ने मिल कर दिया है।

अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कसया (कुशीनगर) नामक स्थान में हुआ था। उन्होंने अपना बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बिताए। अज्ञेय की प्राथमिक शिक्षा घर पर संपन्न हुई। उन्होंने सन् 1925 में मद्रास क्रिस्टियन कॉलेज में इंटर के लिए प्रवेश पाये। सन् 1927 में बी.एस.सी के लिए लाहौर फॅरमैन कॉलेज में प्रवेश पाये। सन् 1929 में बी.एस.सी पूरा करके अंग्रेज़ी में एम.ए के लिए दाखिल हुए।

अज्ञेय बोलचाल की भाषा के प्रयोक्ता है। इनकी भाषा में संस्कृत की शब्दावली तथा देशज शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। अज्ञेय को आधुनिक हिन्दी के पथ-प्रदर्शक साहित्यकार माने जाते हैं। उन्होंने प्रतीक, नवभारत टाइम्स, दिनमान और विशाल भारत पत्रिकाओं का

कुशलतापूर्वक संपादन किया है। कुछ समय आकाशवाणी में नौकरी करने के बाद कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और जोधपुर विश्वविद्यालयों में प्रोफ़ेसर के पद पर काम संभाला है।

अज्ञेय प्रगतिशील विचारधारा के पक्षधर थे। आप स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले कर बम बनाते हुए अंग्रेज़ सैनिक द्वारा पकड़े गये। उन्हें 1930 से 1936 तक विभिन्न जेलों में दंड भोगने पड़े।

अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। महान कवि, प्रसिद्ध शैलीकार, कथाकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, ललित-निबंधकार, समर्थ संपादक, सैनिक और सफल अध्यापक आदि विविध रूप में अज्ञेय का आदरणीय स्थान है।

'विपथगा' (1937), 'परंपरा' (1944), 'अमर वल्लरी' (1944), 'कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ' (1945), 'कोठरी की बात' (1945), 'शरणार्थी' (1948), 'जयदोल' (1951), 'ये तेरे प्रतिरूप (1961), 'संपूर्ण कहानियाँ' (1975) आदि अज्ञेय के कहानी-संग्रह हैं। इसके सिवा उन्होंने विभिन्न विधाओं में कई रचनाएँ की है।

अज्ञेय को कई पुरस्कार और उपाधियाँ मिली हैं, जिनमें प्रमुख हैं

- केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964 - आँगन के पार द्वार)।
- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978 - कितनी नावों में कितनी बार)।
- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का साहित्य वाचस्पति पुरस्कार।
- अंतर्राष्ट्रीय 'गोल्डन रीथ' पुरस्कार।
- काशी नागरी प्रचारिणी सभा पुरस्कार (1963 - शेखरः एक जीवनी)
- भारत-भारती पुरस्कार (1983)
- विक्रम विश्विद्यालय की डी.लिट. उपाधि (1971)

महान साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय का निधन 4 अप्रैल 1987 को हुआ।

सारांश

मालती लेखक की रिश्ते की बहन है। दोनों बचपन में साथ-साथ पले और बढ़े हैं। स्कूल जीवन में मालती बड़ी चंचल प्रकृति की लड़की रही थी। तब उसे पढ़ने से ज्यादा खेलने में तात्पर्य थी। कम रुचि होने से मालती आगे न पढ़ी। महेश्वर नामक एक सद् स्वभावी डॉक्टर से उनकी शादी होती है। विवाहोपरांत पति डॉक्टर महेश्वर के साथ मालती शहर से बड़ी दूर के एक पहाड़ी प्रदेश में रहती है। दो वर्षों के पश्चात लेखक मालती से मिलने के लिए उनके घर आते हैं।

मालती के व्यवहार से लगता है कि वह रिश्ते के भाई लेखक का आगमन नहीं पसंद करती है। वह रूख-सूख, निरुत्साह होकर लेखक का स्वागत करती है। मालती उसका कुशल-समाचार तक नहीं पूछती है। लंबे समय बाद के मिलन होकर भी मालती उससे ज़रूरी बात तक न पूछती है। इसपर लेखक को आश्चर्य होता है। जब लेखक उनसे कुछ प्रश्न करता, तब वह कम शब्दों में रूखा-सा उत्तर दे कर हट जाने का प्रयास करती है।

विवाह के दो वर्षों के भीतर मालती का जीवन मशीन में परिणत होता है। मालूम पड़ता है कि उनकी दिनचर्या यंत्रवत चल रही है। वह हर सुबह उठकर पति के लिए नाश्ता बनाती है। आगे तन मन भूलकर दोपहर के लिए खाना पकाती है। विश्राम के बिना फिर शाम के लिए खाना बनाती है। इस तरह कोई मशीन के समान उनकी गृहस्थी चल रही है। लेखक समझते हैं कि शादी के दो वर्ष पूर्व मालती कितनी चंचल, आनंदप्रद लड़की रही थी। अब उनका उल्लासपूर्ण व्यक्तित्व कहीं बुझ गया है। मालती लगभग सबेरे से रात के ग्यारह बजे तक निरंतर प्रयत्नरत है।

प्रस्तुत कहानी में मालती के दैनिक जीवन का दीर्घ वर्णन हुआ है। अब वह अपने पति महेश्वर और लेखक को खाना खिलाने के पश्चात अपने छोटे बेटे टिटी को संभालती है। आज मालती तीन बजे खाना खाने के बाद बर्तन मांजने में जुड़ जाती है। बर्तन मांजने के बाद भी उनके चेहरे पर तनिक भी उत्साह-उमंग दिखायी नहीं पड़ता है। रात में मालती बच्चे टिटी को संभालने के बीच खाना भी बनाती है। साढ़े दस बजे मालती के सिवा सब खाना खाते हैं। इसके बाद साधारण-सी वह खाना खाती है। आगे भी उनकी दिनचर्या चलती है। बर्तन माँजते-माँजते रात के ग्यारह बजे हो जाते हैं। इसके बाद टिटी के साथ सोने का अवसर मिलती है। मालती पुनः प्रभात होने से पहले, सुबह चार बजे उठकर अपने यांत्रिक जीवन में सक्रिय जुड़ जाती है। क्योंकि कुछ समय के पश्चात उनके पति महेश्वर को अस्पताल में ड्यूटी के लिए जाना है। दिन पर दिन

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

आती रहती हैं। मालती का हर रोज़ जैसे तो वैसे आता रहता है।

Critical Overview / अवलोकन

गैंग्रीन (रोज़) नामक कहानी एक लघु घटना पर अवलंबित है। सारा कथानक इसकी नायिका मालती के रोज़ के जीवन (सहन) पर आधारित है। कहानी का पहला भाग मालती द्वारा अपने रिश्ते के भाई (लेखक) के औपचारिक स्वागत करने का वर्णन है।

मालती का वास्तविक व्यक्तित्व विवाह के उपरांत बुझ-सा गया है। इसलिए घर पर आए अपने भाई उसे मानो अनचाहा आदमी लगता है। यह उनके जीवन का दुखद परिवर्तन का सबूत है, जो पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रस्तुत कहानी में युवती मालती के विवाह जीवन के उपरांत के दैनिक जीवन के द्वारा घरेलू परिवेश में स्त्रियों की मानसिक-शारीरिक अवस्था का चित्र खींच दिया गया है। कभी-कभी वैवाहिक जीवन स्त्री व पुरुष को आनंदप्रद नहीं बन पाता है। कुछ घरेलू जीवन को बाहर से देखते समय अच्छा-सा प्रतीत होता है। सच में उनके मन-मस्तिष्क छोटा-मोटा ज्वालामुखी जैसे है। अधिकतर लोगों का घरेलू जीवन मालती के जीवन जैसा विडंबना पूर्ण है। कई युवतियों के विवाह-पूर्व आनंद, विवाहोपरांत कहीं छूट जाता हैं।

हमारे सामाजिक जीवन में स्त्री अपने घर पर करने वाला काम, काम नहीं मानता है। विवाहित नारी पति गृह व अन्य घर पर जो कुंडा सहती है, वह दूसरे लोग समझते नहीं हैं। असल में कई युवतियों के वैवाहिक जीवन त्रासदी पूर्ण नाटक जैसे चलता है। वह सब कुछ सहकर अपनी रोल भली-भांति खेलती है। भेद इतना है कि नाटक में नाट्य होती है तो वास्तविक जीवन में नाट्य नहीं, जीवन है।

गैंग्रीन नामक कहानी में मुख्य चार पात्र हैं - मालती, उसका पति डॉक्टर महेश्वर, उसका बेटा टिटी और लेखक। कहानी के सबसे मुख्य पात्र मालती है। पूरी कथानक और मूल संवेदना मालती से जुड़ी हुई है। अन्य पात्र मालती के व्यक्तित्व का समर्थन करने के सहायक मात्र ही हैं। गैंग्रीन संवाद प्रधान कहानी है। इसकी संवाद-योजना आकर्षक और प्रभावशाली है। इसका संवाद संक्षिप्त, सरल, सजीव एवं रोचक लगता है।

प्रस्तुत कहानी के देश-काल और वातावरण स्पष्ट है। पहाड़ी क्षेत्र के घरेलू वातावरण में यह कहानी घटित होती है। कहानीकार अज्ञेय भाषा-शैली से अनुगृहित कलाकार है। उनकी भाषा सरल, सजीव, सहज, एवं विषय के अनुकूल होती है। उन्होंने इसमें तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया है।

प्रस्तुत कहानी नारी-जीवन का एक सही पहलू है। किंतु साधारणतः हमें सरल लगने वाली स्त्री की संकीर्ण समस्याओं का सशक्त प्रस्तुतीकरण इसमें आद्यंत हुआ है। हमारे समाज में अब भी नारी सहनशीलता का पर्याय है। इसमें अवश्य परिवर्तन होनी चाहिए।

5. अपरिचित - मोहन राकेश

लेखक परिचय

हिन्दी के विख्यात नाटककार और कहानीकार मोहन राकेश प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, यात्रावृत्त और डायरी आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में अपनी कलम चलाकर अमर स्थान पाया है। आधुनिक हिन्दी नाटक को नयी दिशा प्रदान करते वाले लेखकों में मोहन राकेश का स्थान सर्वोपरि है।

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. पास किया। मोहन राकेश ने मुंबई, शिमला, जालंधर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया था। आगे उन्होंने 'सारिका' नामक पत्रिका के सफलतापूर्वक संपादन किया है।

'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों का राजहंस', 'आधे-अधूरे' मोहन राकेश के सुप्रसिद्ध नाटक हैं। 'परवेश', 'बकल मखुद' आदि उनके निबंध संग्रह हैं। 'अण्डे के छिलके' तथा 'अन्य एकांकी', 'बीज नाटक' आदि एकांकी संग्रह हैं। 'अन्तराल', 'अँधेरे बन्द कमरे', 'न आने वाला कल', 'नीली रोशनी की बाहें' आदि राकेश के उपन्यास हैं। उनके कहानी संग्रहों में क्वार्टर, पहचान तथा वारिस-उल्लेखनीय हैं। तीनों कहानी संग्रहों में उनकी 54 कहानियाँ संकलित हैं। 'आखिरी चट्टान तक' राकेश के यात्रा वृत

और 'समय सारथी' उनकी जीवनी है।

मोहन राकेश की मृत्यु 3 दिसम्बर 1972 को, मात्र 48 वर्ष की आयु में हुई।

सारांश

अपरिचित नामक कहानी एक ट्रेन यात्रा पर आधारित है। रात की वेला है। लेखक (कथा वाचक) ठंडी रात में ट्रेन पर यात्रा कर रहा है। कथा वाचक के आसपास के सीट के यात्री सो रहे थे। सामने के सीट पर एक महिला यात्री सोये बिना बैठती है। आगे वह कथा वाचक से अपने पति का नाम दीशी बता देती हैं। स्त्री यात्री नींद के बिना अपने नवजात शिशु को संभालती हुई रहती है। कथा वाचक और यह स्त्री यात्री एक रेल गाड़ी के यात्री होकर भी दोनों अपरिचित हैं। दोनों परिचय पाना चाहते हैं। स्त्री यात्री की चार महीने की बच्ची अधिक समय सोती रहती है। किंतु बच्ची कभी-कभी उठकर दूध के लिए रोती है। वह दूध पीकर कुछ किलकारियाँ मारकर जल्दी सो जाती है।

कथा वाचक और स्त्री यात्री, दोनों का वार्तालाप औपचारिक रूप में शुरू होता है। बातचीत के दौरान कथा वाचक को पता चलता है कि यह स्त्री यात्री अपने पति को विदा दे कर आ रही है। उसके पति दीशी अभी विद्यार्थी (शोधार्थी) है।

अपने पति दीशी के विशेष स्वभाव स्त्री यात्री कथा वाचक से बता देती हैं। दीशी उच्च शिक्षित है और उन्हें नगरी जीवन सभ्यता पसंद है। स्त्री यात्री शिक्षित है तो भी उच्च शिक्षित नहीं है। स्त्री यात्री ग्रामीण भोले-भाले वातावरण में पली है। उनके पढ़ा-लिखा पति दीशी चाहता है कि अपनी पत्नी अन्य लोगों से बातें कर, उनसे मिल जुलकर रहें। साथ ही साथ वह शहरी जीवन के प्रतिनिधि बनकर रहें। इसमें स्त्री यात्री की असमर्थता यह है कि वह ग्रामीण परिवेश में जन्मी है। यह जानकर भी दीशी हठ करता कि उनकी पत्नी कभी भी गुमसुम न रहें। कभी-कभी पति की आज्ञा होती कि वह निःसंकोच लोगों से मिले तथा हँसी-मज़ाक से बोलकर सभी को प्रभावित कर दें। किंतु ग्रामीण परिवेश में पलने से वह दूसरों से खुलकर बातचीत करने को सकुचाती है। इस पर दीशी को गुस्सा है।

स्त्री यात्री के पति दीशी चाहते थे कि अपनी पत्नी पार्टियों में उनके साथ रहे। जैसे अपने मित्रों की पत्नी हो, वैसे दीशी अपनी ग्रामीण पत्नी का बदलाव चाहता है। ग्रामीण होने के नाते उनके परिष्कृत पति दीशी के अनुसार बदलने में वह असफल होती है। यह भी नहीं, वह अकेली बैठना चाहती है। वह एक आदर्श निष्ठा पत्नी बन कर रहना चाहती है। अपनी आदत पर स्त्री को स्वयं कुंठा है। दूसरी तरफ दीशी के प्रति गुस्सा भी है। जब दीशी के व्यवहार उन्हें असह्य लगती, तब वह रोती है। उसका संकट यह है कि पति के इच्छानुसार अपने को कैसे परिवर्तित कर दूँ।

स्त्री यात्री के चार महीने की बच्ची नींद से उठकर रोती है। वह पहले जैसी उसे दूध दे कर सुलाती है। आगे, वह कथावाचक से कहती है कि अगले वर्ष में बच्ची कुछ बड़ी होने पर वह पति के पास जायेगी। इतने में कथावाचक अपनी पत्नी के बारे में बताता है। उनके मत में उनकी नलिनी तनिक भी समझदार नहीं है। इसलिए कथावाचक अपनी पत्नी नलिनी को कहीं साथ नहीं ले जाता है।

अंधेरे में ट्रेन बड़ी तेज़ी में चल रही है। रात बढ़ती है, साथ ही साथ अंधकार घना हो रहा है। अब ट्रेन के शीशे से बाहर का दृश्य अव्यक्त है। गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी तो स्त्री यात्री कथावाचक से पानी लेने का आग्रह करती है। कथावाचक बाहर जाकर पानी लेने के बाद बड़ी मुश्किल से गाड़ी पर चढ़ते हैं। इस पर स्त्री यात्री को पश्चाताप और दुःख होती है।

आधी रात होते वक्त कथावाचक को नींद आती है। बड़ी ठंड होने से वह अपने गरम कपड़े ओढ़कर आराम से सोते हैं। बच्ची बीच-बीच में उठकर रोने के कारण स्त्री यात्री सोती नहीं है। भोर होते समय कथावाचक की नींद खुलती है। वह स्त्री यात्री की सीट पर दृष्टि डालते तो सीट खाली दिखायी पड़ी। कथावाचक मान लेता है कि उस अपरिचित स्त्री यात्री पिछले किसी स्टेशन पर उतरी होगी।

Critical Overview / अवलोकन

अपरिचित सही अर्थ में नयी उद्‌भावना रखने वाली कहानी है। दांपत्य जीवन की बेमेल स्थिति प्रस्तुत कहानी का मुख्य विषय है। पति एवं पत्नी, एक दूसरे को जानने-मानने के लिए तैयार नहीं होता है। विभिन्न परिवेश में पलने वाले स्त्री-पुरुष विवाह के उपरांत अपनी-अपनी विभिन्नता को ले कर चलते हैं। भविष्य में यह भिन्नता

भयानक अंतराल पैदा करता है। फलतः परिवार का ताल-मेल टूट जाता हैं। कभी-कभी पति और पत्नी के विवाह-संबंध तलाक में पहुंच जाता है।

प्रस्तुत कहानी के पति दीशी उच्च शिक्षित है। वह अपनी निरीह ग्रामीण पत्नी को समझने का तनिक भी प्रयास नहीं करता है। दीशी की पत्नी जन्म से ही नगरीय जीवन से अपरिचित है। यह सच्चाई दीशी को खूब मालूम है। लेकिन पत्नी की वास्तविकता जानकर भी सच्चाई मानने को वह तैयार नहीं होता है। यहाँ दीशी का पुरुष भाव जाग्रत होता है। वह अपनी पत्नी को अपने अनुसार बदलने का आदेश देता है। यह विचित्र सिद्धांत उनके पुरुष मनोभाव का दूसरा प्रमाण है।

पति-पत्नी आपस में समझदारी के साथ रहना अच्छा है। एक, दूसरे पर करने वाला काम्प्लेक्स, पति-पत्नी के पवित्र संबंध को तोड़ता है। पति, पत्नी को परिवर्तित करने से अच्छा है वह स्वयं बदलना।

6. अपराध - उदय प्रकाश

लेखक परिचय

उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी 1952 को मध्यप्रदेश के सीतापुर जिले के शहडोल में हुआ है। आप आधुनिक हिन्दी का विख्यात कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार एवं पटकथाकार हैं।

'सुनो कारीगर', 'अबूतर कबूतर' आदि कविता संग्रह, 'दरियायी घोड़ा', 'तिरिछ', और 'अंत में प्रार्थना', 'पॉलगोमरा का स्कूटर', 'रात में हारमोनियम' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। 'पीली छतरी वाली लड़की', 'मोहनदास' आदि उपन्यास और 'ईश्वर की आँच' नामक निबंध संग्रह जैसी कृतियाँ उदय प्रकाश के कीर्ति-स्तंभ हैं। रूसी, अंग्रेजी, जापानी, डच, मलयालम और जर्मन जैसी भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ है।

उदय प्रकाश टी.वी.धारावाहिकों के पटकथाकार और निर्देशक रूप में प्रसिद्ध रहे है। उन्हें भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओम प्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, साहित्यकार सम्मान, केंद्र साहित्य अकादमी आदि के पुरस्कार आदि मिले हैं।

सारांश

कथानायक से उसके बड़े भाई छह साल बड़े थे। उस पूरे गाँव में सभी लड़के छोटे भाई से छह वर्ष बड़े थे। छोटे भाई छोटा ही नहीं, वह अकेला भी था।

कथानायक के बड़े भाई बचपन से अपाहिज थे। उनके एक पैर पर पोलियो हो गया था। लेकिन वे देवताओं की तरह बहुत सुंदर थे। वे समीप के कई गाँवों में सबसे अच्छे तैराक थे। उनको हाथ के पंजे की लड़ाई में कोई नहीं हारा सकता था। वे हाथ से नारियल और ईंट तोड़ सकते थे। छोटे भाई बड़े भाई के लिए एक उत्तरदायित्व की तरह था। बड़े भाई अपने छोटे भाई को प्यार करते थे और उसकी देखभाल एक संरक्षक के उत्तरदायित्व जैसा था।

छोटा भाई दुबला-पतला, कमजोर और चिड़चिड़ा था। छोटे भाई को बड़े भाई से ईर्ष्या था कि उनके बहुत सारे दोस्त थे।

बारिश के बाद खिले धूप में गाँव के सब बच्चे मैदान की ओर खड़ब्बल का खेल खेलने गए। यह खेल बड़ीताकत और वेग का खेल था। छोटा होने के कारण कथानायक ने छोटे भाई को खेल में स्थान न दिया है। इस खेल में बड़े भाई कई बार पीछे होने के बाद और अधिक शक्ति से खेलने पर जीत जाते हैं। बड़े भाई अपने खेल में इतने डूब गए कि उन्हें खेल के बीच अपने छोटे भाई साथ होने की चिंता भी न रहा। बड़े भाई का यह व्यवहार छोटे भाई को भारी संकट पर डालता है। अथवा छोटे भाई के लिए यह उपेक्षा असहनीय थी। यह असहनीयता उसमें बड़े भाई से थोड़ी देर के भीतर ईर्ष्या का रूप-धारणा करता है।

बड़े भाई खेल में बडी ताकत से जुड़े हुए थे। छोटे भाई अपने आप खेलते थे। वह एक खड़ब्बल एक चट्टान पर फेंककर स्वयं खेलता था। खेल के बीच अचानक चट्टान से टकराकर उसका खड़ब्बल माथे पर लगता है। खड़ब्बल पड़कर कथानायक का सिर फूट गया। छोटे भाई रक्त बहाकर घर पहुँच कर झूठ कह देता है कि बड़े भाई ने उसे खड़ब्बल से मारा है। इसके बाद जो घटित हुआ, उसका छोटे भाई ने संकल्प भी न किया था।

खून से लथपथ छोटे भाई को देखकर पिताजी गुस्से में बड़े भाई को खूब पीटने लगे। उस समय कथानायक छोटे भाई ने बड़े भाई के चेहरे में जो डर और वेदना देखी उसे जीवन में कभी भी भूलता नहीं है। बड़े भाई की निस्सहाय दृष्टि छोटे भाई से याचना कर रही थी कि वह सच बता

दे और यह क्रूर पिटाई से मुझे बचा लें। किंतु उस समय छोटे भाई को सत्य बोलने का धैर्य न था। छोटे भाई को तब डर हुआ था कि क्षण भर बाद ही अपनी बात से हट जाता तो पिताजी उसे भी मारेंगे।

बड़े भाई बिना अपराध के पिताजी से पिट रहे थे। उनकी नासमझी और अविवेक के कारण ही बड़े भाई को अकारण पिटाई मिली। बड़े भाई छोटे भाई के लिए कई बार खेल में अपने आप पराजित हो चुके थे। उन्हें उसका कभी दुःख नहीं हुआ था। किंतु आज छोटा भाई भयभीत और त्रस्त था। क्योंकि बड़े भाई बिना अपराध किए पिताजी के दंड का पात्र बन गया था। सचमुच बड़े भाई ने अपराध किया ही नहीं। उस समय कथानायक यानि छोटे भाई ने यह सत्य कहने का साहस नहीं दिखाया।

पिताजी द्वारा निपराध बड़े भाई को मारने के बाद कई साल गुजर गये। इतने वर्ष के बाद भी छोटे भाई बचपन में किये गये बड़ा अपराध भूल नहीं पाता है। आज कई वर्षों के पश्चात भी छोटे भाई के स्मरण में बचपन का उस बडे अपराध की स्मृति निरंतर उसके मन को पीड़ा पहुँचाती रहती है। उसकी स्मृति में बड़े भाई का निष्कलंक भाव कायम रहता है।

कथानायक छोटे भाई, अपने बड़े भाई से क्षमा माँग कर अपने अपराध के लिए उचित सजा पाना चाहता है। लेकिन अब तो क्षमा देने के लिए उसके माँ-बाप जिंदा नहीं हैं। वह सालों पहले चल बसे। इतने बड़ा होने पर भी बचपन के अपराध से कथानायक छोटे भाई अब भी मुक्त नहीं है। अब छोटे भाई सोचते कि इस अपराध के लिए उन्हें क्षमा कौन दे सकता है।

Critical Overview / अवलोकन

अपराध कहानी भाइयों के पारस्परिक प्रेम के मर्मस्पर्शी संदर्भों में से स्वाभाविक बनी हुई घटना की कहानी है।यह एक छोटी कहानी है। इसे कहानी से अधिक आत्मकथ्य कहना उचित है। इसमें दो भाइयों के बचपन के जीवन की एक छोटी-सी घटना का वर्णन है। प्रायः सभी के जीवन में घटित घटनाओं में मात्र एक है। साधारण घटनाओं को असाधारण रूप से प्रस्तुत करने में कहानीकार उदय प्रकाश सिद्धहस्त हैं।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने बालक मनोविज्ञान का अच्छा प्रयोग किया है। बड़े भाई पोलियोग्रस्त होकर अपाहिज है। फिर भी बड़ा मजबूत है। उनके पैर में कमजोरी है, किंतु मन-मस्तिष्क में नहीं है। इसलिए वह पत्थर तोड़ता है, हाथ से नारियल तोड़ते हैं। इस चित्रण से कहानीकार यह स्थापित करना चाहता है कि मानसिक शक्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है। यदि मन मजबूत है तो स्वाभाविकरूप से तन उसका पीछा करता है। तन कितने भी बलिष्ठ हो, मन अनुकूल न रहता तो कोई भी काम सफलतापूर्वक नहीं कर सकता है।

अपराध कहानी का कथ्य अविचारित घटित होता है। किंतु यह आगे मन-मस्तिष्क को अपार चिंता द्वारा परिवर्तित कर देता है। बडा भाई बड़ा होने से उसे अपने छोटे भाई पर अधिकार और दायित्व है। इसलिए बडा भाई हमेशा छोटे भाई के साथ रहता है। इतना ही नहीं, बडा भाई उसे बहुत प्यार करता है। ऐसा एक नौबत आता कि एक दिन खेल में बड़े भाई ने छोटे भाई की उपेक्षा की, उसका परिणाम यह होता कि छोटे भाई ने गलती से खुद के माथा में चोट लगा कर घर पर माँ को बताया कि बड़े भाई ने मारा है। इस पर पिता बड़े भाई की बुरी तरह पिटाई करते हैं। तब बड़े भाई याचना करते हैं कि छोटा भाई सच बोल दे। किंतु वह सच नहीं कहता है। बचपन के अविवेक में ऐसी बहुत सारी घटनाएँ घटित होती हैं। जिनमें कुछ संपूर्ण जीवन में पीड़ा दायक बन कर पीछा करती हैं।

बचपन का अपराध से छोटा भाई तब मुक्त हो जाता, जब वह उचित सजा भुगतना पड़ता। इसलिए छोटे भाई माफी मांगना चाहता है। सच में बड़े भाई को ऐसी कोई घटना की याद ही नहीं है। प्रस्तुत कहानी की अंतिम पंक्तियाँ इसे एक शोकांत में बदल देती हैं - 'तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है? क्या यह ऐसा अपराध नहीं है जिसके बारे लिया गया जो निर्णय था, वह गलत और अन्यायपूर्ण था, लेकिन जिसे अब बदला नहीं जा सकता? और क्या यह ऐसा अपराध नहीं है, जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता? क्योंकि इससे मुक्ति अब असंभव हो चुकी है।

कहानीकार उदय प्रकाश की पारिवारिक संवेदनाएँ पाठक के हृदय को स्पर्श करने लायक हैं। वह निजी अनुभव को ऐसी आत्मीय ढंग से व्यक्त करते हैं कि पाठक को जैसे अपना अनुभव प्रतीत होता है। इसे लेखक की

विशिष्ट निपुणता माननी चाहिए। आम घटनाएँ उदय प्रकाश की कहानियां विकट सच्चाई बनकर पाठक को भी सोच-विचार में धकेल कर सकती हैं। अपराध, नेलकटर जैसी उनकी कहानियाँ इसी कोटी पर आती हैं।

कहानीकार उदय प्रकाश की कहानियों का पारिवारिक संबंध पाठक में लंबे समय तक ताजा याद बनकर रहता है। यह भी नहीं, उनका संबंध पाठक में निरंतर कचोटता रहता है। अपराध कहानी की अंतिम पंक्ति हमें याद दिलाने के समान संबंधों से मुक्ति असंभव हो चुकी है।

7. अकेली - मन्नू भंडारी

लेखक परिचय

मन्नू भंडारी हिन्दी साहित्य जगत की एक महान लेखिका, कहानीकार एवं उपन्यासकार है। उनका जन्म 03 अप्रैल 1931 को मंदसौर जिला (मध्य प्रदेश) के भानपुरा नामक गाँव में हुआ था। मन्नू भंडारी का वास्तविक नाम महेंद्र कुमारी था। इनके पिता श्री सुख संपतराय भंडारी थे जो एक साहित्य और कला प्रेमी थे। इसलिए शिक्षा के साथ-साथ मन्नू भंडारी का साहित्यिक अभिरुचियों का भी विकास होता गया। मन्नू भंडारी की शुरूआती शिक्षा अजमेर में हुई और बाद में उन्होंने पश्चिम बंगाल के 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' से हिन्दी भाषा और साहित्य में एम.ए की डिग्री हासिल की। यहां मन्नू भंडारी का संपर्क हिन्दी जगत के कई महान साहित्यकारों से हुआ।

लेखिका मन्नू भंडारी ने एम.ए. की परीक्षा के बाद ही अध्यापन कार्य शुरू कर दिया और प्रध्यापिका बनकर कलकत्ता विश्वविद्यालय में इन्होंने अध्यापन को ही अपनी आजीविका का मुख्य साधन बना लिया। कलकत्ता रहते हुए ही मन्नू भंडारी की मुलाकात हिन्दी साहित्य जगत के प्रसिद्ध कहानीकार राजेंद्र यादव से हुई। पहले इनकी पुस्तकों, लेखकों और साहित्यिक विषयों पर चर्चा होती थी जो बाद में समय के साथ-साथ व्यक्तिगत चर्चाओं में बदलने लगी। इस तरह इनका विवाह 22 नवम्बर 1959 को कलकत्ता में हुआ था। इसके बाद मन्नू भंडारी कलकत्ता से दिल्ली चली आयीं जहाँ वे अपने रिटायरमेंट तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध 'मिरांडा कॉलेज' में बतौर प्राध्यापिका कार्यरत रहीं। उनका निधन 2021 में गुरुग्राम में 90 साल की आयु में हो गया।

उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

कहानी-संग्रह :- 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'त्रिशंकु', 'श्रेष्ठ कहानियाँ', 'आँखों देखा झूठ', 'नायक खलनायक विदूषक'।

उपन्यास :- 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'स्वामी', 'एक इंच मुस्कान और कलवा', 'एक कहानी यह भी'।

पटकथाएँ :- 'रजनी', 'निर्मला', 'स्वामी', 'दर्पण'।

नाटक :- 'बिना दीवारों का घर'।

उन्हें कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं, यथा - हिन्दी अकादमी दिल्ली का शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता पुरस्कार, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि।

सारांश

'अकेली' मन्नू भंडारी द्वारा विरचित बहुचर्चित एवं मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस कहानी की नायिका सोमा बुआ नामक एक परित्यक्त एवं अकेली बूढ़ी है। उसके जवान बेटे की मृत्यु हो चुकी है तथा पुत्र वियोग से बेचैन होकर उसका पति घर छोड़कर चल गया है। वह ग्यारह महीने हरिद्वार रहता है तथा साल में एक महीने के लिए घर पर आता है। लेकिन पुत्र वियोग से त्रस्त होकर भी सोमा बुआ घर पर ही पड़े रहने केलिए अभिशप्त है। उसे अपनी दर्द को भुला देने का कोई चारा नहीं है। और तो और जैसे ही उसका पति घर पर आता है, वह सोमा बुआ पर अधिकार जमाने लगता है तथा उसके आने जाने किसी से मिलने जुलने पर पाबंदी लगा देता है। ऐसे में सोमा बुआ का जीवन पति की उपस्थिति में तनाव के बीच ही व्यतीत होता है। सोमा बुआ पति के होते हुए भी उसके वियोग में विधवा- सा जीवन ग्यारह मास तक व्यतीत करती है। इस बीच उसका अन्य कोई रिश्तेदार न होने के कारण वह आस - पड़ोस के लोगों द्वारा ही अपने एकाकीपन को दूर करने का प्रयास करती है। वह सबको अपना समझती है और हर किसी की किसी भी जरूरत पर बिना बुलाए ही उपस्थित हो जाती है और जी जान लगाकर सारे काम में

हाथ बंटाती भी है। इसी प्रकार नीरसता के साथ उसके आज बीस वर्ष बीत चुके हैं।

राधा भाभी सोमा बुआ को हौसला देती है। सोमा बुआ के दुखी होने का मूल कारण यह है कि उसके पति ग्यारह महीने तक हरिद्वार में रहते हैं और जब एक महीने के लिए आते हैं तो उससे बहस करने लगते हैं। वे स्वयं तो भगवान का नाम लेकर यश कमाते रहते हैं और उसके जीवन में दुःख की वर्षा करते जाते हैं। राधा से बातचीत के दौरान ही वह अपने बेटे हरखू को याद करने लगती है। एक सप्ताह बीत जाने के पश्चात सोमा बुआ अपने पति से कहती है कि देवर के संबन्धी की किसी बेटी का विवाह उनके पड़ोस के भागीरथ के यहाँ निश्चित हुआ है इसीलिए वे सभी लोग विवाह करने के लिए यही गाँव में आ रहे हैं। उसका सोचना है कि देवरजी से चाहे हमारा सम्बन्ध टूट चुका है लेकिन वे समधी हमें विवाह में जरूर बुलाएँगे। यह बात उसके पति को पसंद नहीं आती है लेकिन सोमा बुआ की उत्सुकता प्रतिदिन बढ़ने लगी।

राधा से बात करते हुए सोमा बुआ एक दिन कहती हैं कि देवर के साथ हमारा संबन्ध बहुत पहले छूट गए थे इसीलिए पता नहीं वे समधी हमें बुलाएँगे कि नहीं। इस पर राधा कहती है कि समधी से कोई सम्बन्ध तोड़ता थोड़े ही है इसीलिए तुम्हें वे अवश्य बुलाएँगे। तभी सोमा बुआ की विधवा ननद से पता चलता है कि उसके समधी उन्हें भी विवाह में सम्मिलित करने का मन बना रहे हैं। यह सुनकर सोमा बुआ को चिंता सताने लगती है कि वह शादी में क्या पहने और उपहार में उन्हें क्या दे। इस सम्बन्ध में राधा से सलाह लेती है। वह तभी अन्दर जाकर अपने मृत बेटे की अंतिम निशानी अंगूठी निकालकर लाती है और पच्चीस वर्षों से टूटे संबंधों को पुनः जोड़ने के लिए उस अंगूठी को बेचने के लिए तत्पर हो जाती है। वह अंगूठी राधा को बेचने के लिए देती है और स्वयं लाल-हरी काँच की चूड़ियाँ खरीद लाती है।

शाम को राधा भाभी आकर बुआ को एक सिंदूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर देती है। यह देखकर सोमा बुआ प्रसन्न होती है कि एक तो उसका अब एकाकीपन दूर हो सकेगा। दूसरा बिरादरी में इज्जत भी रह जायेगी। यह सोच अंगूठी बेचने का गम भी वह भुला देती है। साथ ही उसने अपनी सफ़ेद साड़ी को पीला करवाया। आखिर विवाह का दिन आया और उसने सुबह नौ बजे तक खाना तैयार कर लिया था। वह राधा को बताती है कि लगन का समय शाम पाँच बजे का है और आजकल फैशन वाले लोग समय से थोड़ा पहले ही सबको बुलाते हैं। बुआ शादी में सम्मिलित होने की तैयारी करने लगती है। वह एक थाली में साडी,सिंदूरदानी, एक नारियल और थोड़े से बताशे सजाती है। यह सब उसका पति देख रहा था तथा वह कई बार कह चुका था कि यदि वे बुलाने न आएँ तो वहाँ जाना नहीं। सोमा बुआ भी विश्वास के साथ कहती है कि वे जरूर बुलाएँगे और बिन बुलाये वह न जायेगी। जैसे जैसे समय बढ़ता जाता है उसकी उत्सुकता भी बढ़ती जाती है। उसकी नज़र बराबर दरवाजे पर लगी रहती है। तभी समय गुजरता जाता है,सात बज जाते हैं लेकिन कोई बुलावा नहीं आता। सोमा बुआ अंततः निराश हो बुझे दिल से अंगीठी जलाने लगती है।

Critical Overview / अवलोकन

मन्नू भंडारी की बहुचर्चित कहानी है अकेली। इसमें लेखिका अकेलापन एवं अजनबीपन से त्रस्त बूढ़ी नारी की विवशता का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। पूरी कहानी सोमा बुआ की इर्द गिर्द घूमता है। कहानी की शुरुआत में लेखिका कहती है कि 'सोमा बुआ बुढ़िया है। सोमा बुआ परित्यक्ता है। सोमा बुआ अकेली है।' और यह बात सही भी है। अपने जवान बेटे की मृत्यु से सोमा बुआ एक दम से बुढ़िया हो गई है। अगर सोमा बुआ का बेटा उसके साथ होते तो वह अभी भी जवान बनी रहती। अपने बेटे के वियोग के दुख से बाहर निकालने की और अपने मन की इस बूढ़ापा से मुक्ति पाने की वह हर संभव प्रयास करती है। सार्वजनिक आयोजनों से उन्होंने कभी भी खुद को अलग नहीं रखा है। हर रिश्तेदार - आस पड़ोस के लोगों के आयोजनों में सोमा बुआ अपनी भूमिका बिना किसी शर्त के साथ निभाती रही। ज़िंदगी के खट्टे अनुभवों ने उन्हें तन - मन - धन से बूढ़ी बना दी गई। लेकिन इन सबसे बाहर आने की और अपने को इस दलदल से निकालने की वह कोशिश करती रहती है। अपनी किस्मत की इन झोंकों से खुद को वह बिखेरने नहीं देना चाहती।

दूसरी बात यह है की सोमा बुआ परित्यक्ता है। यह विषय बहुत ही गंभीर मालूम होता है। यद्यपि बेटे की मृत्यु हो चुकी है, सोमा बुआ अकेली नहीं है। उनके पति एवं अनगिनत रिश्तेदार मौजूद हैं। फिर भी वह परित्यक्त

ज़िंदगी गुजारने को मजबूर हो गई है। उसके पति बेट
` के गुजर जाने के गम में साल के ग्यारहों महीने हरिद्वार में रहते हैं। और एक ही महीने घर में रहते हैं। इस तरह पति के होते हुए भी सोमा बुआ विधवा सा जीवन व्यतीत करती है। और तो और जब उसके पति घर पधारते हैं तो उसकी राहत पाने की एकमात्र अवसर को भी नष्ट करने पर उतारू हो जाते हैं, अर्थात उसे घर से कहीं जाने ही नहीं देते।

सोमा बुआ सबको अपना समझती है और हर रिश्ता निभाना चाहती है। लेकिन रिश्तेदारों केलिए तो इस रिश्ते को निभाने की कोई खास दिलचस्पी नहीं है। क्योंकि ये दुनिया जो है मतलबी है और लोग हर रिश्ते में अपना फायदा ही समझते हैं। अब इस बूढ़ी परित्यक्त अकेली औरत से रिश्ता निभाकर किसी को भी कोई फायदा नहीं होना था। इसलिए उन्हें अकेला ही छोड़ा गया है।

यह वर्तमान समाज की कड़वी सच्चाई है। आज सब फायदा देखता है। रिश्तों का कोई मोल नहीं है। इस सामाजिक विसंगति की ओर लेखिका ने प्रकाश डाला है। और इस पुरुष वर्चस्व वादी समाज में स्त्री की करुणाजनक अवस्था की ओर भी संकेत है। यहाँ आदमी अपनी ज़िंदगी का फैसला ले सकता है, अपने गम को भुलाने के तारीके अपना सकता है मगर औरत नहीं। औरत को अपने हर दर्द के साथ जीना पड़ता है। वह अपनी ज़िंदगी को सुखमय बनाने का विचार भी दिमाग में नहीं लायी जा सकती। और ना ही मुश्किल वक्त में उसे अपने पति का साथ मिलता है। इन सब बातों का जिक्र लेखिका करती है।

8. सलाम - ओमप्रकाश वाल्मीकि

लेखक परिचय

ओमप्रकाश वाल्मीकि वर्तमान हिन्दी कथा साहित्य के सलामी कहानिकारों में अग्रणी हैं। उनका जन्म 1950 को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर के बरेले में हुआ था। उन्होंने एम ए तक की डिग्री हाजिल की। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं - 'सदियों का संताप', 'बस बहुत हो चुका', 'अब और नहीं' (काव्य संग्रह), 'सलाम', 'घूसपैठिए' (कहानी संग्रह), 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शस्त्र', 'मुख्यधारा और दलित साहित्य' (आलोचना), 'जूठन' (आत्मकथा), 'सफाई देवता' (समाज शास्त्रीय अध्ययन)।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी मुख्य रूप से दलित चेतना के लेखक हैं और उनकी अधिकांश रचनाएँ दलित संदर्भों से जुड़ी हुई हैं। अथवा यों कहें कि उनकी कहानियाँ दलित जीवन की असली पहचान से पके हुए अनुभवों से आबद्ध कहानियाँ हैं। दलित त्रासदी के विभिन्न आयामों को पहलुओं को इनकी कहानियाँ जिस सहजता से दर्शाती हैं ऐसी सहजता अपूर्व है।

सारांश

ओमप्रकाश वाल्मीकी की सलाम कहानी का कथानक परम्परागत हिन्दी कहानी से भिन्न है। इस कहानी की संवेदना दलित वेदना पर आधारित है, जिसमें हिन्दू व्यवस्थाओं की जड़ताओं एवं विद्रूपताओं का यथार्थ अंकन करते हुए पात्रों के मानसिक द्वन्द्व, संघर्ष, स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास को सृजनात्मक रूप दिया गया है। हिन्दू समाज में सदियों से चली आ रही मनुष्य विरोधी सलाम प्रथा को केन्द्र में रखकर कथानक की निर्मिति की गई है। सलाम प्रथा के मूल में विद्यमान जाति-प्रथा एवं वर्चस्व की मानसिकता को बेनकाब किया गया है। हिन्दू वर्चस्व में निहित अपमान,घृणा और अस्पृश्यता के बीच पलते बालमन पर अंकित गहरी खरोंचों का चारित्रिक विकास अद्वितीय है। ओमप्रकाश वाल्मीकी की इस कहानी का कथानक सलाम जैसी अमानवीय प्रथा की परिधि में मौजूद शोषण और दमन की वर्चस्ववादी व्यवस्था को बदलकर मानवता आधारित समतापरक जातिविहीन समाज की निर्मिति की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

सलाम कहानी के कथानक का आरम्भ हरीश की शादी की रस्म और विवाह-मण्डप से होता है, जिसकी व्यवस्था में घर-परिवार वालों के अलावा उसका प्रिय सहपाठी दोस्त कमल उपाध्याय भी लगा हुआ है। जुम्मन की बेटी से ब्याह करने हेतु जिस गाँव में हरीश की बारात गई है, वहाँ राँघड़ समुदाय के लोगों का बाहुल्य और वर्चस्व है। राँघड़ समुदाय के लोग चूहड़े समुदाय से नफरत और जाति-पाँति का हीनतर व्यवहार रखते हैं। वहाँ सलाम प्रथा की मौजूदगी दलितों को अपमानित करती है एवं हीनतर व्यवहार को साबित करने की कोशिश करती है। रोजगार और शिक्षा के उद्देश्य से गाँव से नगरों की ओर गए दलित समुदायों में आई चेतना के कारण हिन्दू कुप्रथाओं का विरोध और आत्मसम्मान का बोध जाग्रत हुआ है। हरीश और उस का परिवार दलित चेतना के प्रतीक हैं। देहरादून

में कमल उपाध्याय हरीश के सहपाठी और घनिष्ठ मित्र है। दो अलग-अलग समुदायों के बच्चों के मनोभावों और संस्कारों के माध्यम से कहानीकार ने बालमन की गहनतम परतों को खोलते हुए स्वानुभूति और सहानुभूति के अर्थ को रचनात्मक ढंग से कहानी में प्रस्तुत किया है। जब गाँव का चाय वाला कमल उपाध्याय को चूहड़ा समझकर चाय नहीं पिलाता, बल्कि उसे गालियाँ देते हुए अपमानित करता है, तब कमल को हरीश द्वारा दलित दमन एवं शोषण के बारे में बताई गई सारी बातें सच लगने लगती हैं। बारात की विदाई से पहले रांघड़ समुदाय के दबंग दूल्हे को अपने घरों में सलाम पर आने के लिए बाध्य करते हैं, धमकाते हैं, जिसका पुरजोर विरोध हरीश और उसके परिवार के लोग करते हैं। अन्ततः सलाम पर गए बिना गाँव से बारात विदा कर लेने में हरीश को असफलता मिलती है। अन्ततः वह स्वाभिमान और आत्मविश्वास को बचाने में सफल हो जाता है। इस प्रकार यह कहानी दलित चेतना की विशिष्टता की कहानी बन जाती है।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी कहानियों में भारत देश का चित्रण देखने को मिलता है। भारत के प्रागैतिहासिक तत्व से लेकर वर्तमान विसंगतियों तक का जिक्र समय समय पर हिन्दी कहानियों में हुआ है। इस अध्याय में भी हम इसी प्रकार की कुछ कहानियों का अध्ययन किया है। प्रसाद की ऐतिहासिकता से युक्त कहानी, प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी, भीष्म साहनी आदि आधुनिक कथाकारों की नवीन शिल्प एवं भावयुक्त कहानियाँ आदि का अध्ययन हुआ है। प्रत्येक कहानी विभिन्न भाव धाराओं को व्यक्त करता है। असमंजस, अजनबीपन, अकेलापन, वृद्ध समस्या, दलित समस्या, पारिवारिक विघटन, घुटन, संत्रास आदि जनसाधारण के जीवन के हर पहलू का चित्रण हुआ है। हिन्दी कहानी लोकप्रियता की चरम शिखर पर है। अतः यह आशा की जा सकती है कि कहानी का भविष्य भी उज्ज्वल।

Recap / पुनरावृत्ति

- आकाशदीप प्रागैतिहासिक काल के इतिहास से अत्यन्त सुंदर ढंग में लिखी गयी आकर्षक कहानी है।
- पूस की रात कृषक जीवन का सही इतिहास है।
- हल्कू लाखों-करोड़ों निर्बल-निस्सहाय किसानों का प्रतीक है।
- चीफ की दावत एक बूढ़ी माँ की हृदय व्यथा आंकने वाली मर्मस्पर्शी कहानी है।
- गैंग्रीन में विवाह के उपरांत घरेलू परिवेश में स्त्रियों की मानसिक-शारीरिक अवस्था का चित्र खींच दिया है।
- अपरिचित सही अर्थ में नयी उद्‌भावना रखने वाली कहानी है।
- अपराध कहानी भाइयों के पारस्परिक प्रेम के मर्मस्पर्शी संदर्भों में से स्वाभाविक बनी हुई घटना की कहानी है।
- अकेली कहानी में लेखिका ने अकेलापन एवं अजनबीपन से त्रस्त बूढ़ी नारी की विवशता का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।
- ओमप्रकाश वाल्मीकी की सलाम कहानी का कथानक परम्परागत हिन्दी कहानी से भिन्न है।
- गौंग्रीन कहानी में अभिव्यक्त नारी जीवन पर आलेख तैयार कीजिए

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी कौनसी है?
2. आकाशदीप कहानी के प्रमुख पात्र?
3. प्रेमचन्द की अंतिम कहानी?
4. गैंग्रीन किसकी कहानी है?
5. मोहन राकेश के नाटकों का नाम लिखिए?
6. अपरिचित नामक कहानी किस आधारित है?
7. उदय प्रकाश के कविता संग्रहों का नाम लिखिए?
8. 'बिना दीवारों का घर' किस विधा की रचना है?
9. सदियों का संताप किसकी रचना है?
10. हरीश किस कहानी का पात्र है?

Answers / उत्तर

1. ग्राम
2. बुधगुप्त और चम्पा
3. कफन
4. अज्ञेय
5. आषाढ़ का एक दिन, लहरों का राजहंस, आधे-अधूरे
6. एक ट्रेन यात्रा पर
7. सुनो कारीगर, अबूतर कबूतर
8. नाटक
9. ओमप्रकाश वाल्मीकि
10. सलाम

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. आकाशदीप कहानी की ऐतिहासिकता पर टिप्पणी लिखिए।
2. भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' एवं मन्नू भंडारी की 'अकेली' में वृद्ध विमर्श।
3. 'सलाम' कहानी में दलित चेतना।
4. 'पूस की रात' में यथार्थवाद।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ - डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

SGOU

BLOCK - 04

हिन्दी नाटक

इकाई 1

हिन्दी नाटक का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी में नाटक का उद्‌भव और विकास के बारे में समझता है
- आधुनिक कालीन हिन्दी नाटकों से परिचय प्राप्त करता है
- प्रसाद युग में हिन्दी नाटकों का विकास समझता है
- प्रसादोत्तर युग में भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- स्वातंत्र्योत्तर काल के नाटक की विशेषताएं समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

नाटक नट शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता हैं सात्त्विकता के साथ भावों का अभिनय। नाटक दृश्य काव्य होने के समान श्रव्य काव्य भी है। पुस्तक रूप में पढ़कर और रंगमंच में अभिनय देखकर इसका आस्वादन करता है। हिन्दी साहित्य में नाटक का विकास आधुनिक युग में ही हुआ है। इससे पूर्व भी हिन्दी के नाटक मिलते हैं। वे या तो नाटकीय काव्य हैं अथवा संस्कृत के अनुवाद मात्र या नाम के ही नाटक हैं। क्योंकि उनमें नाट्‌यकला के तत्वों का सर्वथा अभाव है। कुछ आलोचक रीवां नरेश विश्वनाथ सिंह का 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक को हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक मानते हैं। जो लगभग 1700 ई. में लिखा गया था।

Keywords / मुख्य बिन्दु

निबन्ध साहित्य,भारतेन्दु मण्डल, हिन्दी प्रदीप, सरस्वती पत्रिका, ललित निबन्ध, व्यंग्यात्मक निबन्ध

Discussion / चर्चा

नाटक गद्य साहित्य की एक सशक्त विधा है। नाटक को दृश्य काव्य के रूप में बड़ी स्वीकृति मिली है। जब सिनेमा की इतनी फैलाव एवं स्वीकृति नहीं हुई थी, तब नाटक जन मानस के सबसे मनपसंद कला बनी थी। सिनेमा के प्रचुर प्रचार होने से धीरे-धीरे नाटक रंगमंच छोड़ दिये।

आधुनिक युग में हिन्दी नाटक का सम्पर्क अंग्रेजी से स्थापित हुआ। अंग्रेज लोग नाट्‌यकला और मनोरंजन में अत्यधिक रुचि रखते थे और साहित्य में नाटकों की रचना भी प्रभूत मात्रा में हो चुकी थी। इसके साथ ही इस युग में हिन्दी-गद्य भी स्थिर हो गया और उसमें अभिव्यंजना शक्ति का भी विकास हो गया। इसलिए हिन्दी-नाट्‌यकला को पनपने का समुचित अवसर इसी युग में आकर प्राप्त हुआ।

1. आधुनिक हिन्दी नाटक

आधुनिक काल की अन्य गद्य-विधाओं के ही समान हिन्दी नाटक का भी आरम्भ पश्चिम के संपर्क का फल माना जाता है। भारत के कई भागों में अंग्रेजों ने अपने मनोरंजन केलिए नाट्‌यशालाओं का निर्माण किया जिनमें

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

शेक्सपियर तथा अन्य अंग्रेजी नाटककारों के नाटकों का अभिनय होता था। उधर सर विलियम जोन्स ने फोर्ट विलियम कॉलेज में संस्कृत के 'अभिज्ञान शाकुन्तलं' के हिन्दी अनुवाद के अभिनय की भी प्रेरणा दी। इस बीच 'अभिज्ञान शाकुन्तलं' के कई हिन्दी अनुवाद हुए जिनमें राजा लक्ष्मण सिंह का अनुवाद आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है। सन् 1857 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता बाबू गोपालचन्द्र (गिरधर दास) ने 'नहुष' नाटक लिखा और उसको रंगमंच पर प्रस्तुत किया। इधर पारसी नाटक कम्पनियाँ नृत्य - संगीत प्रधान नाटकों को बड़े धूम-धमाके से प्रस्तुत कर रही थीं जिससे सुरुचि सम्पन्न तथा साहित्यिक गुणों के खोजी हिन्दी-साहित्यकार क्षुब्ध थे। इन सबसे प्रेरित होकर भारतेन्दु बाबू ने जनता की रुचि का परिष्कार करने के लिए स्वयं अनेक नाटक लिखे और अन्य लेखकों को नाट्य साहित्य की रचना के लिए प्रोत्साहित किया।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हिन्दी-नाट्यकला के विकास को पाँच कालों में बाँटा जा सकता है :

1) भारतेन्दुयुगीन नाटक : 1850 से 1900 ई.

2) द्विवेदी युगीन नाटक : 1901 से 1920 ई.

3) प्रसाद युगीन नाटक : 1921 से 1936 ई.

4) प्रसादोत्तर युगीन नाटक : 1937 से अब तक

1. भारतेन्दुयुगीन नाटक

हिन्दी के आरंभकालीन नाटककार आचार्य भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने नाटक के लक्षण बताते हुए कहा है - नाटक शब्द का अर्थ नट है, यह लोगों की क्रिया है। नाटक गद्य का कथात्मक रूप है। नाटक में अभिनय के साथ संगीत, नृत्य, संवाद आदि भी होते हैं। भारतेन्दु युग हिन्दी नाटक का पहला चरण है। खड़ी बोली हिन्दी में प्रथम आधुनिक नाटक लिखने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चंद्र को मिलता है। भारतेन्दु युग हिन्दी नाटक का प्रथम चरण है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन का युग था।

भारतेन्दु युग में उनके मार्गदर्शन में कई नाटककारों ने नाटक लिखे हैं। जिनमें देवकीनंदन खत्री कृत सीताहरण, भारतेन्दु कृत भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, प्रताप नारायण मिश्र कृत शिक्षा दान आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतेन्दु युग के अधिकांश नाटक प्रहसन जाने जाते हैं। प्रहसन का मूल भाव हास्य-व्यंग्य है। वे तत्कालीन सामाजिक बुराइयों, अंधविश्वास, धार्मिक अनाचार, स्त्रियों पर अत्याचार आदि पर व्यंग्य करते थे। भारतेन्दु कृत वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, राधाचरण गोस्वामी का लिखा हुआ 'बूढ़े मुंह मुहासे' आदि इसका अच्छा नमूना है। भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' पाश्चात्य त्रासदी (ट्रेजडी) की शैली में लिखा दुखांत नाटक है।

भारतेन्दु युग में अंग्रेज़ी, संस्कृत एवं बंगला से कई नाटकों का अनुवाद हिन्दी में हुआ। राजा लक्ष्मण सिंह ने महाकवि कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का अनुवाद हिन्दी में किया। अंग्रेजी से शेक्सपियर के मर्चेंट ऑफ वेनिस, मैकबेथ जैसे नाटकों का अनुवाद भी हुआ। श्रीनिवास दास, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्णदास, राधाचरण गोस्वामी आदि भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार हैं। भारतेन्दु स्वयं नाटक लिखकर युग का नेतृत्व दिया था।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में पारसी थिएटर कंपनियों ने हिन्दी जगत पर अपना प्रभाव डाला था। कुछ अंग्रेजी नाटकों के हिन्दी अनुवाद करके रंगमंच पर प्रस्तुत किया था। हिन्दी नाटक क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद के आगमन तक हिन्दी नाटक तथा रंगमंच की स्थिति यही थी।

2. द्विवेदी युग

द्विवेदी युग में विषय-वस्तु की दृष्टि से भारतेन्दु काल में लिखे गए पौराणिक, ऐतिहासिक, सामयिक नाटकों के अतिरिक्त प्रहसन भी लिखे गए। इस काल के रचनाकारों ने भी तत्कालीन परिस्थितियों को अपने नाटकों का विषय बनाया। इस युग के पौराणिक नाटकों में राधाचरण गोस्वामी का श्रीदामा (सन् 1904), रामनारायण मिश्र का जनकबाड़ा (सन् 1906), बनवारी लाल का कृष्णकथा एवं कंसवध (सन् 1909), बालकृष्ण भट्ट का वेणुसंहार (सन् 1909), ब्रजनंदन सहाय का उद्धव (सन् 1909) और नारायण मिश्र का कंस वध (सन् 1910), जयशंकर प्रसाद का करुणालय (सन् 1912) माखनलाल चतुर्वेदी का कृष्णार्जुन युद्ध (सन् 1918) आदि उल्लेखनीय हैं।

इस काल के ऐतिहासिक नाटकों में गंगाप्रसाद गुप्त का वीर जयमल (सन् 1903), वृन्दावन लाल वर्मा का

सेनापति ऊदल (सन् 1909), बद्रीनाथ भट्ट का चन्द्रगुप्त (सन् 1915), जयशंकर प्रसाद का राज्यश्री (सन् 1915) और परमेष्ठी दास जैन का वीर चूड़ावत सरदार (सन् 1918) आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रताप नारायण मिश्र, भगवती प्रसाद, जीवानन्द शर्मा, कृष्णानंद जोशी, मिश्रबन्धु आदि प्रस्तुत युग के अन्य प्रमुख नाटककार हैं। इसके अतिरिक्त कई अनूदित रचनाएँ द्विवेदी युग में लिखा गया।

3. प्रसाद युग

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। वास्तव में प्रसाद के आगमन से नाटक का सही विकास हुआ। प्रसाद के समय देश में स्वतंत्रता संग्राम जोरों पर चलते थे। हिन्दी नाटक का सर्वतोन्मुखी विकास के लिए प्रसाद का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कल्याणी, करुणालय, चंद्रगुप्त, राज्यश्री, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ जैसे उच्च श्रेणी के नाटकों की रचना की। नारायण प्रसाद (बेताब, महाभारत, रामायण, कृष्ण सुदामा), आगा हश्र (सूरदास, श्रवणकुमार, सीता, वनवास), सुदर्शन (सिकंदर, धूपछांह) आदि प्रसाद युग के अन्य प्रमुख नाटककार हैं। इस युग में रौनक बनारसी ने इंसाफे महमूद, हुसैन मियां जरीफ ने लैला मजनू, अलीबाबा आदि रोमांचकारी नाटकों की रचना की है। प्रसाद युग के पौराणिक नाटककारों में सुदर्शन का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

बेचन शर्मा उग्र (चार बेचारे, उजबक), जी.पी.श्रीवास्तव (उलटफेर, विज्ञापन, विवाह), राधेश्याम कथावाचक (काउंसिल की मेम्बरी) आदि इस समय के नाटककार हैं। प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया संग्राम यथार्थवादी नाटक की कोटि में आता है। इस युग में मैथिलीशरण गुप्त ने भास के 'स्वप्न वासवदत्ता' नाटक का अनुवाद हिन्दी में किया है। तब विश्व कवि रवींद्रनाथ ठाकुर और गिरीश घोष के बंगाली नाटकों का अनुवाद भी हिन्दी में हुआ है।

4. प्रसादोत्तर युग

प्रसादोत्तर युग में भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पहले के जैसा दुखमय रहा था। इस समय की महत्वपूर्ण घटना सिनेमा का आगमन था। सिनेमा ने धीरे-धीरे नाटक का स्थान अपहरण कर दिये। दिनों दिन सिनेमा का प्रभाव ज्यादा से ज्यादा होता गया। इस समय के राष्ट्रीय चेतनापरक नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी (रक्षाबंधन, आहुति), सेठ गोविंद दास (कर्तव्य), गोविंद बल्लभ पंत (राजमुकुट), उदयशंकर भट्ट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस समय राष्ट्रीय चेतनापरक आदर्श के समानान्तर यथार्थपरक नाटक की रचना भी हुई है। जिसके लेखकों में उपेंद्रनाथ अश्क (अंजोदीदी), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (आवारा), लक्ष्मीनारायण मिश्र (सन्यासी, मुक्ति का रहस्य) आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

5. स्वातंत्र्योत्तर काल

स्वातंत्र्योत्तर काल की समय सीमा सन् 1947 से आज तक है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात हिन्दी नाटक में अनेक परिवर्तन हुए। तब नाटककारों ने नवलेखन और नया नाटक जैसे नाम पर नाटक रचना की शुरुआत की। भुवनेश्वर प्रसाद कृत 'तांबे के कीड़े' नाटक आधुनिकता बोध का पहला नाटक है। धर्मवीर भारती कृत काव्य नाटक अंधा युग, मोहन राकेश कृत आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, लक्ष्मीनारायण लाल कृत मादा कैक्टस, सुरेंद्र वर्मा कृत आठवां सर्ग, द्रौपदी, भीष्म साहनी कृत कबीरा खड़ा बाजार में, मुआवजे, बृजमोहन शाह कृत त्रिशंकु आदि आधुनिक नाटकों में मुख्य हैं। राजेशकुमार, सी.भास्कर राव, रूपान्तरण शर्मा, विजय तेंदूलकर, कृष्णकांत सिंह, आशिष अग्निहोत्री, पीयूष कुमार, बलवंत गार्गी, प्रताप सैगाल, नरेंद्र मोहन, कुसुम कुमार, गिरिराज शरण अग्रवाल, अवनीशचन्द्र मिश्रा, निखिल सचान, मृणाल पाण्डेय आदि वर्तमान समय के प्रमुख नाटककार हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल में नाटक क्षेत्र सजीव रहा है। इस समय की मुख्य विशेषता कथ्य और शिल्प की नवीनता है। इलेक्ट्रॉनिक्स संचार माध्यमों की सहायता से आज नाटक विकास पथ पर अग्रसर है।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी साहित्य में नाटक सबसे पहले विकसित होने वाली साहित्यिक विधा है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हिन्दी-नाट्यकला के विकास को पाँच कालों में बाँटा है। ट्रेजेडी, कॉमेडी, ट्रेजिकोमेडी और मेलोड्रामा नाटक के चार मुख्य प्रकार हैं। हिन्दी में नाटकों की शुरुआत भारतेन्दु हरिश्चंद्र से मानी जाती है। भारतेंदु ने रंगमंच के अभाव को पूरा करने की भी कोशिश की।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

हिन्दी नाटक के विकास में काशी, प्रयाग और कानपुर के नाट्य मंचों का अहम योगदान रहा है। नाटक से हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में समझने में मदद मिलती है। इसके साथ ही नाटक से मनुष्य में नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु युग के आरंभिक नाटक।
- नाटककार के रूप में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का स्थान।
- नाटक विधा पर भारतेन्दु का योगदान।
- नाटक क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का आगमन और उनका योगदान।
- प्रसाद के समकालीन नाटककारों का योगदान।
- स्वतंत्र्योत्तर नाटक की स्थिति।
- सिनेमा और टेलिविज़न के आगमन के कारण नाटक की क्षति।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक किसे माना जाता है?
2. नाटक किस शब्द से बना है?
3. हिन्दी साहित्य में नाटक का विकास किस युग में हुआ है?
4. आधुनिक युग में हिन्दी नाटक का सम्पर्क किस से स्थापित हुआ?
5. महाकवि कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का अनुवाद हिन्दी में किसने किया?
6. 'नीलदेवी' का रचनाकार कौन है?
7. कल्याणी, करुणालय, चंद्रगुप्त आदि किसके नाटक हैं?
8. सुदर्शन किस युग के प्रमुख नाटककार है?
9. भुवनेश्वर प्रसाद कृत, तांबे के कीड़े नाटक किस प्रकार की नाटक है?
10. आधे-अधूरे और आषाढ़ का एक दिन किसके नाटक हैं?

Answers / उत्तर

1. 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक
2. नट
3. आधुनिक युग में
4. अंग्रेजी से
5. राजा लक्ष्मण सिंह ने
6. भारतेन्दु
7. प्रसाद के

8. प्रसाद युग
9. आधुनिकता बोध का पहला नाटक है।
10. मोहन राकेश का

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी में नाटक का उद्भव और विकास के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. आधुनिक कालीन हिन्दी नाटकों का परिचय दीजिए।
3. प्रसाद युग में हिन्दी नाटकों का विकास हुआ। चर्चा कीजिए।
4. प्रसादोत्तर युग में भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन से परिचय मिलता है समर्थन कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी नाटक-उद्भव और विकास - दशरथ ओझा।
2. आधुनिक नाट्य विमर्श - जयदेव तनेजा।
3. प्रसाद का कथा साहित्य - गिरीश रस्तोगी।
4. आज की कला - प्रकाश गुप्त।
5. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच - नेमीचन्द्र जैन।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

सावित्री 2007 (विस्तृत अध्ययन के लिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कैलाश चंद्र के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- नाटक सावित्री का सारांश समझता है
- नाटक में चित्रित व्यंग्य समझता है
- महाभारत की सावित्री के समसामायिक स्वरूप को पहचानता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

कैलाश चंद्र एक प्रसिद्ध हिन्दी लेखक और नाटककार थे। कैलाश चंद्र की सबसे प्रसिद्ध रचना 'सावित्री' एक व्यंग्य प्रधान नाटक है, जो महाभारत की एक प्रसिद्ध कथा पर आधारित है। यह कई बार मंचित किया गया है।

कैलाश चंद्र को उनके लेखन के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार का यश भारती सम्मान भी मिला है। उनकी रचनाएँ आज भी हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

व्यंग्य प्रधान नाटक, यथार्थवाद और फैंटसी, जीव आगम-निर्गम कार्यालय, मृत्युलोक, घुटमुंडा सिपाही

Discussion / चर्चा

सावित्री 2007 (सारांश)

हिन्दी के आधुनिक नाटककार कैलाश चन्द्र जी द्वारा रचित एक व्यंग्य प्रधान नाटक है- 'सावित्री 2007'। इस नाटक में कैलाश जी ने एक साथ यथार्थवाद और फैंटसी का सफल मिश्रण किया है। सावित्री 2007 नाटक के तीन अंक है। पहले अंक में दो दृश्य है। दृश्य परिवेश की दृष्टि से और पात्रों के नाम और परिचय के कारण 'यमलोक' का परिचय मिलता है।

पहला अंक

यम लोक के एक दफ्तर के दृश्य से नाटक शुरू होता है। वहाँ टंगी बोर्ड से हमें मालूम पडता है कि वह - जीव आगम-निर्गम कार्यालय है। ऑफीस वक्त होने पर भी वहाँ कोई नौकर चाकर नहीं हैं। बाद में चपरासी और बाबू लोग एक-एक करके दिखाई पड़ते हैं। वहाँ होने वाले सारा कार्य - व्यापार आज के किसी भी सरकारी दफ्तर से मिलता-जुलता है। पाप-पुण्य का हिसाब लेना, पुनर्जन्म संबंधी आदि सभी मामलों में वहाँ अन्याय चल रहा है। वहाँ आनेवाले आदमी -1, आदमी-2, बूढा आदमी आदि की बातचीतों से हमें यह मालूम होता है।

दूसरा दृश्य उसी कार्यालय का - जीव-आगम का है। वहाँ दो यमदूत आते हैं। 'जीवराखन बाबू' उनके इंतज़ार में थे। मृत्युलोक से सत्यवान के प्राण को लेने केलिए

परवाना देता है। थैली और परवाना लेकर दोनों यमदूतों धरती जाते हैं।

दूसरा अंक

दूसरे अंक में केवल एक ही दृश्य है। दोनों यमदूत रात के समय धरती पहूँचते हैं। प्राण लेने केलिए कुछ अधिक समय था। इसलिए दोनों टहलते हैं। वहाँ से दोनों को पुलीस गिरफ्तार करके थाने ले जाते है।

तीसरा अंक

तीसरा अंक चार दृश्यों से संपन्न है। चारों दृश्य थाने के अंदर ही चलते हैं। पहले दृश्य में दोनों यमदूत लॉकअप में बंद पाते हैं। एक घुटमुंडा सिपाही भी वहाँ मौजूद है। वह भांग पीने में व्यस्त है। यमदूत के पूछने पर वह उन्हें व्यंग्य भी करते हैं। अंत में ध्यान मग्न होकर यमदूत 2 यमराज से अपनी स्थिति समझाती है।

दूसरे दृश्य में भी दोनों यमदूत लॉकअप में बंद है। 'सत्यवान' वहाँ प्रवेश करते हैं। वह सिपाही से दारोगा के बारे में पूछते हैं। फिर वह रपट लिखवाना चाहते हैं। उनकी चार शादियाँ हो चुकी हैं। इससे नाराज़ होकर उनकी पहली पत्नी आत्महत्या करने जा रही है। इसलिए वह थाने में रपट लिखवाने आया था।

तीसरे दृश्य में सत्यवान की पहली पत्नी राधा देवी भी थाने में आती हैं। उसके हाथ में जहर की शीशी है। सत्यवान से वह बातें करती है और बीचों-बीच ज़हर पीती है। वह फर्श पर गिर पड़ती है। यह देखकर सत्यवान भी कराहते हुए नीचे गिरता है। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था।

चौथे दृश्य में सत्यवान की चौथी पत्नी 'सावित्री' भी थाने में आती है। उचित वक्त पर सत्यवान प्राण त्याग कर देता है। यमदूत जीव को पकड़कर थैली में बाँधता है। सावित्री अपनी बातों में यमदूतों को फँसाना चाहती है। लेकिन तब 'यमराज' वहाँ पधारते हैं। राधा देवी को होश आने पर सिपाही उसे लॉकअप में बंद करता है। सावित्री यमराज को बातों में फँसाकर दो दिन केलिए सत्यवान का प्राण माँगता है। पहले यमराज अनसुनी करता है। लेकिन बाद में वह सावित्री को वर देता है कि इनकी कामना पूरी हो। सत्यवान के प्राण को दो दिन के लिए लौटा देकर यमराज और यमदूत वहाँ से जाते हैं। सत्यवान का प्राण शरीर में घुसता है। उन्हें होश आता है तब सावित्री का प्रेमी विवेक कुछ कागज़ों के साथ वहाँ पहूँचता है।

सावित्री उससे कागज लेकर सत्यवान के सामने फैला देती है। उनसे दस्तखत करने को कहती है। पूछने पर सावित्री कहती है कि, सत्यवान का वसीयतनामा है। जिसमें उनकी आधी जायदाद सावित्री के नाम लिख दिये हैं। राधा देवी इनकार करती है फिर भी सत्यवान को दस्तखत करना पड़ता है। कागज़ विवेक के हाथ में सौंपकर सावित्री सत्यवान के साथ चलती है। विवेक भी जाता है। राधा देवी अब भी लॉकअप में बंद हैं। घुटमुंडा सिपाही व्यंग्य करते हुए कहता है कि 'यह 2007 का सावित्री हैं, और वह पति और प्रेमी के साथ एक साथ ही चलती है।

पुराने ज़माने में भी सावित्री किसी भी तरह अपने पति के प्राणों की वापसी चाहती थी और आज भी चाहती थी। तब वह अपने होने का एहसास अपने पति के माध्यम से अनुभव करती थी, लेकिन आज उसे पति से अलग न केवल अपने स्वतंत्र अस्तित्व, पहचान, अतिरिक्त सत्ता की तलाश और निर्णय लेने की स्वतंत्रता की आवश्यकता है। नाटक के अंत में सावित्री के समसामायिक स्वरूप को आज के संदर्भ में उद्घाटित करने का प्रयास कैलाश जी करते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

कैलाश चन्द्र जी द्वारा रचित एक व्यंग्य प्रधान नाटक है - 'सावित्री 2007'। तीन अंकों में विभक्त प्रस्तुत नाटक दृश्य परिवेश की दृष्टि से 'यमलोक' का परिचय देता है। हास्य - व्यंग्य से भरपूर नाटक सत्यवान और सावित्री की कथा को नई परिवेश से दिखाया है। पुराने ज़माने में सावित्री किसी भी तरह अपने पति के प्राणों की वापसी चाहती थी। लेकिन 2007 का सावित्री पति और प्रेमी को एक साथ लेकर चलती है। यहाँ सावित्री के समसामायिक स्वरूप को आज के संदर्भ में उद्घाटि त किया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- साविन्नी 2007 नाटक फैंटसी और यथार्थवादी दोनों का मिश्रण है।
- पहले अंक की पृष्ठभूमि यमलोक की है
- यथार्थ और भ्रम साथ-साथ और अंततः यह यथार्थ अति यथार्थ में परिवर्तित हो जाता है।
- वास्तव में नाटक का कौशल उसके कथ्य से ज़्यादा शिल्प संरचना में है।
- मात्र 50 पृष्ठ का नाटक और उसमें भी तीन अंक और सात दृश्य अर्थात सबकुछ तेज़ी से घटित होता है।
- नाटक का 'चरमोत्कर्ष' और उसका 'अंत' सावित्री के समसामयिक स्वरूप को आज के संदर्भ में उद्घाटित करने का प्रयास करते हैं
- प्रस्तुत यथार्थवादी नाटक हास्य और व्यंग्य से भरपूर है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'सावित्री 2007' किस विधा की रचना है?
2. 'सावित्री 2007' नाटक किसकी रचना है?
3. कैलाश चन्द्र जी का व्यंग्य प्रधान नाटक कौन-सा है?
4. 'सावित्री 2007' नाटक में कितने अंक हैं?
5. कैलाश जी ने एक साथ यथार्थवाद और फैंटसी का सफल मिश्रण किस नाटक में किया है?
6. सत्यवान की चौथी पत्नी का नाम क्या है?
7. सत्यवान की पहली पत्नी का नाम क्या थी?
8. यमदूत किसके जीव को पकड़कर थैली में बाँधता है?
9. सावित्री को कौन वर देते हैं?
10. "यह 2007 का सावित्री हैं, और वह पति और प्रेमी के एक साथ ही चलती है।" यह किसका कथन है?

Answers / उत्तर

1. नाटक
2. कैलाश चन्द्र जी
3. 'सावित्री 2007'
4. तीन
5. सावित्री 2007
6. 'सावित्री'
7. राधा देवी
8. सत्यवान की
9. यमराज
10. घुटमुंडा सिपाही

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'सावित्री 2007' में चित्रित व्यंग्य पर चर्चा कीजिए?
2. सावित्री 2007 नाटक का सारांश लिखिए।
3. 'सावित्री 2007' में चित्रित समसामयिक विषय पर चर्चा कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ - डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

BLOCK - 05

हिन्दी निबंध साहित्य

इकाई 1

हिन्दी निबंध साहित्य - विकास क्रम

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी निबन्ध के इतिहास की रूपरेखा समझता है
- भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकारों के बारे में जानता है
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके युग से परिचित होता है
- रामचन्द्र शुक्ल तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्धों का मूल्यांकन करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

स्वतन्त्र एवं प्रतिष्ठित साहित्यिक विधा के रूप में 'निबन्ध' साहित्य का उदय हिन्दी के आधुनिक युग की देन है। आधुनिक काल में देश में राजनीतिक-सामाजिक स्थितियों में हलचल, मुद्रण के अभूतपूर्व प्रयोग और पत्र-पत्रिकाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार की स्थिति बनी। इनके बीच भारतेन्दु मण्डल के लेखकों ने पहली बार हिन्दी में निबन्ध विधा का प्रयोग किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को गम्भीर तथा सुविचारित स्वरूप प्रदान किया, तो आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने ललित निबन्धों के द्वारा इस विधा को नई ऊँचाई दी। आज निबन्ध का दायरा इतना व्यापक हो गया है कि ज्ञान विज्ञान के कई रूप इसके भीतर समाहित हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

निबन्ध साहित्य,भारतेन्दु मण्डल, हिन्दी प्रदीप, सरस्वती पत्रिका, ललित निबन्ध, व्यंग्यात्मक निबन्ध

Discussion / चर्चा

1) भारतेन्दु युग

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध के बारे में कहा था "यदि गद्य कवियों और लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव होता है।" 'निबन्ध' विधा का आरम्भ भारतेन्दु से ही हुआ। भारतेन्दु (सन् 1850-1885) की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी। वे मुख्यतः नाटककार थे, किन्तु समाज-सुधार, धर्म, राजनीति, देश-प्रेम, अध्यात्म, अतीत गौरव, आर्थिक दुर्दशा जैसे विषयों पर लिखकर उन्होंने निबन्ध को एक स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकार

बालकृष्ण भटट् (सन् 1845-1915) और प्रताप नारायण मिश्र (सन् 1854- 1894) भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार हैं। आचार्य शुक्ल के शब्दों में 'इन दोनों ने हिन्दी गद्य साहित्य में वही कार्य किया, जो अंग्रेज़ी गद्य साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया था।' भारतेन्दु मण्डल में सबसे समर्थ निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट थे। अपनी पत्रिका 'हिन्दी प्रदीप' के माध्यम से उन्होंने विविध विषयों पर निबन्ध लिखे। एक ओर उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर बाल विवाह, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, राजा और प्रजा, कृषकों की दुरवस्था, महिला स्वातंत्र्य

आदि का विवेचन किया और दूसरी ओर आँख, कान, नाक जैसे विषयों को भी अपने निबन्ध का प्रतिपाद्य बनाया। मुहावरेदार भाषा उनके निबन्धों की विशेषता है।

प्रताप नारायण मिश्र अपनी मनमौजी प्रकृति और विनोदप्रियता के लिए जाने जाते हैं। इसलिए उनकी व्यंग्यपूर्ण वक्रता का परिचय उनके निबन्धों में मिलता है। अपना 'ब्राह्मण' पत्र उन्होंने विविध विषयों पर निबन्ध लिखने के लिए निकाला था। घूरे का लत्ता बीनै, कनातन कडौल बाँधै, समझदार की मौत, बात, आप, मनोयोग, भौ जैसे शीर्षकों से ही उनके निबन्धों के विषय और शैली का अन्दाजा लगाया जा सकता है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि 'भारतेन्दु युग के निबन्धों में प्रत्येक लेखक के व्यक्तित्व की गहरी छाप मिलती है और सजीवता या जिन्दादिली इस युग के लेखकों का सामान्य गुण है।' निबन्ध वस्तुत; उन्नीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य की मुख्य विधा है।

2) द्विवेदी युग

महावीर प्रसाद द्विवेदी (सन् 1864-1938) ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया। द्विवेदी जी ने बेकन विचार रचनावली नाम से बेकन के निबन्धों का अनुवाद करके निबन्ध को गम्भीरता की ओर उन्मुख किया। स्वयं द्विवेदी जी के निबन्धों की संख्या लगभग तीन सौ है। उनके 'व्याकरण भाषा की बात', 'उत्तरी ध्रुव की यात्रा', 'साहित्य की महत्ता' आदि निबन्ध काफी चर्चित हुए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के समकालीन होते हुए भी बालमुकुन्द गुप्त (सन् 1865-1907) भारतेन्दु युग की याद दिलाने वाले निबन्धकार हैं। जिनके लिखे 'शिवशम्भू के चिट्ठे' अपनी व्यंग्यात्मक शैली, मुहावरेदार भाषा और तीखे राजनीतिक विचारों के लिए हिन्दी निबन्ध के इतिहास में अमर है। बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (सन् 1883-1920) इस युग के सबसे महत्त्वपूर्ण निबन्धकार हैं,। गुलेरी जी ने मनोवैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा के स्रोतों का अध्ययन पुरानी हिन्दी के निबन्धों में प्रस्तुत किया। गुलेरी जी के निबन्ध अपने सरस पाण्डित्य और मधुर व्यंग्य के लिए आज भी पठनीय बने हुए हैं।

सरदार पूर्ण सिंह (सन् 1889-1931) ने भी गुलेरी जी के समान ही बहुत कम निबन्ध लिखे, पर वे अपनी विलक्षण भाषा शैली के कारण हिन्दी निबन्ध साहित्य में अप्रतिम माने जाते हैं। उन्होंने कर्तव्य सम्बन्धी, निदान और चिकित्सा, समाज और कर्तव्य पालन, फिर निराशा क्यों आदि कई विषयों पर विचारात्मक और भावात्मक निबन्ध लिखे।

3) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके युग

विचार गाम्भीर्य और भाषिक प्रौढ़ता की दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (सन् 1884-1941) के निबंध संग्रह चिन्तामणि भाग 1, 2, 3 हिन्दी निबन्ध का सुमेरु है। भावों और मनोविकारों पर भारतेन्दु मण्डल के लेखकों ने भी लिखा है। आचार्य शुक्ल ने भी लोभ और प्रीति, श्रद्धा और भक्ति, उत्साह, करुणा, लज्जा और ग्लानि, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, भय जैसे निबन्धों में भाव और मनोविकारों पर प्रकाश डाला है, लेकिन दोनों के साहित्यिक स्तर में फर्क है। शुक्ल जी के निबन्धों की परिपक्वता दर्शाती है कि कुछ वर्षो में ही हिन्दी निबन्ध ने विकास यात्रा का अगला पड़ाव पार कर लिया। शुक्ल जी ने इन निबन्धों को अपनी अन्तर्यात्रा का प्रदेश कहा। यह यात्रा 'बुद्धि पर हृदय को साथ लेकर जारी रही'। इन निबन्धों में प्रधानता विषय की है, पर सर्वत्र निबन्धकार के व्यक्तित्व की गहरी छाप भी है।

महाराज कुमार रघुवीर सिंह ने 'शेष स्मृतियाँ' में भावात्मक शैली में मुगलों के वैभव-पराभव का अद्‌भुत चित्रण किया है। शिवपूजन सहाय, पाण्डे बेचन शर्मा 'उग्र' और निराला 'मतवाला मण्डल' के लेखक जाने जाते थे। शिवपूजन सहाय का निबंध 'कुछ', उग्र के निबंध 'व्यक्तिगत', 'बुढ़ापा', निराला के 'प्रबन्ध-प्रतिमा', 'चाबुक', 'चयन', 'रवीन्द्र कविता-कानन' तथा जयशंकर प्रसाद का निबंध 'काव्य कला' तथा 'अन्य निबन्ध' आदि इस युग के उत्कृष्ट कोटि के निबन्ध के उदाहरण हैं। इन निबन्धों में इस काल के लेखकों की निबन्ध कला का सुन्दर परिपाक दृश्यमान है।

4) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और उनके युग

स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (सन् 1907-1979) हैं। ललित निबन्ध का सर्वोत्कृष्ट रूप द्विवेदी जी के निबन्धों में ही दिखाई पड़ता है। इनके निबन्धों में पाण्डित्य का बहुत सहज रूप दिखाई देता है। वे इतिहास, पुराण और साहित्य के

गम्भीर विषयों पर लिखते रहे। उन विषयों को वे अपनी यायावरी कल्पना, अप्रासंगिक प्रासंगिकताओं, विषयान्तर, शब्दों और वाक्यों की काव्यमय अनुगूँज और लोकोक्तियों के मार्मिक प्रयोग से अनूठा बना देते थे। इसीलिए उनके निबन्धों में अध्ययन और सर्जन, पाण्डित्य और प्रतिभा, बौद्धिकता और हार्दिकता, शास्त्र और लोक का ऐसा संयोग हुआ है जो अन्यत्र दुर्लभ है। द्विवेदी जी के निबन्ध संग्रह हैं 'अशोक के फूल' (सन् 1948), 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'विचार प्रवाह और कुटज' आदि।

'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'आम फिर बौरा गए है', 'कुटज', 'देवदारु जैसे ललित निबन्धों द्वारा द्विवेदी जी ने हिन्दी निबन्ध को एक नया सांस्कृतिक आयाम प्रदान किया है। इन निबन्धों में द्विवेदी जी ने संस्कृति के किसी-न-किसी एक पक्ष का विवेचन किया है, अथवा अपने व्यक्तित्व की झलक दिखाई है।

इस काल के अन्य निबन्धकारों में सियाराम शरण गुप्त (झूठ सच), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (अतीत स्मृति, उत्सव), 'रामलाल पण्डित', शान्तिप्रिय द्विवेदी (कवि और काव्य साहित्यिकी), प्रभाकर माचवे (खरगोश के सींग) आदि उल्लेखनीय हैं। भारतीय स्त्री की मुक्ति को आधार बना कर लिखे गए निबन्धों में महादेवी वर्मा के निबन्ध संग्रह, 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (सन् 1942), उनके विचारात्मक गद्य संग्रह साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। जैनेन्द्र कुमार, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि इस काल के प्रमुख निबंधकार हैं।

उत्तरशती के निबन्धकारों में हरिशंकर परसाई ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई। उन्होंने अपने व्यंग्यात्मक निबन्धों जैसे 'सदाचार का ताविज़' (1967) 'शिकायत मुझे भी है' (1970) 'तब की बात और थी', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'बोलती रेखाएँ', 'तिरछी रेखाएँ', 'सुनो भाई साधौ', 'तुलसीदास चन्दन घिसे', 'हँसते हैं रोते हैं' तथा 'पाखंड का अध्यात्म' आदि के द्वारा समसामयिक राजनीतिक-सामाजिक विषयों पर व्यंग्य किया। उनके व्यंग्य की धार को हम विकलांग श्रद्धा का दौर की इन पंक्तियों में देख सकते हैं श्रद्धेय बन जाने की इस हल्की इच्छा के साथ ही मेरा डर बरकरार है। श्रद्धेय बनने का मतलब है 'नान परसन', 'अव्यक्ति' हो जाना। श्रद्धेय वह है जो चीजों को हो जाने दे। किसी चीज का विरोध न करें। 'परसाई जी की परम्परा में श्रीलाल शुक्ल ने ऐसी मौलिक व्यंग्य भाषा निर्मित की जिसमें हास्य और व्यंग्य दोनों का पुट है उनके निबन्ध संग्रह', 'अंगद का पाँव' (सन् 1958), 'यहाँ से वहाँ' (सन् 1970) कुछ जमीन पर कुछ हवा में, आओ बैठ ले कुछ देर आदि में समाज की मूल्यहीनता पर व्यंग्य किया गया है। आगे चलकर शरद जोशी ने भी अनेक व्यंग्यात्मक निबन्धों की रचना की।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की परम्परा में ललित निबन्ध लिखने वालों में विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह तथा कुबेरनाथ राय प्रमुख हैं। कुबेरनाथ राय ने प्रिया नीलकण्ठी (सन् 1968), रस आखेटक, वाणी का क्षीर सागर, अंधकार में अग्निशिखा तथा आराम की नाव में भारतीय संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। शिवप्रसाद सिंह ने शिखरों के सेतु (सन् 1962) कस्तूरी मृग, किस-किस का नमन करूँ, कहूँ कुछ कहा न जाय आदि निबन्ध संग्रहों में मानवीय मूल्यों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। विवेकी राय के निबन्ध संग्रह किसान और गाँव पर केन्द्रित हैं, तो धर्मवीर भारती के निबन्धों में विविधता दिखाई देती है। एक ओर ठेले पर हिमालय में हास्य व्यंग्य की झलक दिखाई देती है, तो दूसरी ओर पश्यन्ती (सन् 1969), कहनी-अकहनी, कुछ चेहरे कुछ चिन्तन तथा शाब्दिता जैसे निबंधों से उनकी भावप्रवण शैली का प्रमाण मिलता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के बाद ललित निबन्धों में पं. विद्यानिवास मिश्र ने सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की। उनके लगभग दो दर्जन निबन्ध संग्रह प्रमुख हैं। गजानन माधव मुक्तिबोध, निर्मल वर्मा, कुँवरनारायण, नन्दकिशोर आचार्य, रमेशचन्द्र शाह, अशोक वाजपेयी, विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रभाकर श्रोत्रिय, विजय मोहन सिंह, ज्ञान चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं।

Critical Overview / अवलोकन

भारतेन्दु युग ने हिन्दी निबंध साहित्य को नई दिशा दी, जहाँ नाटककार भारतेन्दु ने समाज-सुधार, राजनीति और धर्म पर गहरे विचार प्रस्तुत किए। उनकी पत्रिका। हिन्दी प्रदीप ने निबंध लेखन को स्वतंत्र विधा के रूप में

स्थापित किया। प्रताप नारायण मिश्र और वालमुकुंद गुप्त ने व्यंग्यात्मक शैली में गहरी सामाजिक टिप्पणियाँ कीं। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका से गम्भीर विचारों को प्रकट किया, जिससे हिन्दी गद्य की प्रौढ़ता बढ़ी।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'चिन्तामणि' में भाव और मनोविकारों पर गहन विचार किया, जबकि आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने ललित निबंधों में इतिहास और संस्कृति पर गहरे चिंतन के साथ लेखन किया। स्वतंत्रता के बाद, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल और शरद जोशी जैसे लेखकों ने व्यंग्यात्मक शैली में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर निबंध लिखे। इसके बाद, विद्यानिवास मिश्र, गजानन माधव मुक्तिबोध और अन्य लेखकों ने निबंध विधा में अपनी पहचान बनाई। इस प्रकार, हिन्दी निबंध साहित्य एक महत्वपूर्ण धारा बनकर आज भी जीवित है।

Recap / पुनरावृत्ति

- 'निबन्ध' साहित्य हिन्दी के आधुनिक युग की देन है।
- भारतेन्दु मण्डल के लेखकों ने पहली बार हिन्दी में निबन्ध विधा का प्रयोग किया।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को एक स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया।
- भावों और मनोविकारों पर भारतेन्दु मण्डल के लेखकों ने भी लिखा है।
- ललित निबन्ध का सर्वोत्कृष्ट रूप द्विवेदी जी के निबन्धों में ही दिखाई पड़ता है।
- हरिशंकर परसाई ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई।
- विवेकी राय के निबन्ध संग्रह किसान और गाँव पर केन्द्रित हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निबन्ध विधा का आरम्भ किस युग से हुआ?
2. भारतेन्दु युग के निबन्धों में प्रत्येक लेखक के व्यक्तित्व की गहरी छाप मिलती है- यह किसका कथन है?
3. भारतेन्दु मण्डल में सबसे समर्थ निबन्धकार कौन थे?
4. 'शिवशम्भू के चिट्ठे' के रचनाकार कौन हैं?
5. बेकन के निबन्धों का अनुवाद किसने किया?
6. 'बेकन विचार रचनावली' किसकी रचना है?
7. उत्तरशती के व्यंग्य निबन्धकार कौन हैं?
8. 'सदाचार का तावीज' किस विधा की रचना है?
9. द्विवेदी युग के सृष्टा द्विवेदी का पूरा नाम क्या है?
10. चिंतामणि किसकी रचना है?

Answers / उत्तर

1. भारतेन्दु युग से
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का
3. बालकृष्ण भट्ट
4. बालमुकुन्द गुप्त
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी
7. हरिशंकर परसाई
8. व्यंग्य कहानी
9. महावीर प्रसाद द्विवेदी
10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी में निबन्ध का आरंभ और विकास पर एक आलेख तैयार कीजिए।
2. सिनेमा के आगमन से नाटक की क्षति शुरु हुई यह प्रस्ताव कहाँ तक संगत है? समझाइए।
3. महावीरप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध साहित्य पर आलेख तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ - डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

इकाई 2

नाखून क्यों बढ़ते हैं? - हजारी प्रसाद द्विवेदी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- निबंधकार के रूप में हजारी प्रसाद द्विवेदी से परिचित होता है
- हजारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जानता है
- 'नाखून क्यों बढ़ते हैं'? निबंध का सारांश समझता है
- 'नाखून क्यों बढ़ते हैं'? निबंध की विशेषताएं समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के आदरणीय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। दर्शन, इतिहास और उच्च आदर्श से समृद्ध उनका निबंध गहन पांडित्य के परिमाण हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर द्विवेदी का अपार ज्ञान था। महान दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक लेखक के रूप में उनकी बड़ी ख्याति है। हिन्दी के ललित निबंध क्षेत्र में द्विवेदी ने महत्वपूर्ण योगदान अर्पित किया है। डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में अपने व्यक्तित्व की छाप डाली है। इतिहासकार, आलोचक, निबंधकार, उपन्यासकार, आदरणीय अध्यापक आदि विविध क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी सदा स्मरणीय हैं। उनकी भाषा शुद्ध, प्रौढ़ गंभीर और परिमार्जित खड़ीबोली है। आचार्य द्विवेदी आधुनिक हिन्दी के मार्गदर्शकों में एक के रूप में सदैव स्मरणीय हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

श्रेष्ठ निबंधकार, आलोकपर्व, अशोक के फूल, शांतिनिकेतन, विश्वविद्यालय

Discussion / चर्चा

लेखक परिचय

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखा हुआ ललित निबंध है। द्विवेदी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबंधकारों में एक है। उनका जन्म 19 अगस्त 1907 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। आप हिन्दी के श्रेष्ठ निबंधकार, आलोचक, उपन्यासकार आदि हैं। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का यथार्थ का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था। वे 1930 से कोलकत्ता के शांति निकेतन में हिन्दी अध्यापक रहे थे। सन् 1950 में उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष पद स्वीकार किया। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के 'आलोक पर्व' शीर्षक निबंध संग्रह को 1973 में केंद्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है।

द्विवेदी को राष्ट्र 1957 में पद्मभूषण उपाधि दे कर सम्मानित किया है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'अनामदास का पोथा', 'चारु चन्द्रलेखा' आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। आपका निधन 19 मई 1979 को दिल्ली

में हुआ था।

द्विवेदीजी की प्रमुख रचनाएँ हैं - 'अशोक के फूल', 'कल्पलता', 'विचार और वितर्क', 'कुटज', 'विचार-प्रवाह', 'आलोक पर्व', 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' (निबंध संग्रह); 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचंद्रलेखा', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा' (उपन्यास); 'सूर साहित्य', 'कबीर', 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप', 'नाथ संप्रदाय', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास' (आलोचना-साहित्येतिहास); 'संदेशरासक', 'पृथ्वीराजरासो', 'नाथ-सिद्धों की बानियाँ' (ग्रंथ संपादन)ः 'विश्व भारती' (शांति निकेतन) पत्रिका का संपादन। द्विवेदीजी को आलोकपर्व' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' सम्मान एवं लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा डी' लिट् की उपाधि मिली। वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय, शांति निकेतन विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय आदि में प्रोफेसर एवं प्रशासनिक पदों पर रहे।

नाखून क्यों बढ़ते हैं? (सारांश)

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं सोच में पड़ गया, हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं, बच्चे कुछ दिन तक अगर उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अकसर उन्हें काँटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भांति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर।

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंदियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेड की डालें काम में लाने लगा। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाये। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। पलीतेवाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को किस कीचड़ भरे घाट पर घसीटा है, यह सबको मालूम है। नखधर मनुष्य अब एटम बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे थे।

कुछ हजार साल पहले मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरू किया था। वात्स्यायन के कामसूत्र से पता चलता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले का भारतवासी नाखुनों को जम के संवारता था। उनके काटने की कला काफी मनोरंजक बताई गई है। त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार दंतुल आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलंक्तक (आलता) से यत्नपूर्वक रगड़कर लाल और चिकना बनाया जाता था। गौड़ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को, पसंद करते थे और दक्षिणात्य लोग छोटे नखों को। लेकिन समस्त अधोगामिनी वृत्तियों को और नीचे खींचनेवाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो भूल नहीं सकता।

15 अगस्त को जब अंग्रेजी भाषा के पत्र 'इण्डिपेण्डेन्स की घोषणा कर रहे थे, देशी भाषा के पत्र 'स्वाधीनता दिवस की चर्चा कर रहे थे। इण्डिपेण्डेन्स का अर्थ है स्वाधीनता 'शब्द का - अर्थ है अपने ही अधीन' रहना। उसने अपनी आजादी के जितने भी नामकरण किए, स्वतंत्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता-उन सबमें 'स्व' का बंधन अवश्य रखा। अपने-आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है।

मनुष्य झगड़े-डंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। यह मनुष्य मात्र का धर्म है। महाभारत में इसीलिए निर्वैर भाव, सत्य और अक्रोध को सब वर्गों का सामान्य धर्म कहा है -

एतद्धि विततं श्रेष्ठं सर्वभूतेषु भारत!

निर्वैरता महाराज सत्यमक्रोध एव च।

अन्यत्र इसमें निरंतर दानशीलता को भी गिना गया है।

गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है।

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखुनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मरणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। .

नाखुनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस 'स्व'-निर्धारित आत्म-बंधन का पुल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाता है। कमबख्त नाखून बढ़ते हैं तो बढ़े, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

Critical Overview / अवलोकन

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' एक साधारण जैविक प्रश्न से मानवता और संस्कृति के गहरे पहलुओं को जोड़ता है। वे बताते हैं कि नाखून पहले अस्तित्व की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण थे, लेकिन सभ्यता के विकास के साथ इनकी आवश्यकता घट गई, फिर भी उनका बढ़ना आदिम प्रवृत्तियों और मनुष्यत्व के विकास का प्रतीक है। द्विवेदी नाखूनों के सौंदर्यीकरण और उनके सामाजिक महत्व को भी रेखांकित करते हैं, जो समाज में व्यक्तित्व की पहचान बन गए थे।

वे यह विचार भी प्रस्तुत करते हैं कि जैसे मनुष्य ने अपनी पूँछ खो दी, वैसे ही भविष्य में नाखूनों का बढ़ना भी बंद हो सकता है, जो आत्मनियंत्रण और मानवता के विकास का संकेत होगा। निबंध में द्विवेदी का दृष्टिकोण दार्शनिक और विचारशील है, जो जीवन और सभ्यता के विकास पर सोचने को प्रेरित करता है। यह निबंध मानवता के निरंतर सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- नाखून क्यों बढ़ते हैं - यह सोचने को हम बाध्य है।
- लेखक के बेटी एक दिन पूछ बैठी कि नाखून क्यों बढ़ते हैं?
- कभी-कभी बच्चों के सवाल बड़ों को चक्कर में डाल देता है।
- हर तीसरे दिन नाखून बढ़ते हैं।
- नाखून का बढ़ाव हम नहीं जानते हैं, यह अनजाने में स्वाभाविक होता है।
- नाखून के बढ़ाव पर बच्चे को माँ-बाप डाँटते हैं।
- आरंभिक काल में नाखून के समान दाँत भी मनुष्य का शस्त्र रहे थे।
- आदिम मनुष्य नाखून, दाँत, पत्थर, डालों, हड्डियों को हथियार बनाये रखे थे।
- नाखून सैकड़ों वर्ष निशस्त्र मानव के अस्त्र रहे थे।
- पुराने ज़माने में मनुष्य के पास हड्डियों से बनाये कई उपकरण होते थे।
- विकास के अनुसार मनुष्य ने नाखून, पत्थर, काँटे और धातु की चीज़ों से हथियार बनायी।
- आर्यों ने अस्त्र-शस्त्रों द्वारा अधिकार जमा लिया था।
- नाखून शरीर के निर्दोष अंग है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली से लिए गए प्रमुख निबंध है 'नाखून क्यों बढ़ते हैं'।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नाखून क्यों बढ़ते हैं - नामक निबंध का लेखक कौन है?
2. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी कौन थे?
3. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कहाँ हुआ था?
4. आलोक पर्व किसकी रचना है?
5. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी को किस रचना पर केंद्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है?
6. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का निधन कब हुआ?
7. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किसका उपन्यास है?
8. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी को कब पद्मभूषण उपाधि मिली है?
9. हिन्दी साहित्य की भूमिका - के लेखक कौन हैं?
10. अनामदास का पाथा - किस विधा का ग्रंथ है?

Answers / उत्तर

1. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
2. बहुमुखी प्रतिभा संपन्न हिन्दी साहित्यकार
3. उत्तर प्रदेश में
4. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के
5. आलोक पर्व निबंध संग्रह को
6. 19 मई 1979 को
7. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का
8. 1957 में
9. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
10. उपन्यास

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी निबंध क्षेत्र में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान निर्धारित कीजिए।
2. नाखून क्यों बढ़ते हैं - नामक ललित निबंध का मूल्यांकन कीजिए।
3. नाखून बढ़ाने और काटने के गुण-दोषों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
4. नाखून क्यों बढ़ते हैं नामक निबंध का सारांश लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कल्पलता - डॉ.हज़ारी प्रसाद द्विवेदी।
2. हिन्दी आलोचना की बीसवीं शती - डॉ.निर्मला जैन।
3. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि - चन्द्रदेव यादव।
4. नया साहित्य-नये प्रश्न - डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी।
5. हिन्दी साहित्य, युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ.शिवकुमार शर्मा।

BLOCK - 06

अन्य गद्य विधाएँ

SGOU

इकाई 1

'भोलाराम का जीव' हरिशंकर परसाई (व्यंग्य)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- व्यंग्य-लेखक हरिशंकर परसाई से परिचित होता है
- हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व समझता है
- 'भोलाराम का जीव' कहानी का सारांश जानता है
- रिश्वतखोरी के विरुद्ध परसाईजी का व्यंग्यात्मक स्वर समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हरिशंकर परसाई का जन्म २२ अगस्त, सन् १९२४ को मध्य प्रदेश में ग्राम जमानी (इटारसी) में हुआ था। नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. करने के उपरान्त इन्होंने आरम्भ में अध्यापन-कार्य को आजीविका का साधन बनाया। किन्तु, अध्यापन और लेखन को साथ-साथ निभाते न देख कर नौकरी छोड़ दी। कुछ वर्ष तक इन्होंने जबलपुर से मासिक पत्रिका 'वसुधा' का सम्पादन-प्रकाशन किया, किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण उसके प्रकाशन को भी स्थगित कर देना पड़ा। अब साहित्य-सर्जन ही इनका ध्येय था, और वही इनकी आजीविका।

व्यक्ति और समाज के स्वस्थ विकास में अवरोधक परिस्थितियों का व्यंग्यात्मक निरूपण परसाईजी के निबन्धों की अन्यतम विशेषता है। ये व्यंग्य को मात्र मनोरंजन के लिए ही आवश्यक नहीं मानते, अपितु अपने अभिप्राय को पाठक के मर्म तक पहुँचाने का विशिष्ट साधन समझते हैं। ये अपने मन की बात को जितनी सहजता के साथ कहते हैं उतनी ही सहजता से दूसरों के बारे में भी अपना मत व्यक्त करते हैं। इनके व्यंग्य-लेखन में कथात्मक सहजता का विशेष योगदान है।

मध्य प्रदेश सरकार ने लेखन पर उन्हें सम्मानित किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'हँसते हैं: रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'भोलाराम का जीव' (कहानी संग्रह) 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल' (उपन्यास) 'तिरछी रेखाएँ' (संस्मरण) 'अपनी-अपनी बीमारी', 'प्रेमचन्द के फटे जूते', 'माटी कहे कुम्हार से', 'काग भगोड़ा' आदि (लेख)।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बाण, व्यंग्यात्मक ढंग, जीव गायब होना, दरख्वास्त भेजना

Discussion / चर्चा

सारांश

प्रस्तुत पाठ या व्यंग्य लेख भोलाराम का जीव, लेखक हरिशंकर परसाई जी के द्वारा लिखित है। वास्तव में देखा जाए तो ज्यादातर सरकारी अधिकारी रिश्वत लेने की लिस्ट में शामिल होते हैं। कभी-कभी लोग सरकारी दफ्तर का चक्कर लगाते-लगाते मृत्यु को प्राप्त कर जाते हैं, मगर उनका काम नहीं बनता। इन्हीं भ्रष्टाचार पर व्यंग्यात्मक बाण चलाते हुए लेखक ने यह कहानी लिखी है। यदि इस कहानी के दूसरे पक्ष की बात करें तो इसमें भोलाराम नामक व्यक्ति के लगातार पाँच वर्षों तक पेंशन हेतु संघर्ष करने का मार्मिक चित्रण है। प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार किस प्रकार पनप रहा है, इसका व्यंग्य शैली में वर्णन किया गया है। प्रस्तुत व्यंग्य लेख के अनुसार, धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य लोगों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक भेजते आ रहे थे। पर सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर देख रहे थे। परन्तु, कोई गलती नजर नहीं आ रही थी। तभी वे धर्मराज को संबोधित करते हुए बोले - महाराज! रिकॉर्ड सब ठीक है, भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागा और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा। इतने में धर्मराज ने कहा - और यह दूत कहाँ है? जवाब में चित्रगुप्त बोलते हैं - महाराज, वह भी लापता है। दोनों की बातें चल ही रही थी कि यमदूत अन्दर प्रवेश करता है, जिसे देखते ही चित्रगुप्त बोल उठे - अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है? तभी जवाब में यमदूत हाथ जोड़ते हुए बोलता है - दयानिधान, आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। भोलाराम के देह को त्यागते ही मैंने जीव को पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरंभ की। किन्तु वह जीव मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उस जीव का कहीं पता नहीं चला। यमदूत की बात सुनकर धर्मराज बहुत गुस्सा हुए और बोले - मूर्ख ! जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया। यमदूत अपनी गलती पर बहुत शर्मिंदा हुआ। तभी चित्रगुप्त ने कहा - महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का कारोबार बहुत चल रहा है। लोग दोस्तों को कुछ भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी किसी विरोधी ने मरने के बाद दुर्गति करने के लिए तो नहीं उड़ा दिया? इतने में धर्मराज ने चित्रगुप्त की ओर देखते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से कहा - तुम्हारा भी रिटायर होने की उम्र आ गई, भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना? इतने में नारद मुनि भी वहाँ पर आ गए और धर्मराज को चिंतित देखकर उनसे कारण पूछे तो धर्मराज ने उत्तर दिया - भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई, जब यह दूत उसके जीव को ला रहा था तो वह इसे रास्ते में चकमा देकर भाग निकला। नारद ने पूछा - उस पर इनकम टैक्स बकाया तो नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो। इस पर चित्रगुप्त ने कहा कि इनकम होती तो न टैक्स होता, भूखमरा था। तभी नारद बोले कि मुझे उसका नाम, पता बताइए, मैं पृथ्वी पर जाता हूँ। तत्पश्चात, चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया - उसका नाम भोलाराम था, जबलपुर शहर में घमापुर मोहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार साथ रहता था, उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। लगभग साठ साल की उम्र थी उसकी। सरकारी नौकरी में था, जो पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। जब मकान का किराया वर्ष भर से नहीं चुका पाया तो मकान मालिक उसे निकालना चाहता था। जब तक भोलाराम ही संसार को छोड़कर चल बसा। तलाश के सिलसिले में नारद बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। तब नारद पचीस-तीस बाबुओं और अफ़सरों के पास घूम आए तब एक चपरासी ने कहा - महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए। आप साल भर भी यहाँ का चक्कर लगाते रहें तो भी काम नहीं होगा। आप सीधे बड़े साहब से मिलिए, उन्हें खुश कर दिया तो अभी तुरंत आपका काम हो जाएगा। जब नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचा तो साहब बहुत नाराज़ होकर कहने लगे - इसे कोई मंदिर-वंदिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आए! चिट क्यों नहीं भेजी? जवाब में नारद ने बोला - आपका चपरासी सो रहा है। तभी साहब ने रौब

से पूछा - क्या काम है? इतने में नारद ने भोलाराम का पेंशन-केस के बारे में बतलाया। तभी साहब बोले - आप हैं वैरागी, दफ्तरों के रीति-रिवाज़ नहीं जानते। यहाँ पर दान-पुण्य भी करना पड़ता है। साहब का इशारा सीधे-सीधे रिश्वत की गड्डियों से था। बल्कि बदले में जब साहब ने नारद की वीणा की मांग की तो उन्हें अपना वीणा देते हुए बोले - यह लीजिए, अब जरा जल्दी भोलाराम की पेंशन का आर्डर निकाल दीजिए। नारद की बात सुनकर साहब ख़ुश हो गए, नारद को कुर्सी दी और चपरासी को बुलवाया। चपरासी को फाइल लाने को कहा। कुछ ही देर में चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागज़ात भी थे। साहब ने फाइल का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा - क्या नाम बताया साधुजी आपने? नारद ने जवाब में बोला - भोलाराम। तभी अचानक फाइल में से आवाज़ आई - कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का आर्डर आ गया? आवाज़ सुनते ही नारद चौंके, लेकिन तुरंत वे मामले को समझ गए और बोले - भोलाराम ! तुम क्या भोलाराम का जीव हो? तभी आवाज़ आई - हाँ। नारद ने भोलाराम को समझाते हुए कहा - मैं नारद हूँ, तुम्हें लेने आया हूँ, चलो तुम्हारा स्वर्ग में इंतज़ार हो रहा है। तभी आवाज़ आई - मुझे नहीं जाना, मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं इसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता।

Critical Overview / अवलोकन

हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' नामक कहानी एक व्यंग्य प्रधान कहानी है। इस कहानी में लेखक ने आधुनिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी पर कटाक्ष और तीखा व्यंग किया है। आजकल सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि बिना रिश्वत दिए कोई काम नहीं होता है।लेखक सरकारी कार्यालयों में फैली इस अव्यवस्था, अत्याचार और रिश्वतखोरी के कारणों के प्रति पाठकों का ध्यान खीचने में समर्थ हुआ है। सरकारी कार्यालयों में छोटे-छोटे काम भी लम्बे समय तक लटकते रहते हैं। यह कर्मचारियों के ढीलेपन का सबूत है। सरकारी दफ्तरों में यदि कोई पहुँच जाते तो चपरासी से लेकर बाबू फिर बड़े बाबू फिर अफसर, फिर साहब के चक्रव्यूह में फँस जाता है। छोटे से लेकर बड़ा साहब तक जानता है कि बिना रिश्वत के किसी का काम नहीं होता है। सरकारी व्यवस्था एक यंत्र की तरह है उसका हर पुर्जा बिना तेल-रिश्वत-लिए-नहीं चलता है। हर व्यक्ति अवसर का लाभ उठाना चाहता है। भोलाराम का जीव कहानी को लेखक ने पौराणिक कथा का रूप दिया है ताकि अपनी बात को हास्य और व्यंग के द्वारा समाज तक रख सके।

Recap / पुनरावृत्ति

- व्यंग्यात्मक निरूपण परसाईजी के निबन्धों की विशेषता है।
- ज्यादातर सरकारी अधिकारी रिश्वत लेने की लिस्ट में शामिल होते हैं।
- इसमें भोलाराम नामक व्यक्ति के लगातार पांच वर्षों तक पेंशन हेतु संघर्ष करने का मार्मिक चित्रण है।
- भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागा।
- वह यमदूत के चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया।
- नारदजी पृथ्वी पर आये और तलाश के सिलसिले में कई बाबुओं से मिले।
- पेंशन की दफ्तर में साहब ने नारद की वीणा रिश्वत के रूप में मांगा।
- पेंशन के दरख्वास्तों में अटका हुआ भोलाराम का जीव पाया।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हरिशंकर परसाई का जन्म कहाँ हुआ था?
2. हरिशंकर परसाई ने जबलपुर से कौन-सी मासिक पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन किया?
3. 'रानी नागफनी की कहानी' किस प्रकार की रचना है?
4. हरिशंकर परसाई की संस्मरण का नाम लिखिए।
5. परसाईजी के निबन्धों की विशेषता क्या है?
6. 'ज्वाला और जल' किसकी रचना है?
7. 'भोलाराम का जीव' किस प्रकार की रचना है?
8. भोलाराम कौन थे?
9. पेंशन के दफ्तर में साहब ने रिश्वत के रूप में क्या माँगा?
10. भोलाराम की आवाज़ कहाँ से आई?

Answers / उत्तर

1. मध्य प्रदेश में
2. 'वसुधा'
3. उपन्यास
4. 'तिरछी रेखाएँ'
5. व्यंग्यात्मक निरूपण
6. हरिशंकर परसाई की
7. व्यंग्य कहानी
8. पाँच साल पहले रिटायर हुए एक सरकारी नौकर था
9. नारद की वीणा
10. पेंशन की फाइल में से

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. यहाँ पर दान-पुण्य भी करना पड़ता है। 'भोलाराम का जीव' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिये।
2. 'भोलाराम का जीव' कहानी का सारांश लिखिए।
3. भ्रष्टाचार पर व्यंग्यात्मक बाण चलाने में परसाईजी सिद्ध हस्त हैं - स्पष्ट कीजिए।
4. हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामचंद्र शुक्ल।
5. कहानी स्वरूप और संवेदना - राजेन्द्र यादव।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन - डॉ. सुरिंदरकौर गौड।
7. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति - डॉ. हरदयाल।
8. साहित्य विधाएँ - डॉ. शशिभूषण सिंघल।
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह।

SGOU

इकाई 2

‘चीनी भाई’ - महादेवी वर्मा (रेखाचित्र)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- महादेवी वर्मा से परिचित होता है
- महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जानता है
- ‘चीनी भाई’ रेखाचित्र समझता है
- ‘चीनी भाई’ मर्मस्पर्शी रेखाचित्र की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

‘आधुनिक युग की मीरा’ कही जाने वाली महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद 1907 में होली के दिन हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई और एम. ए. उन्होंने संस्कृत में प्रयाग विश्वविद्यालय से किया। बचपन से ही चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला की ओर उन्मुख महादेवी विद्यार्थी जीवन से ही काव्य प्रतिष्ठा पाने लगी थीं। वह बाद के वर्षों में लंबे समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रहीं। वह इलाहाबाद से प्रकाशित ‘चाँद’ मासिक पत्रिका की संपादिका थीं और प्रयाग में ‘साहित्यकार संसद’ नामक संस्था की स्थापना की थी।

‘निराला वैशिष्ट्य’ की स्वामिनी महादेवी वर्मा छायावाद का चौथा स्तंभ भी कही जाती हैं। प्रणय एवं वेदनानुभूति, जड़ चेतन का एकात्म्य भाव, सौंदर्यानुभूति, मूल्य चेतना, रहस्यात्मकता उनकी मुख्य काव्य-वस्तु है। वह प्रधानतः गीति कवयित्री हैं। उनके काव्य में परंपरा और मौलिकता का अद्वितीय समन्वय नज़र आता है। शब्द-निरूपण, वर्ण-विन्यास, नाद-सौंदर्य और उक्ति-सौंदर्य-सभी दृष्टियों से वह भाषा पर सहज अधिकार रखती हैं। उन्होंने अपने काव्य में प्रतीकात्मक संकेत-भाषा का प्रयोग किया है। उनके संबंध में कहा गया है कि छायावाद ने उन्हें जन्म दिया था और उन्होंने छायावाद को जीवन दिया।

उन्होंने कविताओं के साथ ही रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, डायरी आदि गद्य विधाओं में भी योगदान दिया है। ‘नीहार’, ‘रश्मि’, ‘नीरजा’, ‘सांध्य गीत’, ‘यामा’, ‘दीपशिखा’, ‘संधिनी’, ‘प्रथम आयाम’, ‘सप्तपर्णा’, ‘अग्निरेखा’ उनके काव्य-संग्रह हैं। रेखाचित्रों का संकलन ‘अतीत के चलचित्र’ और ‘स्मृति की रेखाएँ’ में किया गया है। ‘श्रृंखला की कड़ियाँ’, ‘विवेचनात्मक गद्य’, ‘साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध’, ‘संकल्पिता’, ‘हिमालय’, ‘क्षणदा’ उनके निबंधों का संकलन है।

वह साहित्य अकादमी की सदस्यता प्राप्त करने वाली पहली लेखिका थीं। भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया। उन्हें ‘यामा’ के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उनके सम्मान में जयशंकर प्रसाद के साथ युगल डाक टिकट भी जारी किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रेखाचित्र, फेरीवाले की कहानी, नाक-नक्शा व वेषभूषा, कायापालट, ईमानदार बने रहना

Discussion / चर्चा

सारांश

लेखिका महादेवी वर्मा ने चीनी फेरीवाला नामक रेखाचित्र के माध्यम से एक ऐसे बच्चे के रूप रंग, नाक-नक्शा व वेषभूषा आदि का उल्लेख करती है, जो अपनी अजीविका के लिए विषम परिस्थितियों से जूझते हुए घर-घर जाकर अपने सामान को बेचता है। वह लेखिका के द्वार पर पहुँचकर मइया, माता, जीजी, दिदिया, बिटिया आदि ऐसे संबोधनों का प्रयोग करता है जो लेखिका को प्रिय हैं। इन्हीं से प्रभावित होकर लेखिका उसे अपने द्वार से वापस नहीं जाने देती है। पहले तो लेखिका विदेशी वस्तुओं को देखकर विचलित हो जाती है किंतु बच्चे का यह जवाब कि हम क्या फारन हैं? हम तो चैना से आता है। जो लेखिका को अपने पड़ोसी होने का बोध करा देता है। इससे भावुक होकर जब लेखिका उससे भाई का संबंध जोड़ देती है। तभी लेखिका को याद आता है कि बचपन में उसे उसकी छोटी आँखों के कारण चीनी कहकर पुकारा जाता था। इसके बाद स्थितियाँ एक नई करवट ले लेती हैं। अब लेखिका न चाहते हुए भी एक मेजपोश खरीद लेती है।

इसके पश्चात यह सिलसिला लगातार चल निकलता है। अगले दिन वह लेखिका के लिए ऊदी रंग के डोरे भरे रूमाल को लेखिका के सामने रख देता है। इनमें भर फूलों से लेखिका चीनी नारी की कोमल उँगलियों की कलात्मकता तथा उनके जीवन के अभाव की करुण कहानी को महसूस करती है।

इस फेरीवाले की कहानी भी बड़ी ही मर्म स्पर्शी है। जिसे सुनाने के लिए वह बड़ा ही व्याकुल रहता है। इस वक्त उसे इस बात की बिलकुल भी परवाह नहीं रहती कि उसकी भाषा को कोई समझ पा रहा है या नहीं। वह बताता है कि उसकी माँ उसके जन्म लेते ही इसका सारा बोझ इसकी सात साल की बहन पर छोड़कर चली गई। पिता ने दूसरी शादी कर ली। इसी के साथ इन मातृहीनों की करुण कहानी आरंभ होती। अभी वह पाँच साल का ही हुआ था कि एक दुर्घटना में उसके पिता भी इस संसार से चल बसे। इसके पश्चात वह देखता है कि उसकी किशोर बहन के समक्ष विमाता द्वारा रखे गए प्रस्ताव को लेकर जब वैमनस्य बढ़ता था तो इसका बदला उससे न लेकर उसके अबोध भाई को कष्ट देकर चुकाया जाता था। उसकी बहन आस-पड़ोस से माँग- माँगकर अपना व अपने भाई का पेट भरने लगी। एक रात वह देखता है कि उसकी विमाता बहन की मैली कुचैली देह का काया पलट करने में लगी हुई है। तत्पश्चात उसे लेकर अंधकार में खो जाती है। और जब प्रातः आँख खुली तो बहन गठरी की तरह भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ कर रही थी। उस दिन से उसे अच्छा भोजन, कपड़े व खिलौने मिलने लगे।

बहन का संध्या होते ही कायापलट, फिर उसका आधी रात को भारी पैरों लौटना तत्पश्चात विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह बिछौने से उछलकर उसके हाथों से बटुवा छीन लेना आदि क्रम चलने लगा। एक रात जब बहन घर नहीं लौटी तो वह बहन की खोज में घर से निकल पड़ता है। जगह-जगह खोजने के बावजूद उसे बहन तो नहीं मिली किन्तु स्वयं वह गिरहकटों (जेबकतरों) के गिरोह के हाथ लग गया। यहाँ इसे जेबकतरने के सभी गुण सिखाए गए। इस दल में बर्मी, चीनी और स्यामी आदि सभी शामिल थे। जब वह यहाँ से दी गई शिक्षा को व्यवहार में लाने के लिए घर से बाहर निकलता है तो उसकी भेंट उसके पिता से परिचित एक व्यापारी से हो जाती है। इस संयोग ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। अब वह कपड़े की दुकान पर व्यापार से संबंधित गुणों को सीखने लगा। इस कला में वह इस प्रकार दक्ष हुआ जिसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। आज वह इस छोटी सी उम्र में ही समझ गया है कि धन संचय से संबंध रखने वाली सभी विद्याएँ एक-सी हैं। कोई इसका संचय प्रतिष्ठापूर्वक कर रहा है तो कोई छिपकर।

इसी बीच चीनी फेरीवाला मालिक के काम से रंगून आ जाता है। दो वर्ष तक कलकत्ता में रहकर अन्य साथियों के संकेत पर उसे इस ओर आने का आदेश मिला। अब वह इसी क्षेत्र में कपड़े के व्यापार को बढ़ा रहा है। वह अपनी दो इच्छाओं को लेकर जीवन जी रहा है जिसमें ईमानदार बने रहना और बहन को ढूँढ निकालना शामिल है। इसमें एक की पूर्ति वह स्वयं करता है और दूसरी के लिए भगवान बुद्ध से प्रार्थना करता है।

एक दिन वह लेखिका से कहता है कि वह लड़ने के लिए चैना जाएगा। वहाँ से बुलावा आया है। जब लेखिका ने उससे पूछा कि तुमने कहा था वहाँ तो तुम्हारा कोई नहीं है फिर बुलावा किसने भेजा तब वह बड़ी सहजता से कहता है कि हम कब बोला हमारा चैना नहीं है? यह सुन लेखिका स्वयं के प्रश्न पर ही लज्जित हो जाती है और उसके जाने के लिए कुछ पैसों का प्रबंध कर उसे दे देती है। चीनी फेरीवाला खुशी के मारे अपने गज व कपड़ो के गट्ठे को वहीं छोड़कर चला जाता है।

इस प्रकार लेखिका ने उसके बहन को कभी नहीं देखा था किंतु चीनी फेरीवाले व उसकी बहन के चित्र लेखिका के स्मृत्ति पटल से विस्मृत होने का नाम ही नहीं लेते हैं। इसीलिए चीनी फेरीवाले के गज व कपड़ो के गट्ठे को लेखिका ने उसकी निशानी के रूप में अपने घर पर सहेजकर रखा हुआ है।

Critical Overview / अवलोकन

चीनी फेरीवाला अपनी आजीविका कमाने के लिए विपरीत परिस्थितियों से जूझता है और घर-घर जाकर अपने सामान को बेचता है। लेखिका ने चीनी फेरीवाला के रंग-रूप, नाक-नक्श, वेशभूषा आदि का वर्णन किया है। एक बार चीनी फेरीवाला लेखिका के घर के द्वार पर पहूँचता है और मइया, दीदी, जीजी, बिटिया आदि संबोधनों का प्रयोग करता है। लेखिका चीनी फेरीवाला से प्रभावित होता है। वह बहन की खोज में घर से निकल पडा था। लेखिका ने उसके बहन को कभी नहीं देखा था किंतु चीनी फेरीवाले व उसकी बहन के चित्र लेखिका के स्मृत्ति पटल से विस्मृत होने का नाम ही नहीं लेते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- चीनी भाई शीर्षक रेखाचित्र चीनी फेरीवाला नाम से भी जाना जाता है।
- चीनी भाई चीन में जन्मा एक बालक है।
- चीनी भाई के एक बहन है, लेखिका ने उनका कोई नाम नहीं दिया है।
- पिता की मृत्यु के बाद चीनी भाई और बहन पर विमाता की क्रूरता बढ़ती है।
- चीनी भाई की बहन पड़ोसियों के यहाँ से कुछ खाना लेकर आती थी और दोनों खाते थे।
- चीनी भाई की किशोर बहन का माँस बेचकर उनकी विमाता पैसा कमाती हैं।
- अबोध किशोर बालिका यौन-क्रिया तिरस्कृत करते तो भाई-बहन विमाता की मानसिक-शारीरिक पीड़ा की पात्र बन जाती है।
- अपने अनुज को विमाता के मार से बचाने के लिए किशोर बहन सबकुछ सहती है।
- एक रात में विमाता के साथ गयी चीनी भाई की बहन फिर कभी नहीं लौटती हैं।
- बहन की खोज पर चीनी भाई घर छोड़ता है।
- चीनी भाई जेबकतरों के वश पर पड़ जाता है।

- चीनी भाई अपने पिता के मित्र के कपड़े के व्यापार में सहायक बन जाता है।
- चीनी भाई कपड़े के व्यापार के लिए रंगून से कलकत्ता, वहाँ से इलाहाबाद आता हैं।
- चीनी भाई इलाहाबाद से महादेवी के फरूखाबाद के घर आकर परिचय पाता है।
- चीनी भाई और महादेवी वर्मा में भाई-बहन संबंध पैदा होता है।
- चीनी भाई महादेवी वर्मा के लिए एक विशेष प्रकार का रूमाल लाता है।
- भारत और चीन में संघर्ष शुरु होते समय चीनी भाई चैना लौटता है।
- वह अपनी कपड़ा और गज स्मृति चित्र के समान महादेवी को सौंपकर लौटते हैं।
- चीनी भाई हिन्दी के मर्मस्पर्शी रेखाचित्रों में से एक है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'आधुनिक युग की मीरा' किसे कहते हैं?
2. महादेवी वर्मा का जन्म कहाँ हुआ?
3. चीनी भाई किस विधा की रचना है?
4. चीनी भाई रेखाचित्र किसने लिखा है?
5. महादेवी वर्मा ने भाई शब्द का प्रयोग किनको लक्ष्य कर किया है?
6. चीनी भाई की माँ मरते समय उनका संरक्षण भार किसे सौंपा दिया?
7. चीनी भाई की माँ की मृत्यु कब हुई?
8. 'चाँद' मासिक पत्रिका की संपादिका कौन थी?
9. 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध' किसकी रचना है?
10. महादेवी वर्मा को किस रचना केलिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

Answers / उत्तर

1. महादेवी वर्मा को
2. उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में
3. रेखाचित्र
4. महादेवी वर्मा
5. चीनी फेरीवाला
6. सात साल की बहन पर
7. चीनी भाई का जन्म लेते ही
8. महादेवी वर्मा
9. महादेवी वर्मा की
10. 'यामा'

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. चीनी भाई की किशोर बहन पर विमाता के व्यवहार आपको कैसे लगता है? अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कीजिए।
2. प्रस्तुत रेखाचित्र अपने हृदय को छूता है या नहीं, स्पष्ट कीजिए।
3. चीनी भाई शीर्षक रेखाचित्र की भाषा-शैली पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. चीनी भाई - महादेवी वर्मा।
2. महादेवी का गद्य - सूर्य प्रकाश दीक्षित।
3. महादेवी वर्मा - डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
4. महादेवी वर्मा कवि और गद्यकार - लक्ष्मण दत्त गौतम।

SGOU

इकाई 3

'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' - विष्णु प्रभाकर (यात्रा वृत्त)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- विष्णु प्रभाकर का व्यक्तित्व समझता है
- साहित्यकार के रूप में विष्णु प्रभाकर का परिचय पाता है
- जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता यात्रा वृत्त समझता है
- यात्रा वृत्त 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' का सारांश जानता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, सन् 1912 को मीरापुर, ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इन्हें इनके एक अन्य नाम 'विष्णु दयाल' से भी जाना जाता है। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई थी। नौकरी करते हुए पंजाब विश्वविद्यालय से 'भूषण', 'प्राज्ञ', 'विशारद' और 'प्रभाकर' आदि की हिन्दी-संस्कृत परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। प्रभाकर जी के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। यही कारण था कि उन्हें काफ़ी कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ा था। वे अपनी शिक्षा भली प्रकार से प्राप्त नहीं कर पाये थे। विष्णु प्रभाकर जी ने जो डिग्रियाँ और उच्च शिक्षा प्राप्त की, तथा अपने घर-परिवार की ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह निभाया, वह उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम था।

विष्णु प्रभाकर आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपनी कालजयी रचनाओं के लिए जाने जाते हैं। विष्णु प्रभाकर ने हिन्दी की प्रायः सभी विधाओं जिनमें कहानी, नाटक, उपन्यास, यात्रा वृतांत, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, अनुवाद और बाल साहित्य आदि में प्रचुर लेखन किया। साहित्य जगत में अपना विशेष योगदान देने के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' व कई गैर सरकारी पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका हैं।

विष्णु प्रभाकर की कई रचनाएँ जिनमें 'आवारा मसीहा' (जीवनी), फ़र्क (लघु कथा), 'अर्द्धनारीश्वर', 'स्वप्नमयी', 'तट के बंधन' (उपन्यास), 'हत्या के बाद', 'डॉक्टर', 'सीमा रेखा' (नाटक), 'प्रकाश और परछाइयाँ', 'संघर्ष के बाद', 'सांप और सीढ़ी' (एकांकी) आदि प्रमुख हैं।

यह यात्रा वृत्तांत विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखा गया है, जिसमें उन्होंने अपनी यात्रा के अनुभवों और जीवन की गहरी भावनाओं को प्रस्तुत किया है। यात्रा का उद्देश्य न केवल नए स्थानों का भ्रमण करना था, बल्कि यह आत्मविश्लेषण और समाज के प्रति अपने दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करना था। विष्णु प्रभाकर ने यात्रा के दौरान अपनी आत्मचिंतन प्रक्रिया को भी साझा किया। उन्होंने अपनी यात्राओं में अनुभव किए गए संघर्षों, कठिनाइयों और जीवन की विकट परिस्थितियों के बारे में लिखा। इस यात्रा में उन्होंने यह महसूस किया कि मानव जीवन में बहुत से अनदेखे पहलू होते हैं, जो केवल गहरे अनुभवों और आत्म-मूल्यांकन से ही समझे जा सकते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आन्दोलन, आत्म-मूल्यांकन, संध्याओं का चित्रण, साहित्य अकादमी पुरस्कार

Discussion / चर्चा

'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' यात्रावृत्त में विष्णु प्रभाकर ने कलकत्ता में बिताई गई, संध्याओं का चित्रण किया है। लेखक कहते हैं मैं आकाश की ओर देखता हूँ लेकिन आश्चर्य, आज तक मैं नहीं देख सका। कलकत्ते के आकाश पर ऐसा कुछ छाया रहता है कि उसे कोहरा कहें, धुआँ या शोर। असल में वह तो सबकुछ का मिश्रण है। जब विष्णु प्रभाकर शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी आवारा मसीहा किताब लिख रहे थे, शरत चन्द्र के जीवन को निकट से जानने केलिए अनेक दिन उन्हें कलकत्ता में बिताने पडे। कलकत्ता में बिताये गये समय का कलकत्ता के इस परिवेश को बहुत करीब से देखने का अवसर मिला और उसे ठीक उसी प्रकार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

लेखक कहते हैं कि सहसा एक धक्का लगा एक रेला मेरे अकेलेपन को कुचलता हुआ चारों ओर फैल गया। सचमुच यह कलकत्ता है जहाँ न आकाश दिखाई पडती है ना धरती पर पैर पडती है। यहाँ एक सुप्रसिद्ध पुल है जहाँ नीचे गंगा है। वहाँ सब कहीं आदमी ही आदमी दीख पडते हैं। सब अकेले अकेले अपनी आजीविका की मृगतृष्णा के पीछे भागे जा रहे हैं विभिन्न काम पे।

कलकत्ता के विषय में चर्चा करते हुए लेखक लिखते हैं यह कलकत्ता है जहाँ सड़कों पर भूख से तडप कर लाखों लोगों ने जीवन को त्यागा है। कला और साहित्य के मानदण्ड स्थापित किये हैं जिसने प्रत्येक नवीन आन्दोलनों को जन्म दिया है- यह आन्दोलनों का नगर है प्रतिदिन नया आन्दोलन उमड़ता आया है, समाज सुधार का आन्दोलन हो या कला और संगीत, भूख और भाषा केलिए, साहित्य और स्वतंत्रता का आन्दोलन सदैव ही आगे जा रहा है।

यहाँ के लोग सहजता से सितार के संगीत बजाते हैं उतना ही कुशलता से अपने शत्रु को मारना भी जानता है। लेखक कहते हैं एक बार यात्रा के बीच में देखा कि सडकों पर शाश्वत भीड उमडती है। सहसा में अनुभव करता हूँ कि कहीं कुछ हलचल है, कहीं कुछ उत्तेजक शब्द गूंज रही हैं। कहीं लाठियाँ चल रही हैं। कहीं कुछ लोग चीख चीखकर एक दूसरे को कोस रही है। व्यक्ति तेज़ी से भागता हुआ आता है और दूसरे के पैर को किसी धारधार वस्तु से चीर देता है। इतने में शून्य से पुलीसवाले आकर दोनों को अपने साथ ले जाते हैं। पुनः ड्रोम शोर मचाते हुए आगे की ओर बढ़ जाती है। फिर शोर बढ़ती है। लोग एक दूसरे पर आक्रमण करते हैं, नारा लगाते हैं, हँसते हैं। सहसा उनमें से एक व्यक्ति मेरी ओर देखता है। मेरे सिर पर गाँधी टोपी है और मैंने खदर पहनी है। मुझसे पूछता है क्या तुम कांग्रेजी हो, प्रचार समाजवादी हो या कम्युनिस्ट। मैने उत्तर दिया - जी नहीं। फिर वह चीखता है कि क्या तुम क्रांग्रेस नहीं, प्रजा समाजवादी या कम्यूनिस्ट कुछ न कुछ हुए बिना कैसे रह सकता है? मैं बडी नम्रता से उत्तर दिया मैं एक साधारण इनसान, एक लेखक हूँ।

यहाँ लेखक महानगरीय जीवन की अपाधापी का चित्रण करते हुए लोकतंत्र की दुहाई देनेवाले कार्यकर्ताओं की मानसिकता का चित्रण किया है। लेखक पूछते हैं क्या केवल 'खदर का वस्त्र पहनकर गाँधी टोपी पहनने से कोई व्यक्ति काँग्रेजी बन जाता है? यदि वह काँग्रेसी नहीं तो क्या वह समाजवादी या कम्यूनिस्ट होना चाहिए? एक व्यक्ति केवल इंसान नहीं हो सकता? तो वह व्यक्ति उत्तर देता है कि तुम लेखक हो लेकिन बावजूद कुछ ना कुछ होना ही होगा। तुम झूठ बोलता है। लेखक लिखते हैं कि मैं घबराता हूँ किन्तु लोग चीखते चिल्लाते फिर आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार कलकत्ता की विभिन्न घटनाओं का चित्रण लेखक करते हैं। कलकत्ता से बिदाई ली गयी संध्या का वर्णन भी जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता में हुआ है।

कुल मिलाकर, 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' एक गहरी और चिंतनशील यात्रा है, जिसमें विष्णु प्रभाकर ने अपने अनुभवों के माध्यम से मानवीय जीवन के जटिल पहलुओं को उजागर किया है। यह यात्रा केवल भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक भी है।'

Critical Overview / अवलोकन

'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' यात्रा वृत्त में विष्णु प्रभाकर ने कलकत्ता में बिताई गई, संध्याओं का चित्रण किया है। इस में कलकत्ता में बिताये गये समय को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। यहाँ लेखक महानगरीय जीवन की अपाधापी का चित्रण करते हुए लोकतंत्र की दुहाई देनेवाले कार्यकर्ताओं की मानसिकता का चित्रण किया है। आन्दोलनों को जन्म देने वाले जन्मभूमि के रूप में कलकत्ता का वर्णन किया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- विष्णु प्रभाकर का यात्रावृत्त है 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता'।
- यह यात्रावृत्त लेखक की एक कलकत्ता यात्रा का वर्णन करता है।
- कलकत्ता में बिताई हुई संध्या का वर्णन भी जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता में हुआ है।
- यात्रावृत्त में महानगरीय जिंदगी और उसकी समस्याओं का वर्णन करना है।
- लोग एक दूसरे पर आक्रमण करते है, नारा लगाते हैं।
- आन्दोलनों को जन्म देने वाले जन्मभूमि के रूप में कलकत्ता का वर्णन किया है।
- लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान लोगों के जीवन को बहुत ही विस्तार से देखा है और यहाँ दिखाया है कि कैसे वे अपनी जिंदगी को संघर्षपूर्ण तरीके से जीते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'आवारा मसीहा' किस प्रकार की रचना है?
2. जहां आकाश दिखाई नहीं देता किसकी रचना है?
3. विष्णु प्रभाकर का जन्म कहाँ हुआ?
4. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' में किस नगर का चित्रण हुआ है?
5. शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के जीवनी 'आवारा मसीहा' किसकी रचना है?
6. विष्णु प्रभाकर का दूसरा नाम क्या है?
7. कलकत्ता के बारे में चर्चा करनेवाला विष्णु प्रभाकर की रचना कौन सा है?
8. 'सीमा रेखा' किसकी रचना है?
9. 'सांप और सीढ़ी' किस विधा की रचना है?
10. 'अर्द्धनारीश्वर', 'स्वप्नमयी' किसकी रचना है?

Answers / उत्तर

1. जीवनी
2. विष्णु प्रभाकर की
3. उत्तर प्रदेश
4. कलकत्ता
5. विष्णु प्रभाकर
6. 'विष्णु दयाल'

7. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता'
8. विष्णु प्रभाकर की
9. एकांकी
10. विष्णु प्रभाकर की

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' महानगरीय जीवन की अपाधापी का चित्रण है। सिद्ध कीजिये।
2. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' का सारांश लिखिए?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. निबंध तथा अन्य गद्य विधाओं का सकंलन
2. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' -विष्णु प्रभाकर

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ....   Reg. No : ....
Name : ....

FIFTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION
DISCIPLINE CORE

B21HD05DC - हिन्दी गद्य साहित्य
(CBCS - UG) - Set A
2022-23 - Admission Onwards

Time: 3 Hours   Max Marks: 70

SECTION A

किन्हीं दस (10) प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या शब्द में दें। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का होता है। (1×10=10)

1. 'भाषा योगवशिष्ठ' किसकी रचना है?
2. 'रिपोर्ताज' किस भाषा का शब्द है?
3. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन सा है?
4. प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास कौन सा है?
5. ए बी सी डी उपन्यास किस पृष्ठभूमि पर लिखा गया है?
6. सदियों का संताप किसकी रचना है?
7. आकाशदीप कहानी के प्रमुख पात्र?
8. नाटक किस शब्द से बना है?
9. सत्यवान की पहली पत्नी का नाम क्या है?
10. प्रसाद के किन्हीं तीन नाटकों का नाम लिखिए।
11. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' किसकी रचना है?
12. उत्तर शती के व्यंग्य निबंधकार कौन है?
13. ललित निबंधों का सर्वोत्कृष्ट रूप किसके निबंधों में पाया जाता है?
14. 'भोलाराम का जीव' किस विधा की रचना है?
15. चीनी भाई की माँ का मृत्यु कब हुआ था?

SECTION B

किन्हीं पाँच (5) प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होता है। (2×5=10)

16. आरंभकालीन गद्य रचनाओं का परिचय दीजिए।
17. 'अभिनंदन ग्रंथ' माने क्या है?
18. प्रेमचंद की उपन्यासों का नाम लिखिए।

19. ए बी सी डी उपन्यास में अभिव्यक्त समस्या कौन सी है?
20. कहानीकार मन्नू भंडारी का परिचय दीजिए।
21. गैंग्रीन कहानी का उद्देश्य क्या है?
22. नाटककार कैलाश चंद्र का परिचय दीजिए।
23. रामचन्द्र शुक्ल की प्रमुख निबंधों का नाम लिखिए।
24. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में लेखक क्या कहना चाहता है?
25. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' में कलकत्ता का किस प्रकार का चित्रण हुआ है?

SECTION C

किन्हीं छह (6) प्रश्नों के उत्तर एक पृष्ठ के अंदर दें। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होता है। (5×6=30)

26. हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु जी का योगदान व्यक्त कीजिए।
27. जीवनी एवं आत्मकथा का परिचय देकर अंतर समझाईए।
28. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिए।
29. उपन्यासकार रवींद्र कालिया का परिचय दीजिए।
30. प्रेमचंद युगीन कहानीकारों का परिचय दीजिए।
31. 'चीफ की दावत' पर अभिव्यक्त समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
32. स्वातंर्त्योत्तर काल के प्रमुख नाटककार कौन कौन है?
33. हिन्दी नाटक के विकासक्रम पर प्रकाश डालिए।
34. हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों पर प्रकाश डालिए।
35. महावीरप्रसाद द्विवेदी के निबंध साहित्य पर आलेख तैयार कीजिए।
36. 'भोलाराम की जीव' का सारांश लिखिए।
37. 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' में महानगरीय जीवन की आपाधापी की चित्रण है - सिद्ध कीजिए।

SECTION D

किन्हीं दो (2) प्रश्नों के उत्तर दो पृष्ठों के अंदर दें। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होता है। (2×10=20)

38. हिन्दी की गद्य विधाओं का सामान्य परिचय दीजिए।
39. 'अपरिचित' कहानी का आलोचनात्मक अवलोकन प्रस्तुत कीजिए।
40. हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर टिप्पणी लिखिए।
41. लेखिका का परिचय देते हुए 'चीनी भाई' रेखाचित्र पर टिप्पणी लिखिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIFTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION
DISCIPLINE CORE

B21HD05DC - हिन्दी गद्य साहित्य
(CBCS - UG)
2022-23 - Admission Onwards

Time: 3 Hours Max Marks: 70

SECTION A

किन्हीं दस (10) प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या शब्द में दें। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का होता है। (1×10=10)

1. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब हुई?
2. हिन्दी का प्रथम एकांकी की रचना कब हुई?
3. संस्मरण का अंग्रेजी शब्द क्या है?
4. अधखिला फूल किसकी उपन्यास है?
5. ए बी सी डी किसकी रचना है?
6. प्रेमचंद की पहली हिन्दी कहानी?
7. नई कहानी का सूत्रपात कब हुआ?
8. हरीश किस कहानी का पात्र है?
9. 'सावित्री 2007' नाटक में कितने अंक हैं?
10. 'नीलदेवी' का रचनाकार कौन है?
11. निबंध विधा का आरंभ किस युग में हुआ?
12. 'चिंतामणि' किसकी रचना है?
13. 'चाँद' पत्रिका की संपादिका कौन थी?
14. विष्णु प्रभाकर का दूसरा नाम क्या है?
15. भोलाराम कौन था?

SECTION B

किन्हीं पाँच (5) प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होता है। (2×5=10)

16. नाटक एवं एकांकी में क्या अंतर है?

17. हिन्दी आलोचना का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
18. रवींद्र कालिया का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
19. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानिकारों का परिचय दीजिए।
20. 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त समस्या क्या है?
21. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का नाम लिखिए।
22. भारतेन्दु युगीन नाटकों की विशेषताएँ क्या क्या है?
23. हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंधों का नाम लिखिए।
24. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का परिचय लिखिए।
25. चीनी भाई की किशोर बहन के प्रति विमाता का व्यवहार कैसा है?

SECTION C

किन्हीं छह (6) **प्रश्नों के उत्तर एक पृष्ठ के अंदर दें। प्रत्येक प्रश्न** 5 **अंक का होता है।** (5×6=30)

26. हिन्दी गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।
27. संस्मरण और रेखाचित्र का परिचय देकर उसकी समानताओं पर चर्चा कीजिए।
28. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिए।
29. ए बी सी डी उपन्यास का सारांश लिखिए।
30. हिन्दी कहानी आंदोलनों पर टिप्पणी लिखिए।
31. आकाशदीप कहानी की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालिए।
32. 'सावित्री 2007' की सारांश लिखिए।
33. प्रसाद युगीन नाटकों की विशेषताएँ क्या क्या है?
34. हिन्दी निबंध के आरंभ और विकास पर आलेख तैयार कीजिए।
35. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की प्रमुख विषय क्या है?
36. 'भोलाराम की जीव' में चित्रित समस्या क्या है?
37. 'चीनी भाई' शीर्षक रेखाचित्र की भाषा शैली पर टिप्पणी लिखिए।

SECTION D

किन्हीं दो (2) **प्रश्नों के उत्तर दो पृष्ठों के अंदर दें। प्रत्येक प्रश्न** 10 **अंक का होता है।** (2×10=20)

38. हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास पर टिप्पणी लिखिए।
39. 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
40. 'सावित्री 2007' नाटक का आलोचनात्मक अवलोकन प्रस्तुत कीजिए।
41. लेखक का परिचय देते हुए 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध पर टिप्पणी लिखिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी गद्य साहित्य

COURSE CODE: B21HD05DC

SGOU

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-982096-9-6
9 788198 209696